

The Shadow of Heavenly Things

Introduction

'Aadaam (Hebrew word for man) was created in the image or nature of God and lived righteously for an unspecified period of time. During that time physical and spiritual death of man did not exist. After Adam's creation God placed him in Eden giving him at least 3 instructions.

1. Be fruitful and multiply [reproduce].
2. Tend and keep the garden [work].
3. Do not eat of the fruit of the tree of knowledge of good and evil [obey].

There is no indication that Adam and Eve refused to reproduce or take care of the garden. However, when tempted by Satan they chose to yield to their desire to be as wise as God and disobeyed by eating of the restricted tree. They were no longer in a righteous relationship with God. Consequently, physical and spiritual death entered into their life and the created world. God did not abandon them but initiated His plan to redeem and reconcile mankind. Their earthly sacrifices, ceremonies and rituals were types and shadows foreshadowing the perfect and lasting sacrifice or sin-offering to be revealed in Jesus of Nazareth, God in Human form.

"Therefore, let no one judge you in matters of food and drink or with respect to a festival, a New Moon, or Sabbath days. These are a shadow of the things to come, but the reality belongs to the Messiah" (Colossians 2:16).

Prophecy

Prophecy is a process in which one or more messages communicated to a prophet are then communicated to others. Such messages typically involve divine inspiration, interpretation, or revelation of conditioned events to come (cf. divine knowledge). The process of prophecy especially involves reciprocal communication of the prophet with the (divine) source of the messages. A listing of prophecies during the Patriarchal and Mosaic ages relating to Christ and their fulfillment is provided at the end of the lesson.

Types

a. A type is a divinely purposed illustration of some truth. It may be: (1) a person; (2) an event; (3) a thing; (4) an institution; or (5) a ceremony. Types occur most frequently in the Pentateuch [Genesis, Exodus, Leviticus, Numbers and Deuteronomy] but are found, more sparingly, elsewhere. The antitype, or fulfillment of the type, is found generally in the New Testament"

b. "A 'Type' is a prefigurative action or occurrence in which one event, person or circumstance is intended to represent

स्वर्गीय वस्तुओं की छाया

परिचय

'आदम (मनुष्य के लिए हिब्रू शब्द) भगवान की छवि या प्रकृति में बनाया गया था और समय की अनिर्दिष्ट अवधि के लिए सही ढंग से रहता था। उस समय मनुष्य की शारीरिक और आध्यात्मिक मृत्यु अस्तित्व में नहीं थी। आदम की रचना के बाद परमेश्वर ने उसे कम से कम 3 निर्देश देकर अदन में रखा।

1. फलदायी बनो और गुणा करो [पुनरुत्पादन]।
2. बगीचे [काम] की देखभाल करना और उसकी देखभाल करना।
3. भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल मत खा [आज्ञापालन]।

ऐसा कोई संकेत नहीं है कि आदम और हव्वा ने प्रजनन करने या बगीचे की देखभाल करने से इनकार कर दिया हो। हालाँकि, जब शैतान द्वारा प्रलोभित किया गया तो उन्होंने परमेश्वर के समान बुद्धिमान होने की अपनी इच्छा के आगे झुकना चुना और प्रतिबंधित पेड़ को खाकर अवज्ञा की। वे अब परमेश्वर के साथ एक धर्म संबंध में नहीं थे। नतीजतन, शारीरिक और आध्यात्मिक मृत्यु ने उनके जीवन और निर्मित दुनिया में प्रवेश किया। परमेश्वर ने उनका परित्याग नहीं किया बल्कि मानवजाति को छुड़ाने और मेल-मिलाप करने की अपनी योजना की शुरुआत की। उनके सांसारिक बलिदान, रीति-रिवाज और रीति-रिवाज आदर्श और स्थायी बलिदान या पाप-बलि के प्रतीक और छाया थे, जो नासरत के यीशु, मानव रूप में भगवान में प्रकट होने के लिए थे।

"इसलिये खाने-पीने या पर्व, नए चान्द्र, या सब्त के विषय में कोई तुम्हारा न्याय न करे। ये तो आनेवाली बातों की छाया हैं, परन्तु सच्चाई तो मसीह की है" (कुलुस्सियों 2) : 16)।

भविष्यवाणी

भविष्यवाणी एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक या एक से अधिक संदेशों को एक पैगंबर को संप्रेषित किया जाता है और फिर दूसरों को संप्रेषित किया जाता है। इस तरह के संदेशों में आम तौर पर दिव्य प्रेरणा, व्याख्या, या आने वाली सशर्त घटनाओं का रहस्योद्घाटन (cf. दिव्य ज्ञान) शामिल होता है। भविष्यवाणी की प्रक्रिया में विशेष रूप से संदेशों के (दिव्य) स्रोत के साथ पैगंबर का पारस्परिक संचार शामिल है। मसीह से संबंधित पितृसत्तात्मक और मोज़ेक युगों के दौरान भविष्यवाणियों की एक सूची और उनकी पूर्ति पाठ के अंत में प्रदान की जाती है।

प्रकार

एक। एक प्रकार कुछ सच्चाई का एक दैवीय उद्देश्यपूर्ण चित्रण है। यह हो सकता है: (1) एक व्यक्ति; (2) एक घटना; (3) एक वस्तु;

another, similar to it in certain respects, but future and distant. The 'Antitype' is the thing prefigured. The Old Testament type is also called the shadow and the New Testament reality which it typified is called the body, the express image, the substance or the reality.

"To correctly interpret type-language prophecy, it must be spiritualized. A type was a prophecy of the antitype.

"Because of the resemblance of two things in certain features, one may be designated by the name of the other. In some cases, the language which described the shadow is used when the substance is meant." ... "We must recognize that the type and antitype are not identical. There are only some points of resemblance. Also, the shadow is inferior to the substance. The type was temporary. There can be no possibility of a return to the shadow after the coming of the substance."

"Typology [the study and interpretation of types and symbols]

1. Type - (Gr. tupos). Romans 5:14 where Paul declares that Adam "is a figure, type, symbol, representation, pattern (tupos) of him that was to come"; i.e., Christ.

2. Shadow (Gr. Skia). Colossians 2:17, certain elements of the Mosaic system are said to be "a shadow of the things to come;" "who, Levitical priest, unto an example and shadow do serve of the heavenly things (Hebrews 8:5); the law having a shadow of the coming good things--not the very image of the matters (Hebrews 10:1).

3. Copy, example, pattern (Gr. Hupodeigma) and used in conjunction with "shadow" in Hebrews 8:5 (cf. Hebrews 9:23).

4. Parable, symbol, illustration, figure, type (Gr. parabole). Hebrews 9:9, where certain elements of the tabernacle are "a figure for the present time." "He considered that God was able even to raise him from the dead, from which, figuratively speaking, he did receive him back (Hebrews 11:19).

5. Antitype, true likeness, symbolizes, corresponds, pattern, copy, figure (Gr. antitupon, rendered "figures" or "pattern" in Hebrews 9:24, and "like figure" or "true likeness" in 1 Peter 3:21.

"Types are grounded in real history; the people, places, events, offices, actions, institutions, etc. were deliberately chosen by God to prepare for the coming of the Christian system. The type was designed by God to preview its fulfillment in the New Testament."

(4) एक संस्था; या (5) एक समारोह। पेन्टाट्यूक [उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, संख्या और व्यवस्थाविवरण] में प्रकार सबसे अधिक पाए जाते हैं, लेकिन कहीं और पाए जाते हैं। प्रतिरूप, या प्रकार की पूर्ति, आम तौर पर नए नियम में पाई जाती है।

बी। "ए 'टाइप' एक प्रीफिगरेटिव एक्शन या घटना है जिसमें एक घटना, व्यक्ति या परिस्थिति का उद्देश्य दूसरे का प्रतिनिधित्व करना है, कुछ मामलों में इसके समान, लेकिन भविष्य और दूर। 'एंटीटाइप' चीज पूर्वनिर्धारित है। पुराना नियम प्रकार को छाया भी कहा जाता है और न्यू टेस्टामेंट की वास्तविकता जिसे यह प्रतिरूपित करता है उसे शरीर, व्यक्त छवि, पदार्थ या वास्तविकता कहा जाता है।

"प्रकार-भाषा भविष्यवाणी की सही व्याख्या करने के लिए, इसे आध्यात्मिक होना चाहिए। एक प्रकार प्रतिरूप की भविष्यवाणी थी।

"कुछ विशेषताओं में दो चीजों की समानता के कारण, एक को दूसरे के नाम से नामित किया जा सकता है। कुछ मामलों में, छाया का वर्णन करने वाली भाषा का उपयोग तब किया जाता है जब पदार्थ का मतलब होता है।" ... "हमें यह पहचानना चाहिए कि प्रकार और प्रतिरूप समान नहीं हैं। समानता के केवल कुछ बिंदु हैं। साथ ही, छाया पदार्थ से हीन है। प्रकार अस्थायी था। छाया के बाद वापसी की कोई संभावना नहीं हो सकती है। पदार्थ का आना।"

"टाइपोलॉजी [प्रकार और प्रतीकों का अध्ययन और व्याख्या]

1. टाइप - (जीआर। ट्यूपोस)। रोमियों 5:14 जहां पॉल ने घोषणा की कि आदम "आने वाले का एक रूप, प्रतीक, प्रतीक, प्रतिनिधित्व, पैटर्न (ट्यूपोस) है"; यानी, मसीह।

2. छाया (जीआर स्कीया)। कुलुस्सियों 2:17, मोज़ेक प्रणाली के कुछ तत्वों को "आने वाली चीजों की छाया" कहा जाता है; "जो, लेवीय याजक, एक उदाहरण और छाया के रूप में स्वर्गीय वस्तुओं की सेवा करते हैं (इब्रानियों 8:5); व्यवस्था में आने वाली अच्छी वस्तुओं की छाया है - बातों की छवि नहीं (इब्रानियों 10:1)।

3. इब्रानियों 8:5 (cf. इब्रानियों 9:23) में प्रतिलिपि, उदाहरण, प्रतिरूप (जीआर हूपोडिग्मा) और "छाया" के संयोजन के साथ प्रयोग किया जाता है।

4. दृष्टान्त, प्रतीक, चित्रण, आकृति, प्रकार (जीआर। परबोल)। इब्रानियों 9:9, जहां तम्बू के कुछ तत्व "वर्तमान समय के लिए एक प्रतीक" हैं। "उस ने यह समझा, कि परमेश्वर उसे मरे हुए में से जिलाने की सामर्थ भी रखता है, और लाक्षणिक अर्थ में उस ने उसे फिर से प्राप्त किया" (इब्रानियों 11:19)।

Patriarchal Age

The following article on Types and Shadows in the Patriarchal age is quoted from the Internet web site feedingonchrist.com/old-testament-personal-types-and-shadows-of-christ. They are the personal opinions and interpretations of Nicholas T. Batzig of New Covenant Presbyterian Church in Richmond Hill, Ga. Like all opinions and interpretations, they are not inspired and may or may not be valid. It is up to the readers to form their own opinion and either to reject or accept them. Thebiblewayonline.com does not express an opinion regarding his interpretations and opinions.

Adam is explicitly said to have been a type of Christ in that he was the representative of humanity (Rom. 5:12). Paul unfolds one of the foremost ways in which he was a type of Christ in Romans 5:12-21. Adam's federal headship-together with the guilt, corruption and death that his disobedience brought on all humanity-is contrasted with the federal headship of Christ, and the subsequent justification of believers through His obedience and substitutionary death. Adam is also seen as a type of Christ in 1 Corinthians 15 where his earthly body is contrasted with the resurrected body of the glorified Christ and His people. In both of these places there is similarity and contrast in the type.

Abel is shown to be a type of Christ in that he was the first one to suffer for righteousness sake (Matt. 23:34-35). The hostility that Cain directed toward his brother was ultimately meant for God. Charles Spurgeon said, If Cain could have gotten at the throat of God he would have done so. This is precisely what men did in the crucifixion of Christ. Abel died because he worshiped God rightly. Jesus died because He always did the will of His Father in Heaven. Abel was the first martyr. Jesus is the anti-typical martyr. The writer of Hebrews tells us that "the blood of Jesus speaks better things than that of Abel" (Heb. 11:4; 12:24). As was true of Adam, so Abel was a type of Christ by way of comparison and contrast. He is compared with Christ in that he was martyred for righteousness; he is contrasted with Christ in that his blood cried out for vengeance while Christ's blood cries out for mercy.

Seth was a type of Christ in that he was the "seed" of the woman who-as his name intimates-was "appointed/placed/set" in the place of Abel. Our Lord Jesus Christ is the "Seed of the woman" in the sense of ultimate fulfillment of the promise of Genesis 3:15. Seth was merely a typical step in the fulfillment of the Covenant promise to send a "Seed-Redeemer." Here it is imperative for us to note a guiding interpretive principle when studying the Old Testament. Because the revelation of God is organically related to the first promise of a redeemer (Gen. 3:15), and since that first promise was to be fulfillment by "the woman" bearing a male child, every subsequent generation from Adam and Eve forward were to look expectantly to

5. इब्रानियों 9:24 में एंटीटाइप, सच्ची समानता, प्रतीक, मेल खाती है, पैटर्न, प्रतिलिपि, आकृति (ग्र। एंटीटाइप, अनुवादित "आंकड़े" या "पैटर्न", और 1 पीटर 3 में "समान आकृति" या "सच्ची समानता": 21.

"प्रकार वास्तविक इतिहास में आधारित हैं; लोगों, स्थानों, घटनाओं, कार्यालयों, कार्यों, संस्थानों आदि को जानबूझकर ईश्वर द्वारा ईसाई प्रणाली के आने की तैयारी के लिए चुना गया था। इस प्रकार को ईश्वर द्वारा इसकी पूर्ति का पूर्वविलोकन करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। नया करार।"

पितृसत्तात्मक युग

पितृसत्तात्मक युग में प्रकार और छाया पर निम्नलिखित लेख इंटरनेट वेब साइट Feedingonchrist.com/old-testament-personal-types-and-shadows-of-christ से उद्धृत किया गया है। वे रिचमंड हिल, गा में न्यू कॉन्वेंट प्रेस्बिटेरियन चर्च के निकोलस टी. बल्लिग के व्यक्तिगत विचार और व्याख्याएं हैं। सभी विचारों और व्याख्याओं की तरह, वे प्रेरित नहीं हैं और मान्य हो भी सकते हैं और नहीं भी। यह पाठकों पर निर्भर है कि वे अपनी राय बनाएं और या तो उन्हें अस्वीकार करें या स्वीकार करें। Thebiblewayonline.com उनकी व्याख्याओं और विचारों के बारे में कोई राय व्यक्त नहीं करता है।

आदम को स्पष्ट रूप से मसीह का एक प्रतीक कहा गया है क्योंकि वह मानवता का प्रतिनिधि था (रोमियों 5:12)। रोमियों 5:12-21 में पौलुस उन प्रमुख तरीकों में से एक को प्रकट करता है जिसमें वह मसीह का प्रतीक था। आदम का संघीय मुखियापन-अपराधबोध, भ्रष्टाचार और मृत्यु के साथ जो उसकी अवज्ञा के कारण सारी मानवता पर आ गया-मसीह के संघीय मुखियापन और उसकी आज्ञाकारिता और वैकल्पिक मृत्यु के माध्यम से विश्वासियों के बाद के औचित्य के विपरीत है। आदम को 1 कुरिन्थियों 15 में मसीह के एक प्रकार के रूप में भी देखा गया है जहाँ उसके पार्थिव शरीर की तुलना महिमामय मसीह और उसके लोगों के पुनरुत्थित शरीर से की जाती है। इन दोनों ही स्थानों में प्रकार में समानता और विषमता है।

हाबिल मसीह के एक प्रकार के रूप में दिखाया गया है कि वह धार्मिकता के लिए कष्ट उठाने वाला पहला व्यक्ति था (मत्ती 23:34-35)। कैन ने अपने भाई के प्रति जो शत्रुता दिखाई वह अंततः परमेश्वर के लिए थी। चार्ल्स स्पर्जन ने कहा, अगर कैन भगवान के गले लग सकता था तो उसने ऐसा किया होता। ठीक यही मनुष्य ने मसीह के क्रूसीकरण में किया था। हाबिल मरा क्योंकि उसने परमेश्वर की सही आराधना की थी। यीशु मरा क्योंकि उसने हमेशा स्वर्ग में अपने पिता की इच्छा पूरी की। हाबिल पहला शहीद था। जीसस एंटी-टिपिकल शहीद हैं। इब्रानियों का लेखक हमें बताता है कि "यीशु का लोहू हाबिल के लोहू से उत्तम बातें बोलता है" (इब्र। 11:4; 12:24)। जैसा कि आदम के बारे में सच था, इसलिए तुलना और विषमता के आधार पर हाबिल मसीह का एक प्रकार

the fulfillment of the promise of redemption. We see that in Eve naming Cain. We are told in Genesis 4:1, "Now Adam knew Eve his wife, and she conceived and bore Cain, and said, 'I have acquired a man from the Lord.'" In faith, Eve was hoping that God had fulfilled His promise to give her a Redeemer, though nothing could have been further from the truth. The expectation of the Redeemer is bound also to the establishment of the covenantal line from which Christ would come. Seth stands at the head of that covenantal line.

Enoch was a type of Christ in that "he walked with God and was not." Enoch was an example of exceptional uprightness. In his being taken away to heaven bodily he prefigured the bodily ascension of Christ who "walked with God and was not." The bodily ascension of Enoch prefigures the resurrection and ascension of Jesus-as well as the bodily resurrection of all those united to Christ by faith.

Noah was a type of Christ in that he served as a sort of "second Adam;" he was not "The second Man," or "the Last Adam," but was a type of the One to come. Just as God had given Adam creation mandates to be fruitful and multiply so He gave Noah re-creation mandates. The Lord had given Adam instruction concerning what he could eat. So too Noah received instruction concerning food. Noah would typically be the federal representative of a new humanity. Jesus is THE federal head of the new humanity. Noah's name meant "rest." His father named him "Rest," saying, "This one will give us rest from the ground that the Lord God has cursed." Noah only brought rest in a typical sense when he walked off of the Ark with his family to inhabit a typical new creation. But Christ, the greater Noah, actually gives rest to the souls of men and women (Matt. 11:25-30). Christ alone has secured the new creation through His death and resurrection. The Lord preserved mankind after the flood in order to fulfill His promise (Gen. 3:15) to send the "seed" of the woman to crush the head of the Serpent. He also preserved Noah on the Ark because the Redeemer was in his loins-so to speak (Luke 3:23, 35-37). Because Messiah had not yet come, God would have been unfaithful to His promise if He had utterly destroyed the world. He left a remnant so that men might multiply, and that the Christ might come and redeem a multitude of people to great to number. Though the flood had been a judgment on the wickedness of the fallen world, it could never take that wickedness out of the hearts of men, only the saving work of Christ could do so. God promised never to destroy the world in the way that He had done so for the very same reason for which He had destroyed it in the first place (Gen. 6:5-7; 8:20-22). In short, the humanity of Christ was in the Ark in Noah's loins, and everything in the Ark with Noah was going to be used in the unfolding plan of redemption.

Job was a type of Christ in that he was a righteous sufferer. Job underwent a humiliation and exaltation that finds it's

था। उसकी तुलना मसीह से की गई है क्योंकि वह धार्मिकता के लिए शहीद हुआ था;

सेठ एक प्रकार का मसीह था जिसमें वह उस महिला का "वंश" था, जो-जैसा कि उसके नाम से पता चलता है-हाबिल के स्थान पर "नियुक्त/स्थापित/सेट" किया गया था। हमारा प्रभु यीशु मसीह उत्पत्ति 3:15 के वादे की अंतिम पूर्ति के अर्थ में "स्त्री का बीज" है। सेठ एक "बीज-उद्धारकर्ता" भेजने के वाचा के वादे को पूरा करने में केवल एक विशिष्ट कदम था। यहाँ हमारे लिए पुराने नियम का अध्ययन करते समय एक मार्गदर्शक व्याख्यात्मक सिद्धांत पर ध्यान देना अत्यावश्यक है। क्योंकि भगवान का रहस्योद्घाटन मूल रूप से एक उद्धारक (उत्पत्ति 3:15) के पहले वादे से संबंधित है, और चूंकि वह पहला वादा "स्त्री" द्वारा एक पुरुष बच्चे को जन्म देने के बाद पूरा होना था, आदम और हव्वा से आगे की हर पीढ़ी छुटकारे के वादे को पूरा करने के लिए उम्मीद से देख रहे थे। हम देखते हैं कि हव्वा ने कैन का नामकरण किया। हमें उत्पत्ति 4:1 में बताया गया है, "अब आदम अपनी पत्नी हव्वा को जानता था, और वह गर्भवती हुई और कैन को जन्म दिया, और कहा, 'मैं ने यहोवा से एक मनुष्य पाया है।'" विश्वास में, हव्वा आशा कर रही थी कि परमेश्वर ने उसका पूरा किया है उसे एक रिडीमर देने का वादा करें, हालांकि सच्चाई से आगे कुछ भी नहीं हो सकता था। उद्धारक की अपेक्षा उस वाचायी रेखा की स्थापना से भी बंधी है जिससे मसीह आएगा। शेत उस वाचायी रेखा के शीर्ष पर खड़ा है। उद्धारक की अपेक्षा उस वाचायी रेखा की स्थापना से भी बंधी है जिससे मसीह आएगा। शेत उस वाचायी रेखा के शीर्ष पर खड़ा है। उद्धारक की अपेक्षा उस वाचायी रेखा की स्थापना से भी बंधी है जिससे मसीह आएगा। शेत उस वाचायी रेखा के शीर्ष पर खड़ा है।

एनोह एक प्रकार का मसीह था जिसमें "वह परमेश्वर के साथ चलता था और नहीं था।" हनोक असाधारण सीधाई का उदाहरण था। शारीरिक रूप से स्वर्ग में उठा लिए जाने में उसने मसीह के शारीरिक स्वर्गारोहण का पूर्वरूप दिया जो "परमेश्वर के साथ-साथ चलता था और था नहीं।" हनोक का शारीरिक स्वर्गारोहण यीशु के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के साथ-साथ उन सभी के शारीरिक पुनरुत्थान को दर्शाता है जो विश्वास से मसीह से जुड़े हुए हैं।

नूह एक प्रकार का मसीह था जिसमें उन्होंने "दूसरे आदम" के रूप में कार्य किया; वह "दूसरा मनुष्य," या "अंतिम आदम" नहीं था, परन्तु आने वाले का एक प्रतीक था। जिस प्रकार परमेश्वर ने आदम को सृष्टि को फलदायी और बहुगुणित करने का आदेश दिया था उसी प्रकार उसने नूह को फिर से सृजन का आदेश दिया था। यहोवा ने आदम को निर्देश दिया था कि वह क्या खा सकता है। वैसे ही नूह को भी भोजन के विषय में शिक्षा मिली। नूह आमतौर पर एक नई मानवता का संघीय प्रतिनिधि होगा। यीशु नई मानवता का संघ प्रमुख है। नूह के नाम का अर्थ "आराम" है। उसके पिता ने यह कहकर उसका नाम "विश्राम" रखा, "यह हमें उस भूमि से विश्राम देगा जिसे यहोवा परमेश्वर ने शाप दिया है।" नूह ने केवल एक विशिष्ट अर्थ में विश्राम किया जब वह अपने परिवार के साथ

antitype in the suffering and glory of the Redeemer. Job was tested by God when he was tempted by the devil. Jesus was tested by God when He was tempted by the devil. Just as God meant good for Job through his sufferings (Job 42:12), so He meant good for Christ through His sufferings. Jesus is the righteous sufferer who shows forth the righteousness of God

Melchizedek was a type of Christ in that he was the King/Priest who blessed Abraham. No one in the Old Testament serves in both offices. Jesus is the Prophet, Priest and King of His church. Melchizedek typified Him in two of the three offices (Zech. 6:12-13). He was "King of Righteousness" and "King of Priest." Jesus is the King in whom "righteousness and peace kiss" at the cross (Ps. 85:10). Like Melchizedek before Him, Jesus had "no beginning of days, nor end of life." He is the eternal Priest to whom Melchizedek pointed. He was never, and never will be, replaced as High Priest of the Church.

Abraham was a type of Christ in that he was the prototypical stranger and foreigner. Like the Redeemer, He functionally "had nowhere to lay his head." As the federal head of the Covenant, he was also the father of many nations. Jesus is the "Everlasting Father" (Isaiah 8:18, 9:6; Psalm 45:16; Hebrews 2:13) of believer who federally represented His people from every tongue, tribe, nation and language. The promises in Scripture are said to have been made to "Abraham and his Seed...who is Christ." All the promises made to Abraham were made to Him as the typical representative of the Covenant of Grace. Ultimately, they were made to, and fulfilled in, Jesus Christ.

Isaac was a type of Christ in that he was the promised "son of Abraham." The promises of God were given directly to Abraham with respect to His son (offspring). Everywhere in the NT are we taught that Jesus is the true promised son of Abraham. However, in the original giving of the promise Isaac was the promised son in view. The birth and life of Isaac also typify the Redeemer. Just as Isaac's birth was the result of the supernatural power of God so too was it true of Jesus. Isaac typified the Redeemer in that he is the only other human sacrifice that God commanded, and though God stopped Abraham from going through with the sacrifice of Isaac-he is said to have died and been risen "figuratively" (Hebrews 11:19). Jesus, the true and greater son of Abraham, was sacrificed, raised and returned to His Father.

Jacob was a type of Christ in that He was the chosen one who was named 'Israel' by God. Before Israel was a nation, He was a person. This is significant since Jesus is shown to be the true Israel in the Gospels. The fact that the name "Israel" is first given to a person reveals that the anti-typical Israel would be a person. Jacob's gave birth to the nation-church; Jesus gives birth to His church. Jesus is God's

एक विशिष्ट नई सृष्टि में रहने के लिए जहाज़ से चला गया। लेकिन मसीह, बड़ा नूह, वास्तव में पुरुषों और महिलाओं के प्राणों को विश्राम देता है (मत्ती 11:25-30)। अकेले मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा नई सृष्टि को सुरक्षित किया है। सर्प के सिर को कुचलने के लिए स्त्री के "वंश" को भेजने के अपने वादे (उत्पत्ति 3:15) को पूरा करने के लिए भगवान ने बाढ़ के बाद मानव जाति को संरक्षित किया। उसने नूह को भी सन्दूक पर सुरक्षित रखा क्योंकि छुड़ाने वाला उसकी गोद में था - कहने के लिए (लूका 3:23, 35-37)। क्योंकि मसीहा अभी तक नहीं आया था, यदि परमेश्वर ने संसार को पूरी तरह से नष्ट कर दिया होता, तो परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा के प्रति विश्वासघाती होता। उसने एक अवशेष को छोड़ दिया ताकि मनुष्य गुणा कर सकें, और कि मसीह आकर लोगों की एक बड़ी भीड़ को छुटकारा देकर गिनती में बढ़ा सके। हालाँकि जलप्रलय पतित संसार की दुष्टता पर एक न्याय था, यह कभी भी उस दुष्टता को मनुष्यों के हृदय से नहीं निकाल सकता था, केवल मसीह का उद्धार कार्य ही ऐसा कर सकता था। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह संसार को कभी भी उस तरह से नष्ट नहीं करेगा जिस तरह से उसने ऐसा उसी कारण से किया था जिसके लिए उसने इसे पहले स्थान पर नष्ट किया था (उत्पत्ति 6:5-7; 8:20-22)। संक्षेप में, मसीह की मानवता नूह की गोदी में जहाज में थी, और नूह के साथ जहाज में सब कुछ छुटकारे की योजना में इस्तेमाल होने जा रहा था।

काम एक प्रकार का मसीह था जिसमें वह एक धर्मी पीड़ित था। अय्यूब एक अपमान और उत्कर्ष से होकर गुजरा जो उद्धारक की पीड़ा और महिमा में उसका प्रतिरूप पाता है। अय्यूब की परीक्षा परमेश्वर ने तब की जब वह शैतान के द्वारा परीक्षा में पड़ा। यीशु की परीक्षा परमेश्वर द्वारा की गई जब शैतान के द्वारा उसकी परीक्षा की गई। जिस प्रकार परमेश्वर अय्यूब के कष्टों के माध्यम से उसके लिए भलाई चाहता था (अय्यूब 42:12), उसी प्रकार वह मसीह के लिए भी उसके कष्टों के माध्यम से भलाई चाहता था। यीशु धर्मी पीड़ित है जो परमेश्वर की धार्मिकता को दिखाता है

मलिकिसिदक मसीह का एक प्रकार था जिसमें वह राजा/याजक था जिसने अब्राहम को आशीष दी थी। पुराने नियम में कोई भी दोनों कार्यालयों में सेवा नहीं करता है। यीशु अपने चर्च के पैगंबर, पुजारी और राजा हैं। मेल्कीसेदेक ने उसे तीन में से दो कार्यालयों में प्ररूपित किया (जकर्याह 6:12-13)। वह "धार्मिकता का राजा" और "याजक का राजा" था। यीशु वह राजा है जिसमें क्रूस पर "धार्मिकता और शांति चूमती है" (भजन 85:10)। उससे पहले मलिकिसिदक की तरह, यीशु के पास "दिनों का न आदि था, न जीवन का अंत।" वह शाश्वत याजक है जिसकी ओर मलिकिसिदक ने संकेत किया था। वह कभी भी चर्च के महायाजक के रूप में प्रतिस्थापित नहीं किया गया था, और कभी नहीं होगा।

अब्राहम एक प्रकार का मसीह था जिसमें वह आदर्श अजनबी और विदेशी था। मुक्तिदाता की तरह, वह कार्यात्मक रूप से "अपना सिर रखने के लिए कहीं नहीं था।" वाचा के संघीय प्रमुख के रूप में, वह कई राष्ट्रों का पिता भी था। यीशु एक विश्वासी का

"chosen One" (Is. 42:1). He is the "last man of Israel" and the representative of the true Israel.

Joseph was a type of Christ in that he suffered unjustly and then was exalted to save his brethren. Undergoing a series of deaths and resurrections, Joseph typified the "sufferings of Christ and the glories to follow" (1 Peter 1:10-11). He was envied and hated by his brothers, suffered at their hands and was exalted to a place of power over the most powerful nation of the world. Jesus, the greater Joseph, was envied and hated by His countrymen and brethren, murdered by them and then exalted to the highest place of power and honor to save the world by feeding them with the rich granaries of heaven. feedingonchrist.com/old-testament-personal-types-and-shadows-of-christ

Mosaic Age

Years after Joseph's death God raised up Moses to deliver His people from Egyptian bondage. After crossing the Red Sea, they were free from slavery. Then, God through Moses entered into a covenant with these former slaves. This covenant is often referred to as "The Law of Moses." God also gave to Moses specific plans for the building of a tabernacle and its contents. Following its completion God enter into the Most Holy Place. Because of lack of faith these people known to us as The Children of Israel wandered for 40 years before they were allowed to enter the land promised by God to Abraham, Isaac and Jacob.

By inspiration Moses and other writers recorded their history we call the Old Testament. It covers the period from creation to "just at the right time" for God to reveal and provide the forgiveness of sins, salvation, by the atoning sacrifice of Jesus of Nazareth.

Hopefully the following pictures will assist you in understanding Joseph Pitman's personal interpretations of types and shadows. The BibleWay Publishing does not express an opinion as to the accuracy of his opinion.

1. The first shows the Israelites camped by tribe around the tabernacle.
2. The second displays the burnt offering on the altar and the presence of God descending on the Most Holy Place where the Arc of the Covenant and Mercy Seat resided.
3. The third is a cutaway view showing the layout and contents of the Holy and Most Holy, Holy of Holies.
4. The fourth is an artist conception of the tabernacle contents

"अनन्तकाल का पिता" (यशायाह 8:18, 9:6; भजन संहिता 45:16; इब्रानियों 2:13) है, जिसने प्रत्येक जीभ, कुल, राष्ट्र और भाषा से अपने लोगों का प्रतिनिधित्व किया। कहा जाता है कि पवित्रशास्त्र में प्रतिज्ञाएँ "अब्राहम और उसके वंश... जो मसीह हैं" से की गई हैं। अब्राहम से की गई सभी प्रतिज्ञाएँ अनुग्रह की वाचा के विशिष्ट प्रतिनिधि के रूप में उससे की गई थीं। अंततः, वे यीशु मसीह के लिए बनाए गए, और उसमें पूर्ण हुए।

इसहाक मसीह का एक प्रकार था जिसमें वह प्रतिज्ञा किया हुआ "अब्राहम का पुत्र" था। परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ सीधे अब्राहम को उसके पुत्र (संतान) के संबंध में दी गई थीं। नए नियम में हर जगह हमें सिखाया जाता है कि यीशु अब्राहम का सच्चा प्रतिज्ञात पुत्र है। हालाँकि, प्रतिज्ञा के मूल देने में इसहाक दृष्टि में प्रतिज्ञात पुत्र था। इसहाक का जन्म और जीवन भी मुक्तिदाता का प्रतीक है। जैसे इसहाक का जन्म परमेश्वर की अलौकिक शक्ति का परिणाम था, वैसे ही यह यीशु के लिए भी सच था। इसहाक ने उद्धारक को प्ररूपित किया कि वह एकमात्र अन्य मानव बलिदान है जिसकी परमेश्वर ने आज्ञा दी, और यद्यपि परमेश्वर ने इब्राहीम को इसहाक के बलिदान के माध्यम से जाने से रोक दिया- कहा जाता है कि वह मर गया और "लाक्षणिक रूप से" जी उठा (इब्रानियों 11:19)। यीशु, इब्राहीम का सच्चा और बड़ा पुत्र, बलिदान हुआ, जी उठा और अपने पिता के पास लौट आया।

याकूब मसीह का एक प्रकार था जिसमें वह चुना हुआ था जिसे परमेश्वर के द्वारा 'इस्राएल' नाम दिया गया था। इस्राएल के एक राष्ट्र होने से पहले, वह एक व्यक्ति था। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि सुसमाचारों में यीशु को सच्चा इस्राएल दिखाया गया है। तथ्य यह है कि "इज़राइल" नाम पहले एक व्यक्ति को दिया जाता है, यह बताता है कि विरोधी विशिष्ट इज़राइल एक व्यक्ति होगा। याकूब ने राष्ट्र-चर्च को जन्म दिया; यीशु अपने चर्च को जन्म देता है। यीशु परमेश्वर का "चुना हुआ" है (यशा. 42:1)। वह "इज़राइल का आखिरी आदमी" और सच्चे इज़राइल का प्रतिनिधि है।

यूसुफ मसीह का एक प्रकार था जिसमें उसने अन्याय से दुःख उठाया और फिर अपने भाइयों को बचाने के लिए ऊँचा उठाया गया। मृत्यु और पुनरुत्थान की एक श्रृंखला से गुज़रते हुए, यूसुफ ने "मसीह के कष्टों और आनेवाले महिमा" को प्ररूपित किया (1 पतरस 1:10-11)। वह अपने भाइयों से ईर्ष्या और घृणा करता था, उनके हाथों पीड़ित हुआ और दुनिया के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र पर सत्ता के स्थान पर पहुंच गया। यीशु, बड़ा यूसुफ, अपने देशवासियों और भाइयों से ईर्ष्या और घृणा करता था, उनके द्वारा हत्या कर दी गई और फिर दुनिया को बचाने के लिए उन्हें स्वर्ग के समृद्ध अनाज के साथ खिलाकर शक्ति और सम्मान के सर्वोच्च स्थान पर पहुंचा दिया गया। Feedingonchrist.com/old-testament-personal-types-and-shadows-of-christ

मोज़ेक युग

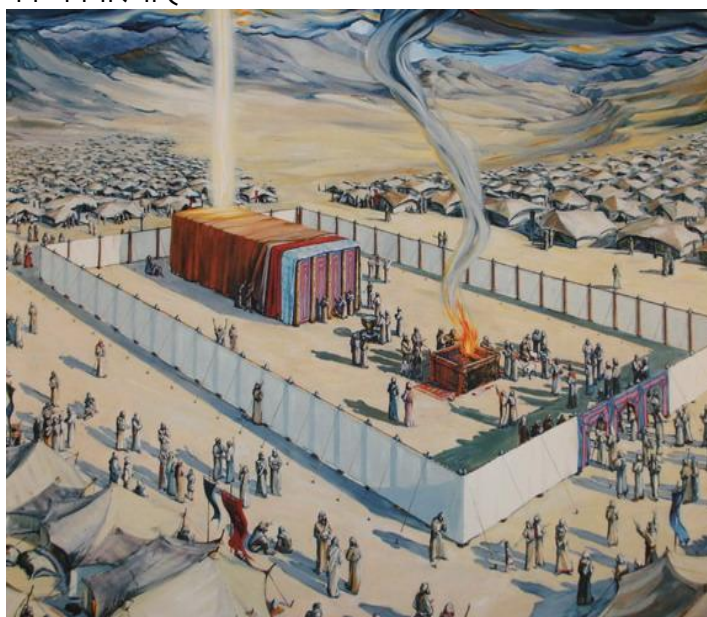
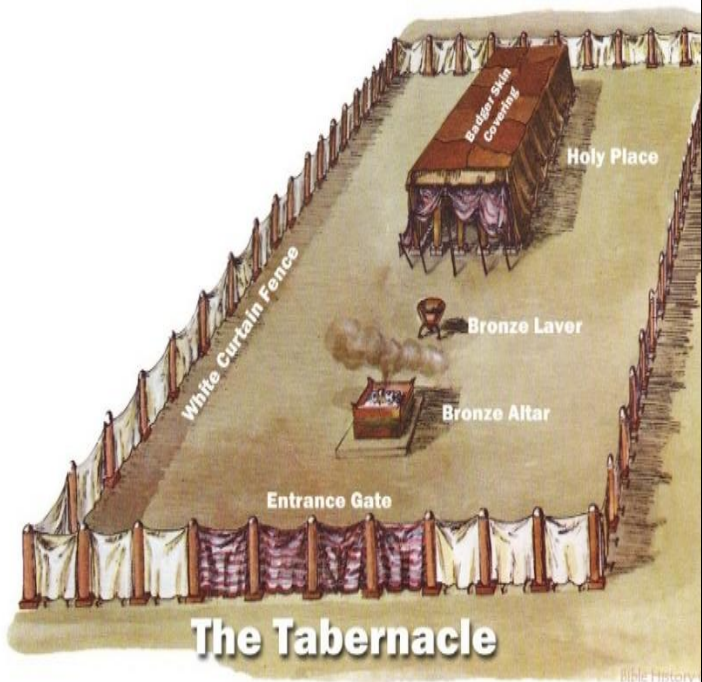


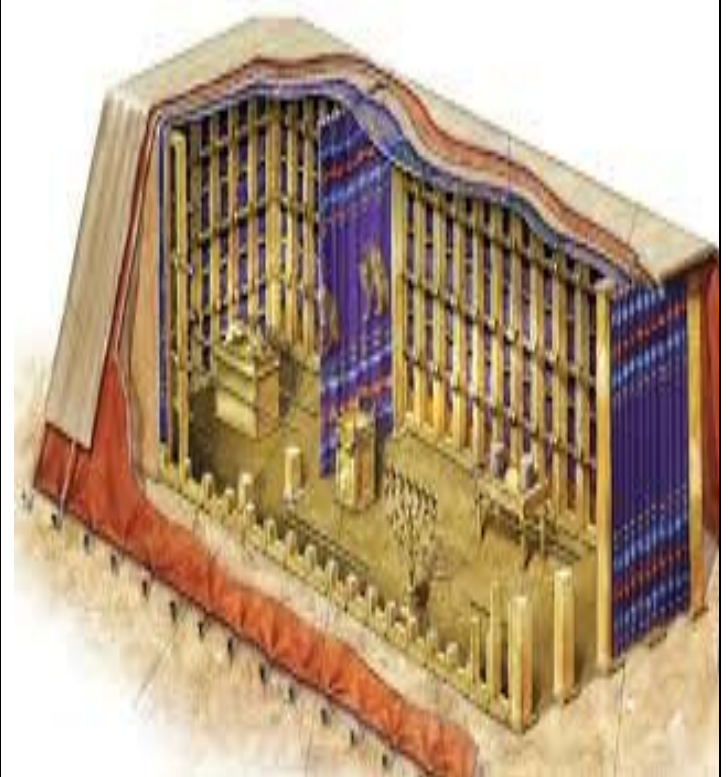
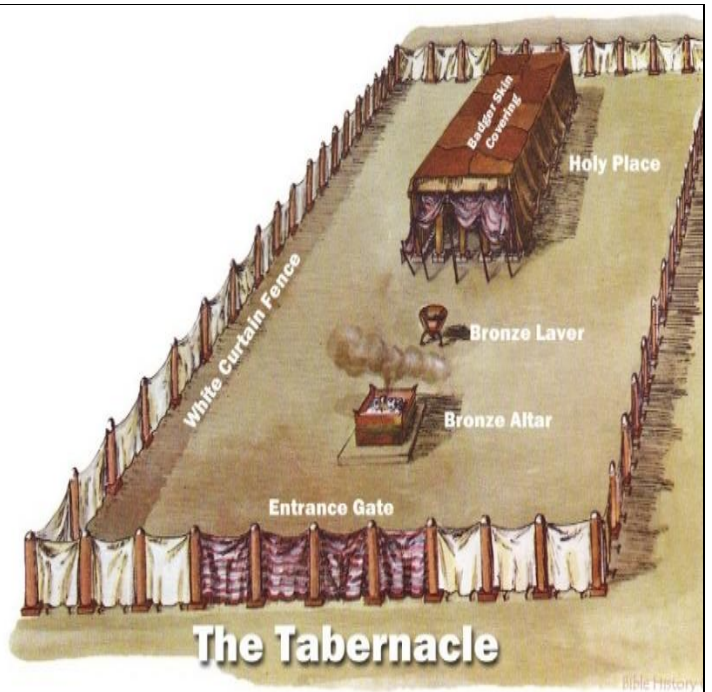
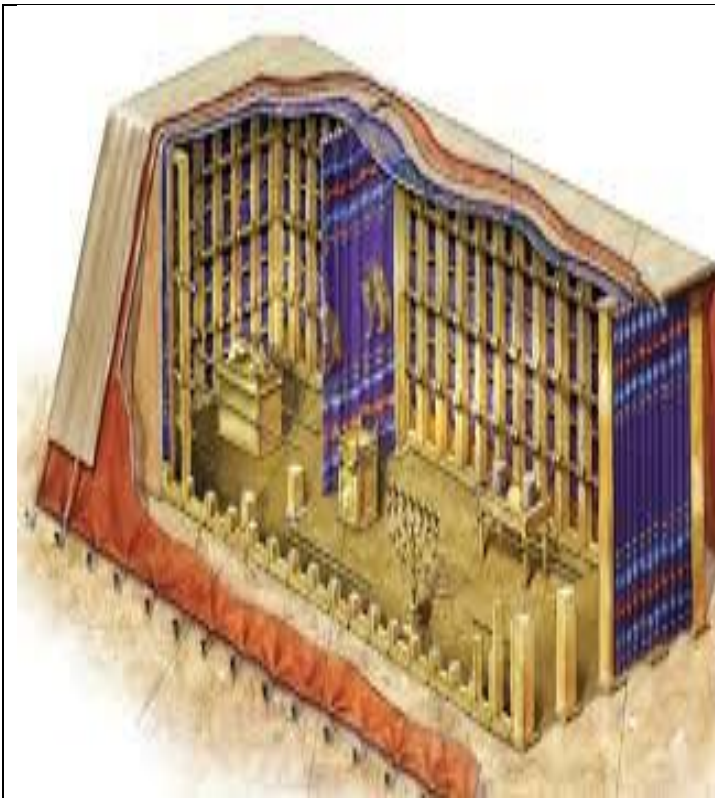
यूसुफ की मृत्यु के वर्षों बाद परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाने के लिए मूसा को खड़ा किया। लाल सागर को पार करने के बाद वे गुलामी से मुक्त हुए। फिर, परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इन भूतपूर्व दासों के साथ वाचा बान्धी। इस वाचा को अक्सर "मूसा की व्यवस्था" के रूप में जाना जाता है। परमेश्वर ने मूसा को तम्बू के निर्माण और उसकी सामग्री के लिए विशिष्ट योजनाएँ भी दीं। इसके पूरा होने के बाद भगवान परम पवित्र स्थान में प्रवेश करते हैं। विश्वास की कमी के कारण ये लोग जिन्हें हम इस्राएल के बच्चे के रूप में जानते हैं, 40 साल तक भटकते रहे, इससे पहले कि उन्हें इब्राहीम, इसहाक और याकूब को परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा की गई भूमि में प्रवेश करने की अनुमति दी गई।

प्रेरणा से मूसा और अन्य लेखकों ने अपने इतिहास को दर्ज किया जिसे हम पुराना नियम कहते हैं। यह नासरत के यीशु के प्रायश्चित्त बलिदान द्वारा भगवान को प्रकट करने और पापों की क्षमा, मुक्ति प्रदान करने के लिए "ठीक समय पर" सृष्टि से अवधि को शामिल करता है।

उम्मीद है कि निम्नलिखित चित्र आपको यूसुफ पिटमैन के प्रकारों और छायाओं की व्यक्तिगत व्याख्याओं को समझने में सहायता करेंगे। बाइबिलवे पब्लिशिंग उनकी राय की सटीकता के रूप में एक राय व्यक्त नहीं करता है।

5. पहला दिखाता है कि इस्राएली तम्बू के चारों ओर गोत्र के अनुसार डेरा डाले हुए थे।
6. दूसरा वेदी पर होमबलि और परम पवित्र स्थान पर परमेश्वर की उपस्थिति को प्रदर्शित करता है जहाँ वाचा का चाप और दया का आसन रहता था।
7. तीसरा एक कटा हुआ दृश्य है जो पवित्र और परम पवित्र, परम पवित्र के लेआउट और सामग्री को दर्शाता है।
8. चौथा मिलापवाले तम्बू की सामग्री की एक कलाकार की अवधारणा है





THE SHADOW OF HEAVENLY THINGS,
 Or
 THE FIRST AND SECOND TABERNACLE.
 BY JOSEPH PITTMAN.

"To be had from the Author, Airlie Avenue, Armadale, or at the Austral Publishing Co., 528 Elizabeth-street, Melbourne. The profits of this work will be devoted to the Armadale Rescue Home. 1893. Pittman, Joseph.

The Shadow of Heavenly Things, or the First and Second Tabernacle. Melbourne: Austral Publishing Company, 1893. Electronic text provided by Colvil Smith. HTML rendering by Ernie Stefanik. 15 August 1999"

Chapters

Preface and Introduction

Chapter I: Shadow and Substance

Chapter II: Moses-Christ

Chapter III: Inspired Workmen

Chapter IV: The Materials

Chapter V: The Court

Chapter VI: The Structure

Chapter VII: The Covering

Chapter VIII: The Brazen Altar

Chapter IX: The Laver

Chapter X: The Priesthood

Chapter XI: The Holy Place

Chapter XII: The Table of Shew-Bread

Chapter XIII: The Altar of Incense

Chapter XIV: The Holy of Holies

Chapter XV: The High Priest

Chapter XVI: Conclusion

PREFACE

THE substance of this little work was written eight years ago. On coming to the colony of Victoria it was my intention then to have published it; but finding Bro. Maston's little gem of a treatise on the same subject already in the field, I put the manuscript away. But thinking over ways of helping our Rescue Home it occurred to me that, with this object in view, I might now be pardoned for bringing my humble production to light. On interviewing Bro. Maston, with his usual magnanimity, he soon set my mind at rest as to any fear of rivalry; and urged me to go to press, as the field was by no means fully explored. And now I have only to say that if this effort prove in any degree helpful to my earnest reader, I shall be more than repaid, if by his commending it to others, its sale is increased, and so the Rescue Home will be benefited. -- J. P.

INTRODUCTION.

TO draw aside the veil of futurity is divine. Of the numerous evidences of the heavenly authorship of the Bible, perhaps one of the most conclusive is its marvellous unfolding of the future. Two methods were employed. First, by the "sure word of prophecy," which God gave "by the mouth of His holy prophets since the world began;" and second, by types and shadows. It may be open to question



स्वर्गीय वस्तुओं की छाया, या पहला और दूसरा मिलाप।
जोसेफ पिटमैन द्वारा।

"लेखक, एयरली एवेन्यू, आर्मडेल, या ऑस्ट्रेलिया पब्लिशिंग कंपनी, 528 एलिजाबेथ-स्ट्रीट, मेलबर्न से उपलब्ध है। इस काम का मुनाफा आर्मडेल रेस्क्यू होम को समर्पित होगा। 1893। पिटमैन, जोसेफ।

स्वर्गीय वस्तुओं की छाया, या पहला और दूसरा तम्बू। मेलबोर्न: ऑस्ट्रेलिया प्रकाशन कंपनी, 1893। कोल्विल स्मिथ द्वारा प्रदान किया गया इलेक्ट्रॉनिक पाठ। एर्नी स्टेफ़ानिक द्वारा HTML प्रतिपादन। 15 अगस्त 1999"

अध्याय

प्रस्तावना और परिचय

अध्याय I: छाया और पदार्थ

अध्याय II: मूसा-मसीह

अध्याय III: प्रेरित कार्यकर्ता

अध्याय IV: सामग्री

अध्याय V: न्यायालय

अध्याय VI: संरचना

अध्याय VII: आवरण

अध्याय आठ: पीतल की वेदी

अध्याय IX: द लेवर

अध्याय X: पुरोहितवाद

whether, ordinarily, "coming events cast their shadows before," but this is undoubtedly true of the Bible. It is not too much to say that the entire system of Christianity was forecast in the Scriptures of the Old Testament by means of type and prophecy. The New Testament contains about 500 references to the Old. Nearly the whole of these citations are made to bear witness to the truth of the religion of Jesus Christ. There is therefore a close connection between the two great divisions of the Bible--the Old and the New Testaments; and they must be studied together to understand "all the counsel of God." The plan of this little treatise confines us to one aspect of this delightful study. Let us pray for light and guidance, that the glory of God may be ours, and that we may see light in His light.

The journeyings of the Israelites, from their captivity in Egypt to their entrance into Canaan, is one continuous series of types and symbols of our progress from the bondage of sin to our triumphant entrance into glory. Moses, too, as the leader of Israel, ever stands out as the type of Jesus Christ. This is abundantly proved by the following New Testament Scriptures: "I would not, brethren, have you ignorant how that our fathers were all under the cloud, and all passed through the sea; and were all baptized unto (marg. into) Moses in the cloud and in the sea; and did all eat the same spiritual meat; and did all drink the same spiritual drink: for they drank of a spiritual rock that followed them, and that rock was Christ. . . . Now these things were, our examples (marg. in these things they became figures of us)" (1 Cor. 10:1-6); "Moses indeed said, A prophet shall the Lord God raise up unto you from among your brethren like unto me; to, Him shall ye hearken in all things whatsoever He shall speak unto you. And it shall be that every soul which shall not hearken to that prophet shall be utterly destroyed from among the people" (Acts 3:22, 23); "With whom was He displeased forty years? Was it not with them that sinned, whose carcasses fell in the wilderness? And to whom swear He that they should not enter into His rest, but to them that were disobedient? And we see that they were not able to, enter in because of unbelief. Let us fear, therefore, lest haply, a promise being left of entering into His rest, any one of you should seem to have come short of it" (Heb. 3:17; 4:1). But even if we could not refer to such scriptures as these, the likeness is so striking that it is impossible to mistake it. Let us briefly trace it. The Israelites were subject to a cruel bondage in Egypt, which utterly degraded them. This is the state of man, bound, defiled, and degraded by sin. Moses was sent by God to lead the children of Israel out of their bondage into liberty. Jesus was sent to deliver us from sin and ruin. The very character and life story of Moses bear striking resemblance to Jesus. Knowing that he was intended to be the deliverer of Israel (Acts 7:25) he "refused to be called the son of Pharaoh's daughter, choosing rather to be evil entreated with the people of God than to enjoy the pleasures of sin for a season, accounting the reproach of (the) Christ

अध्याय XI: पवित्र स्थान
अध्याय बारहवीं: दिखावटी रोटी की मेज
अध्याय XIII: धूप की वेदी
अध्याय XIV: परम पवित्र
अध्याय XV: महायाजक
अध्याय XVI: निष्कर्ष

प्रस्तावना

इस छोटे से कार्य का सार आठ साल पहले लिखा गया था। विक्टोरिया की कॉलोनी में आने पर मेरा इरादा इसे प्रकाशित करने का था; लेकिन भाई को ढूँढ रहा हूँ। उसी विषय पर पहले से ही मैदान में मैस्टन का एक ग्रंथ का छोटा रत्न, मैंने पांडुलिपि को दूर रख दिया। लेकिन हमारे रेस्क्यू होम की मदद करने के तरीकों पर विचार करते हुए मेरे साथ यह हुआ कि इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, अब मुझे अपने विनम्र उत्पादन को प्रकाश में लाने के लिए क्षमा किया जा सकता है। साक्षात्कार पर भाई। मैस्टन, अपनी सामान्य उदारता के साथ, उसने जल्द ही प्रतिद्वंद्विता के किसी भी डर के रूप में मेरे दिमाग को शांत कर दिया; और मुझे प्रेस में जाने का आग्रह किया, क्योंकि क्षेत्र का पूरी तरह से अन्वेषण नहीं किया गया था। और अब मुझे केवल यह कहना है कि अगर यह प्रयास मेरे गंभीर पाठक के लिए किसी भी हद तक मददगार साबित होता है, तो मुझे चुकाया जाएगा, अगर वह दूसरों को इसकी सराहना करता है, तो इसकी बिक्री बढ़ जाती है, और इसलिए रेस्क्यू होम लाभान्वित होगा। -- जे.पी

परिचय। भविष्य का पर्दा हटा देना ईश्वरीय है। बाइबल के स्वर्गीय ग्रन्थकारिता के असंख्य प्रमाणों में से, शायद सबसे निर्णायक में से एक इसका भविष्य का अद्भुत खुलासा है। दो विधियाँ कार्यरत थीं। सबसे पहले, "भविष्यद्वक्ताओं के निश्चित वचन" के द्वारा, जिसे परमेश्वर ने "अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से जगत की उत्पत्ति से लेकर" दिया; और दूसरा, प्रकार और छाया द्वारा। यह सवाल करने के लिए खुला हो सकता है कि क्या, आमतौर पर, "आने वाली घटनाओं की छाया पहले पड़ती है," लेकिन यह निस्संदेह बाइबल के बारे में सच है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि ईसाई धर्म की पूरी व्यवस्था पुराने नियम के शास्त्रों में प्रतीक और भविष्यवाणी के माध्यम से भविष्यवाणी की गई थी। नए नियम में पुराने के लगभग 500 संदर्भ हैं। इनमें से लगभग सभी उद्धरण ईसा मसीह के धर्म की सच्चाई की गवाही देने के लिए बनाए गए हैं। इसलिए बाइबल के दो महान विभागों - पुराने और नए नियम के बीच घनिष्ठ संबंध है; और "परमेश्वर की सारी सम्मति" को समझने के लिए एक साथ अध्ययन किया जाना चाहिए। इस छोटे ग्रंथ की योजना हमें इस रमणीय अध्ययन के एक पहलू तक सीमित करती है। आइए हम प्रकाश और मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करें, ताकि परमेश्वर की महिमा हमारी हो सके, और हम उनके प्रकाश में प्रकाश देख सकें।

इस्राएलियों की यात्रा, मिस्र में उनकी कैद से लेकर कनान में उनके प्रवेश तक, पाप के बंधन से महिमा में हमारे विजयी प्रवेश द्वार तक

greater riches than the treasures of Egypt, for he looked unto the recompense of reward" (Heb. 11:24-26). Thus Jesus, "though He was rich, yet for our sakes He became poor, that we, through His poverty, might become rich" (2 Cor. 8:9). "Who for the joy that was set before Him, endured the cross, despising the shame" (Heb. 12:2). The likeness is real, though it is truly as but the shadow to the substance. The analogy yet continues. Moses proved his divine mission by many wonderful miracles. So of Jesus Peter said: "Ye men of Israel, hear these words: Jesus of Nazareth, a man approved of God unto you by mighty works and wonders and signs, which God did in the midst of you, even as ye yourselves know" (Acts 2:22). And Jesus said truly: "The works which I do in My Father's name, they bear witness of Me" (John 10:25). The institution of the Passover--the lamb slain and eaten with unleavened bread and bitter herbs, the people having their loins girded, their shoes on their feet and their staff in their hand; the lintel and posts of their doors splashed with the blood of the lamb; the passing over of the angel of destruction: all strikingly illustrate precious new covenant things. "Christ our passover is sacrificed for us," and by faith we received Him, with the bitterness of repentance, but with the gladness of hope, when we rose up from our chains and shame, resolved to live a new and consecrated life. By faith we sheltered ourselves under the blood of His cross, and the wrath which we so much dreaded and deserved was graciously turned aside! Moses leads the people, under God. We read: "And it came to pass, when Pharaoh had let the people go, that God led them not by the way of the land of the Philistines, although that was near: for God said, Lest peradventure the people repent when they see war, and they return to Egypt: but God led the people about by the way of the wilderness of the Red Sea" (Ex. 13:17, 18). Now, while it is impossible to locate on the map the course pursued by the children of Israel, it is certain that the Lord led them by a strange way, which in their worldly wisdom they would never have chosen for themselves. As far as can be ascertained with tolerable certainty, it appears that the way that "was near" was a short and easy way into the wilderness, which would have avoided the Red Sea. But instead of taking this course, "God led the people about" through a rugged mountainous country, down to the shores of the Red Sea. Any human general would have judged this to be the height of folly. And we know what the people thought when they saw the sea before them, impassable mountains on either side of them, and the relentless Pharaoh and his host at their rear. But God saw the end from the beginning. They did not, and this made all the difference. "And the Lord said unto Moses, Wherefore, criest thou unto Me? Speak unto the children of Israel that they go forward. And lift thou up thy rod, and stretch out thine hand over the sea, and divide it" (Ex. 14:15, 16). And Moses did so; and the people, led by Moses, passed over on dry land; and the Egyptians, following them, were engulfed in the returning flood, while the people rent the heavens with their shouts of

हमारी प्रगति के प्रकारों और प्रतीकों की एक सतत श्रृंखला है। मूसा भी, इस्राएल के अगुवे के रूप में, हमेशा यीशु मसीह के प्रतीक के रूप में खड़ा होता है। यह नए नियम के निम्नलिखित शास्त्रों द्वारा बहुतायत से सिद्ध किया गया है: "हे भाइयों, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनभिज्ञ हो कि हमारे सब बापदादे बादल के नीचे थे, और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए; बादल और समुद्र में; और सब ने एक ही आत्मिक मांस खाया; और सब ने एक ही आत्मिक जल पिया; क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था... अब ये बातें थीं, हमारे उदाहरण (मार्ग)। इन बातों में वे हमारे प्रतीक बन गए" (1 कुरिं। 10:1-6); "मूसा ने कहा, परमेश्वर यहीवा तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मेरे समान एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा; कि जो कुछ वह तुम से कहे उसे तुम सब बातों को मानना। और ऐसा होगा कि जो कोई उस भविष्यद्वक्ता की बात न माने वह लोगों में से सत्यानाश किया जाए" (प्रेरितों के काम 3:22, 23); "वह चालीस वर्ष तक किस से अप्रसन्न रहा? क्या उन्हीं से नहीं जिन ने पाप किया, जिनकी लोथें जंगल में पड़ी रहीं? और वह किस की शपथ खाता है, कि वे उसके विश्राम में प्रवेश न करने पाएंगे, परन्तु उन्हीं के लिथे जो आज्ञा न मानते थे? और हम देखते हैं, कि वे अविश्वास के कारण प्रवेश न कर सके। सो आओ, हम डरें, कहीं ऐसा न हो, कि उसके विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा के छोड़े जाने पर तुम में से कोई उस से रहित समझे" (इब्रा. 3:17; 4:1)। इस तरह के शास्त्रों को इन के रूप में देखें, समानता इतनी आकर्षक है कि इसमें गलती करना असंभव है। आइए संक्षेप में इसका पता लगाते हैं। इस्राएली मिस्र में एक क्रूर बंधन के अधीन थे, जिसने उन्हें पूरी तरह से नीचा दिखाया। यह मनुष्य की अवस्था है, बंधी हुई, अशुद्ध, और पाप से पतित। मूसा को परमेश्वर द्वारा इस्राएल के बच्चों को उनकी गुलामी से आजादी में ले जाने के लिए भेजा गया था। यीशु हमें पाप और बर्बादी से छुड़ाने के लिए भेजा गया था। मूसा का चरित्र और जीवन की कहानी ही यीशु के समान है। यह जानते हुए कि वह इस्राएल का उद्धारकर्ता होना चाहता था (प्रेरितों के काम 7:25) उसने "फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया, और पाप के थोड़े दिन के सुख भोगने की अपेक्षा परमेश्वर के लोगों के साथ बुरा व्यवहार करना अधिक अच्छा समझा।" मसीह की निन्दा का हिसाब मिस्र के भण्डार से बड़ा धन है, क्योंकि उस की दृष्टि प्रतिफल के प्रतिफल की ओर लगी थी" (इब्रानियों 11:24-26)। इस प्रकार यीशु, "वह धनी होकर भी हमारे लिये कंगाल बन गया, ताकि हम उसके कंगाल हो जाने से धनी हो जाएं" (2 कुरिन्थियों 8:9)। "जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा" (इब्रानियों 12:2)। समानता वास्तविक है, हालांकि यह वास्तव में पदार्थ की छाया है। सादृश्य अभी भी जारी है। मूसा ने कई अद्भुत चमत्कारों के द्वारा अपने दिव्य मिशन को सिद्ध किया। यीशु के बारे में पतरस ने कहा: "इस्राएल के पुरुषों, इन बातों को सुनो: नासरत के यीशु, एक ऐसा मनुष्य जिसे परमेश्वर ने सामर्थ के कामों और चमत्कारों और चिन्हों के द्वारा तुम्हारे बीच में दिखाया, जैसा तुम आप ही जानते हो।" (प्रेरितों के काम 2:22)। और यीशु ने सच में कहा: "जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ, वे ही मेरे गवाह हैं" (यूहन्ना 10:25)। फसह की प्रथा -

victory and praise. This illustrates a great and important truth. God's ways are not our ways. This instance of God's inscrutable providence is in reality an illustration of His ways generally. Numerous instances of the same kind, in which God's commands and ways seem, to poor finite reason, absurd, are scattered over the pages of the word of God. I need only mention the blowing of trumpets round Jericho; Gideon's army reduced to 300 men, to face the host of the Midianites; the washing of Naaman the leper in Jordan; the blind man, whose eyes were anointed with clay, told to wash them in the pool of Siloam. Human reason is baffled before commands like these. And were it not for the sequel in all such instances, instead of standing in reverent awe and adoration before such infinite wisdom and power, we would have been offended by their apparent absurdity. But of what does the fact of God leading the people by a strange way through the Red Sea remind us, or what act in the progress from sin and condemnation to the liberty of the gospel is it intended to typify? The answer is baptism. "Our fathers," says Paul, "were all under the cloud, and all passed through the sea, and were all baptised into Moses in the cloud and in the sea;" and he adds, "Now these things were our examples" (figures of us, marg.). Here it is seen that the baptism of the Israelites into Moses as their deliverer, in the cloud and in the sea, was a type of baptism into Christ. To me the analogy, seems so complete that I do not see how anyone can doubt it. We have seen that the passover was a type of redemption through the precious blood of Christ, and the attitude of the people typified our faith in the Christ and our sincere repentance towards God, and that the people suffered themselves to be strangely led through the Red Sea. Now, if we take up our New Testament and examine the way of salvation as set forth by Christ and His inspired Apostles, we shall find that the passage of the Red Sea must be typical of baptism and nothing else. Our blessed Lord in giving the Apostles their Great Commission says: "Go ye, therefore, and make disciples of all nations, baptizing them (the disciples) into the name of the Father, and of the Son, and of the Holy Ghost," (Matt. 28:19.) Now just as the people of Israel committed themselves to Moses as his disciples or followers, and were formally baptized into him by following him through the Red Sea, and witnessed the complete overthrow and destruction of their old taskmasters; so the penitent believer in Jesus commits himself to Christ, as His faithful disciple, and follows Him through baptism, and then goes on his way rejoicing, like the Eunuch (Acts 8), because his sins and bonds are broken away and buried, to be remembered no more against him forever. This is God's strange way. Many think it meaningless, absurd, unnecessary. O let us take heed that we do not repeat the folly of the Israelites in their murmurings, or of Naaman in his short-sighted reasoning. Blessed is the man that believes God's way to be safe and right, just because it is His way; for in simply pursuing the path of duty, where reason fails to direct, he does but show

मेमने को मारा जाता है और अखमीरी रोटी और कड़वी जड़ी-बूटियों के साथ खाया जाता है, लोग अपनी कमर कसते हैं, अपने पैरों पर जूते रखते हैं और अपने हाथों में अपनी छड़ी रखते हैं; उनके द्वार के चौखट और खम्भे मेमने के लोह से छंटे हुए थे; विनाश के दूत का गुजरना: सभी कीमती नई वाचा की चीजों को स्पष्ट रूप से चित्रित करते हैं। "मसीह हमारा फसह हमारे लिए बलिदान किया गया है," और विश्वास के द्वारा हमने उसे स्वीकार किया, पश्चाताप की कड़वाहट के साथ, लेकिन आशा की खुशी के साथ, जब हम अपनी जंजीरों और शर्म से उठे, एक नया और समर्पित जीवन जीने का संकल्प लिया। विश्वास के द्वारा हमने अपने आप को उसके क्रूस के लहू के नीचे पनाह दी, और जिस क्रोध से हम बहुत डरते थे और जिसके योग्य थे, वह अनुग्रहपूर्वक दूर हो गया! मूसा परमेश्वर के अधीन लोगों की अगुवाई करता है। हम पढ़ते हैं: "फिर जब फिरौन ने उन लोगों को जाने दिया, कोई भी मानव सेनापति इसे मूर्खता की पराकाष्ठा मानता होगा। और हम जानते हैं कि जब लोगों ने अपने आगे समुद्र देखा, और उनके दोनों ओर अगम्य पहाड़, और पीछे फिरौन और उसकी सेना निडर हुई, तो वे क्या सोचते थे। परन्तु परमेश्वर ने आदि से अन्त को देखा। उन्होंने नहीं किया, और इससे सारा फर्क पड़ा। "फिर यहोवा ने मूसा से कहा, तू क्यों मेरी दोहाई देता है? इस्ताएलियोंसे कह, कि वे आगे बढ़ें; और अपक्की लाठी उठा, और अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाकर उसे दो भाग कर दे" (निर्ग. 14) : 15, 16। और मूसा ने वैसा ही किया; और मूसा के नेतृत्व में प्रजा के लोग स्थल ही पार हो गए; और उनके पीछे पीछे मिस्री बाढ़ में डूब गए, और लोग जयजयकार और स्तुति के ऊंचे स्वर से आकाश को चीरते गए। यह एक महान और महत्वपूर्ण सत्य को दर्शाता है। भगवान के तरीके हमारे तरीके नहीं हैं। परमेश्वर के गूढ़ विधान का यह उदाहरण वास्तव में आम तौर पर उनके तरीकों का एक उदाहरण है। एक ही तरह के अनगिनत उदाहरण, जिनमें परमेश्वर की आज्ञाएँ और तरीके, घटिया परिमित तर्क, बेतुके लगते हैं, परमेश्वर के वचन के पत्रों पर बिखरे हुए हैं। मुझे केवल यरीहो के चारों ओर तुरही फूँकने का उल्लेख करना है; मिद्यानियों की सेना का सामना करने के लिए गिदोन की सेना की संख्या घटाकर 300 कर दी गई; नामान कोढ़ी का यरदन में स्नान; उस अन्धे ने, जिसकी आंखों पर मिट्टी का लेप लगा हुआ था, आज्ञा दी, कि उन्हें शीलोह के कुण्ड में धो दे। इस तरह के आदेशों के सामने मानवीय तर्कशक्ति चकित रह जाती है। और यदि ऐसे सभी उदाहरणों की अगली कड़ी नहीं होती, तो ऐसे असीम ज्ञान और शक्ति के सामने श्रद्धा और श्रद्धा में खड़े होने के बजाय, हम उनकी स्पष्ट बेरुखी से आहत होते। लेकिन लाल समुद्र के माध्यम से एक अजीब तरीके से लोगों की अगुवाई करने वाले लोगों की सच्चाई हमें क्या याद दिलाती है, या पाप और निंदा से सुसमाचार की स्वतंत्रता की प्रगति में क्या कार्य इसका प्रतीक है? उत्तर है बपतिस्मा। "हमारे पूर्वज," पॉल कहते हैं, "सभी बादल के नीचे थे, और सभी समुद्र के माध्यम से पार हो गए, और सभी ने बादल में और समुद्र में मूसा का बपतिस्मा लिया;" और वह कहते हैं, "अब ये चीजें हमारे उदाहरण थे" (हमारे आंकड़े, मार्ग।) यहाँ यह देखा गया है कि बादल और समुद्र में उनके उद्धारकर्ता के रूप में इस्राएलियों का मूसा में बपतिस्मा, मसीह में एक प्रकार का बपतिस्मा था। मेरे लिए सादृश्य इतना पूर्ण

his faith in the unerring wisdom of God, instead of in his own foolish and short-sighted reason.

Let us follow this analogy a little further. The story of Israel's wanderings and God's dealings with them are many times referred to in the New Testament as illustrations or figures of the Christian life.

1. They had no settled dwelling place. They were constantly on the move, ever journeying, sometimes approaching very near to the land of promise and again receding from it, but having ever before them the hoped for rest in the land "flowing with milk and honey." Over and over again is this used in the New Testament to illustrate the Christian life. "For we have not here an abiding city, but we seek after the city which is to come" (Heb. 13:14)--We are "sojourners and pilgrims" and long for the "rest that remaineth"; when we shall be "forever with the Lord."

2. The wilderness was barren. Their daily supplies came from heaven. The smitten rock yields floods of waters that follow them in all their wanderings. Says Moses, "The Lord led thee through that great and terrible wilderness, wherein were fiery serpents and scorpions, and thirsty ground where was no water; who brought thee forth water out of the rock of flint; who led thee in the wilderness with manna, which thy father's knew not; that he might humble thee, and that he might prove thee, to do thee good at thy latter end" (Deut. 8:15-16). "And thou shalt remember all the way which the Lord thy God hath led thee these forty years in the wilderness, that he might humble thee, to prove thee, to know what was in thine heart, whether thou wouldst keep his commandments or no. And he humbled thee, and suffered thee to hunger, and fed thee with manna, which thou knewest not, neither did thy fathers know; that He might make thee to know that man doth not live by bread only, but by everything that proceedeth out of the mouth of the Lord doth man live. Thy raiment waxed not old upon thee, neither did thy foot swell these forty years" (Deut. 8:2-4). It is a joy to every true Christian to be able to apply to himself the precious things of the New Testament which are here symbolized. "That rock was Christ," says Paul (1 Cor. 10:4). And Jesus says, "I am the living bread which came down out of heaven, that a man may eat thereof and not die" (John 6:51). This world to the Christian is a barren desert, so far as his spiritual life is concerned, but he knows to his joy that "man doth not live by bread only."

3. The very murmurings, disobediences, and punishments of the Israelites in the wilderness are often used by New Testament writers as warnings and types for our profit. "The serpent in the wilderness" is a type of Christ "lifted up" upon the cross. The people murmured, and God sent fiery serpents which destroyed them, and when they cried to God for mercy, he ordered Moses to make a serpent of brass, as much like the fiery serpents as possible, and lift it

लगता है कि मुझे समझ नहीं आता कि कोई इस पर कैसे संदेह कर सकता है। हम देख चुके हैं कि फसल का पर्व मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा एक प्रकार का छुटकारा था, और लोगों की प्रवृत्ति ने मसीह में हमारे विश्वास और परमेश्वर के प्रति हमारे सच्चे पश्चाताप को प्ररूपित किया, और यह कि लोगों ने स्वयं को अजीब तरह से लाल समुद्र में ले जाने के लिए सहा। अब, यदि हम अपने नए नियम को लेते हैं और मसीह और उसके प्रेरित प्रेरितों द्वारा बताए गए उद्धार के मार्ग की जाँच करते हैं, तो हम पाएंगे कि लाल समुद्र का मार्ग बपतिस्मा का विशिष्ट होना चाहिए और कुछ नहीं। प्रेरितों को उनके महान आदेश देने में हमारे धन्य प्रभु कहते हैं: "इसलिए जाओ, और सभी राष्ट्रों के शिष्य बनाओ, उन्हें (शिष्यों को) पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो," (मत्ती 28:19) अब जैसे इस्राएल के लोगों ने अपने आप को मूसा के चेलों या अनुयायियों के रूप में समर्पित किया, और लाल समुद्र के माध्यम से उसके पीछे चलने के द्वारा औपचारिक रूप से उसका बपतिस्मा लिया, और अपने पुराने कार्यपालकों को पूरी तरह से उखाड़ फेंकते और नष्ट होते देखा; इसलिए यीशु में पश्चाताप करने वाला विश्वासी अपने विश्वासयोग्य शिष्य के रूप में खुद को मसीह के लिए समर्पित करता है, और बपतिस्मा के माध्यम से उसका अनुसरण करता है, और फिर हिजड़े की तरह आनन्दित होकर अपने रास्ते पर चला जाता है (प्रेरितों के काम 8), क्योंकि उसके पाप और बंधन टूट गए हैं और दफन हो गए हैं, उसके विरुद्ध सदा स्मरण न रहे। यह भगवान का अजीब तरीका है। कई लोग इसे अर्थहीन, बेतुका, अनावश्यक समझते हैं। आइए हम सावधान रहें कि हम इस्राएलियों की मूर्खता को उनके कुड़कुड़ाने में, या नामान की अदूरदर्शी तर्क-वितर्क में न दोहराएं। धन्य है वह मनुष्य जो परमेश्वर के मार्ग को सुरक्षित और सही मानता है, सिर्फ इसलिए कि यह उसका मार्ग है; केवल कर्तव्य के मार्ग का अनुसरण करने के लिए, जहां कारण निर्देशित करने में विफल रहता है, वह केवल अपने स्वयं के मूर्ख और अदूरदर्शी कारण के बजाय, ईश्वर के अचूक ज्ञान में अपना विश्वास दिखाता है। इसलिए यीशु में पश्चाताप करने वाला विश्वासी अपने विश्वासयोग्य शिष्य के रूप में खुद को मसीह के लिए समर्पित करता है, और बपतिस्मा के माध्यम से उसका अनुसरण करता है, और फिर हिजड़े की तरह आनन्दित होकर अपने रास्ते पर चला जाता है (प्रेरितों के काम 8), क्योंकि उसके पाप और बंधन टूट गए हैं और दफन हो गए हैं, उसके विरुद्ध सदा स्मरण न रहे। यह भगवान का अजीब तरीका है। कई लोग इसे अर्थहीन, बेतुका, अनावश्यक समझते हैं। आइए हम सावधान रहें कि हम इस्राएलियों की मूर्खता को उनके कुड़कुड़ाने में, या नामान की अदूरदर्शी तर्क-वितर्क में न दोहराएं। धन्य है वह मनुष्य जो परमेश्वर के मार्ग को सुरक्षित और सही मानता है, सिर्फ इसलिए कि यह उसका मार्ग है; केवल कर्तव्य के मार्ग का अनुसरण करने के लिए, जहां कारण निर्देशित करने में विफल रहता है, वह केवल अपने स्वयं के मूर्ख और अदूरदर्शी कारण के बजाय, ईश्वर के अचूक ज्ञान में अपना विश्वास दिखाता है। इसलिए यीशु में पश्चाताप करने वाला विश्वासी अपने विश्वासयोग्य शिष्य के रूप में खुद को मसीह के लिए समर्पित करता है, और बपतिस्मा के माध्यम से उसका अनुसरण करता है, और फिर हिजड़े की तरह आनन्दित

upon a pole, that whosoever looked upon it might be healed. Jesus uses this as a type of himself. The type is indeed a very striking one, but how strange for Jesus to compare himself to a serpent! But no, it was not a serpent, but the likeness of a serpent. How true then is the symbol, Jesus was made "in the likeness of sinful flesh," that "as an offering for sin he might condemn sin in the flesh." The Apostle Paul says: "These things were our examples to the intent that we should not lust after evil things, as they also lusted. Neither be ye idolaters as were some of them . . . neither let us tempt Christ as some of them also tempted and were destroyed of the destroyer. Now all these things happened unto them for examples, and they are written for our admonition upon whom the ends of the world (age) are come. Wherefore let him that thinketh he standeth take heed lest he fall" (1 Cor: 10). Again in Heb. 3:12-19: "With whom was he grieved forty years? Was it not with them that had sinned, whose carcasses fell in the wilderness? And to whom swear he that they should not enter into His rest but to those who were disobedient, and we see that they were not able to enter in because of their unbelief." Also 4:1, 2: "Let us fear therefore, lest haply a promise being left of entering into His rest any one of you should seem (be manifested) to have come short of it."

From the foregoing it will not be doubted that the history of the Children of Israel was intended to be typical of "heavenly things," i.e., the spiritual realities of the New Covenant. Before closing this chapter, we may briefly consider one or two lessons that we have learned to our profit. 1st. We see that the Christian is amenable to law, as were the Jews. The difference is that while the law of Moses "killed," the law of the Spirit gives life. This is the more reason why the latter should be joyfully and scrupulously obeyed. Christ is our Lord and Leader, as Moses was to Israel, and it is ours to follow our Divine Leader as Israel were bound to follow theirs. To those who thus obey, His service is perfect freedom. 2nd. Our responsibilities are measured by our advantages. Where much is given, much is required. If, therefore, under Moses, the people were punished for disobedience, "of how much sorer punishment shall we be worthy if we turn away from Him that speaketh from heaven." 3rd. The inducements to follow Moses were great, but how much greater are the inducements to follow Jesus. Moses was truly a noble example of self-sacrifice for his people--a wise leader, a faithful friend; but how much deeper is the love of Christ; what friends can compare with Him! Moses could not save the people from their sins--could not guide them to life eternal. But Jesus is "the way, the truth and the life," and all men may come to the Father through Him.

SHADOW AND SUBSTANCE

IN the foregoing introduction, we have seen that the history of the Israelites from Egypt to Canaan was designed to be

होकर अपने रास्ते पर चला जाता है (प्रेरितों के काम 8), क्योंकि उसके पाप और बंधन टूट गए हैं और दफन हो गए हैं, उसके विरुद्ध सदा स्मरण न रहे। यह भगवान का अजीब तरीका है। कई लोग इसे अर्थहीन, बेतुका, अनावश्यक समझते हैं। आइए हम सावधान रहें कि हम इस्राएलियों की मूर्खता को उनके कुड़कुड़ाने में, या नामान की अदूरदर्शी तर्क-वितर्क में न दोहराएं। धन्य है वह मनुष्य जो परमेश्वर के मार्ग को सुरक्षित और सही मानता है, सिर्फ इसलिए कि यह उसका मार्ग है; केवल कर्तव्य के मार्ग का अनुसरण करने के लिए, जहां कारण निर्देशित करने में विफल रहता है, वह केवल अपने स्वयं के मूर्ख और अदूरदर्शी कारण के बजाय, ईश्वर के अचूक ज्ञान में अपना विश्वास दिखाता है। और बपतिस्मा के द्वारा उसके पीछे हो लेता है, और फिर खोजे के समान आनन्दित होकर अपने मार्ग पर चला जाता है (प्रेरितों के काम 8), क्योंकि उसके पाप और बन्धन टूट गए और गाड़ दिए गए, ताकि उसके विरुद्ध फिर कभी स्मरण न किया जाए। यह भगवान का अजीब तरीका है। कई लोग इसे अर्थहीन, बेतुका, अनावश्यक समझते हैं। आइए हम सावधान रहें कि हम इस्राएलियों की मूर्खता को उनके कुड़कुड़ाने में, या नामान की अदूरदर्शी तर्क-वितर्क में न दोहराएं। धन्य है वह मनुष्य जो परमेश्वर के मार्ग को सुरक्षित और सही मानता है, सिर्फ इसलिए कि यह उसका मार्ग है; केवल कर्तव्य के मार्ग का अनुसरण करने के लिए, जहां कारण निर्देशित करने में विफल रहता है, वह केवल अपने स्वयं के मूर्ख और अदूरदर्शी कारण के बजाय, ईश्वर के अचूक ज्ञान में अपना विश्वास दिखाता है। और बपतिस्मा के द्वारा उसके पीछे हो लेता है, और फिर खोजे के समान आनन्दित होकर अपने मार्ग पर चला जाता है (प्रेरितों के काम 8), क्योंकि उसके पाप और बन्धन टूट गए और गाड़ दिए गए, ताकि उसके विरुद्ध फिर कभी स्मरण न किया जाए। यह भगवान का अजीब तरीका है। कई लोग इसे अर्थहीन, बेतुका, अनावश्यक समझते हैं। आइए हम सावधान रहें कि हम इस्राएलियों की मूर्खता को उनके कुड़कुड़ाने में, या नामान की अदूरदर्शी तर्क-वितर्क में न दोहराएं। धन्य है वह मनुष्य जो परमेश्वर के मार्ग को सुरक्षित और सही मानता है, सिर्फ इसलिए कि यह उसका मार्ग है; केवल कर्तव्य के मार्ग का अनुसरण करने के लिए, जहां कारण निर्देशित करने में विफल रहता है, वह केवल अपने स्वयं के मूर्ख और अदूरदर्शी कारण के बजाय, ईश्वर के अचूक ज्ञान में अपना विश्वास दिखाता है। कि उसके विरुद्ध फिर कभी स्मरण न किया जाए। यह भगवान का अजीब तरीका है। कई लोग इसे अर्थहीन, बेतुका, अनावश्यक समझते हैं। आइए हम सावधान रहें कि हम इस्राएलियों की मूर्खता को उनके कुड़कुड़ाने में, या नामान की

typical of the Christian life from the time of our deliverance from the bondage of sin and Satan to our entrance into the rest that remaineth to the people of God. We have drawn but an outline; but much more might be said of their temptations, trials, wars, victories, &c., but we have not space, and moreover, it is better to be suggestive rather than exhaustive, that the devout reader may have room for further research and comparison.

I will now proceed to show that the tabernacle in the wilderness was designed to be a type of the Christian system. We are indebted almost entirely to the epistle to the Hebrews for confirmation of this truth. Heb. 10:1: "For the law having a shadow of good things to come, and not the very image of the things," etc. It is evident by the context that "the law" here relates to that part of the law of Moses which concerned the tabernacle and its connections, or what is called "the ceremonial law." This law contained a "shadow of good things to come." These "good things" are the blessings of the gospel of Christ, as the chapter shows very conclusively. The shadow is explained to be "not the very image of the (good) things." A shadow never is the exact image of its substance, but is usually sufficient to indicate it. Sometimes the identification of the shadow and its substance is difficult--perhaps impossible--till the substance appear. But then, their relation to each other is easily established. If we see a shadow of a tree cast by the sun or moon, though the tree is out of sight, we say with absolute certainty that the shadow is that of a tree; but we cannot always be so sure till the object be compared with its shadow. Now this is the principle of interpretation we must follow. The substance in the New Testament must explain the shadow in the Old Testament. Fancy has had unlimited play, and confusion has resulted in the treatment of this subject through the neglect of this principle. By following this principle, we hope to be able to explain the figurative teaching of the tabernacle and its connections consistently and beautifully. We will not assume the truth of our main position, but prove it. That the tabernacle with its services was intended to be typical the following scriptures will be sufficient to show: "Now these things (the tabernacle and its furniture) having been thus prepared the priests go in continually into the first tabernacle accomplishing the services; but into the second the high priest alone, once in the year, not without blood, which he offered for himself and for the errors of the people; the HOLY GHOST THIS SIGNIFYING that the way into the holy place hath not yet been made manifest, while as the FIRST tabernacle is still standing, which is a parable for the time now present . . . but Christ having come a high priest of the good things to come, through the GREATER AND MORE PERFECT TABERNACLE, not made with hands," etc. (Heb. 9:6-11). "It was necessary therefore that the copies of the things in the heavens should be cleansed with these (the blood of bulls, etc.), but the heavenly things themselves with better sacrifices than these. For Christ

अदूरदर्शी तर्क-वितर्क में न दोहराए। धन्य है वह मनुष्य जो परमेश्वर के मार्ग को सुरक्षित और सही मानता है, सिर्फ इसलिए कि यह उसका मार्ग है; केवल कर्तव्य के मार्ग का अनुसरण करने के लिए, जहां कारण निर्देशित करने में विफल रहता है, वह केवल अपने स्वयं के मूर्ख और अदूरदर्शी कारण के बजाय, ईश्वर के अचूक ज्ञान में अपना विश्वास दिखाता है। सिर्फ इसलिए कि यह उसका तरीका है; केवल कर्तव्य के मार्ग का अनुसरण करने के लिए, जहां कारण निर्देशित करने में विफल रहता है, वह केवल अपने स्वयं के मूर्ख और अदूरदर्शी कारण के बजाय, ईश्वर के अचूक ज्ञान में अपना विश्वास दिखाता है। सिर्फ इसलिए कि यह उसका तरीका है; केवल कर्तव्य के मार्ग का अनुसरण करने के लिए, जहां कारण निर्देशित करने में विफल रहता है, वह केवल अपने स्वयं के मूर्ख और अदूरदर्शी कारण के बजाय, ईश्वर के अचूक ज्ञान में अपना विश्वास दिखाता है।

आइए हम इस सादृश्य का थोड़ा और अनुसरण करें। नए नियम में इस्राएल के भटकने और उनके साथ परमेश्वर के व्यवहार की कहानी को कई बार ईसाई जीवन के चित्रण या आंकड़ों के रूप में संदर्भित किया गया है।

1. उनका कोई स्थायी निवास स्थान नहीं था। वे लगातार आगे बढ़ रहे थे, कभी यात्रा कर रहे थे, कभी-कभी वादे की भूमि के बहुत निकट आ रहे थे और फिर से इससे दूर जा रहे थे, लेकिन उनके सामने हमेशा "दूध और शहद के साथ बहने वाली भूमि" में आराम की उम्मीद थी। बार-बार इसका उपयोग नए नियम में ईसाई जीवन को चित्रित करने के लिए किया जाता है। "क्योंकि यहां हमारा कोई स्थायी नगर नहीं, परन्तु हम उस नगर की खोज में हैं, जो आनेवाला है" (इब्र. 13:14)--हम "परदेशी और तीर्थयात्री" हैं और "शेष विश्राम" की लालसा करते हैं; जब हम "हमेशा के लिए प्रभु के साथ" रहेंगे।

2. जंगल बंजर था। उनकी दैनिक आपूर्ति स्वर्ग से आती थी। मारी गई चट्टान पानी की बाढ़ पैदा करती है जो उनके सभी भटकने में उनका पीछा करती है। मूसा कहता है, "यहोवा तुझे उस बड़े और भयानक जंगल में से ले चला, जहां तेज विषवाले सांप और बिच्छू थे, और प्यासी भूमि जहां जल नहीं था, और चकमक पत्थर की चट्टान से तेरे लिये जल निकाला, और मन्ना से तुझे जंगल में चलाया। जिसे तेरा पिता नहीं जानता था, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके अन्त में तेरा भला करे" (व्यव. 8:15-16)। "और स्मरण रखना कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी पक्कीझा करे, और जाने कि तेरे मन में क्या है, कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा वा नहीं।" और उसने तुझे दीन किया, और तुझे भूखा होने दिया, और तुझे मन्ना खिलाया, जिसे न तो तू और न तेरे पुरखा ही जानते थे; जिस से वह तुझे जान ले कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो कुछ यहोवा के मुंह से निकलता है उसी से वह जीवित रहता है। इन चालीस वर्षों में तेरे वस्त्र पुराने न हुए, और न तेरे पांव में सूजन हुई" (व्यव. 8:2-4)। प्रत्येक सच्चे मसीही के लिए यह एक आनन्द की बात है कि वह

flesh becomes circumcision of the heart. Sometimes the comparisons become contrasts. "Not the children of the flesh," but Israel, according to the faith, are Abraham's seed, and heirs according to the promise. We come not to Sinai with its awful terrors, but to Zion, the city of the living God. Not Jerusalem in Palestine is our glorious home, but Jerusalem above "the mother of us all."

The more this comparison is worked out the more clearly does it appear that the same divine authorship is stamped upon both Old and New Testaments; and the more we become impressed with the wonderful wisdom of God in using things so simple to shadow forth the stupendous things of Redemption. The Bible is seen to be a unit. Like the tabernacle it has its holy and most holy place--the Old and New Testaments; and it is only needful to rend the veil to see that both are one. Both are the work of one Holy Spirit. Both are the product of holy men of God, who wrote as they were moved by the Holy Spirit. There is no confusion, but a gradual development of divine truth unto perfection. Nature and revelation agree. The same laws of progress and development govern both. The bulb of the tulip contains the beautiful flower within its mysterious folds. But for experience, it were impossible to guess what that bulb would become by planting it in the earth; but when perfectly developed we see clearly that a wonderful and beautiful plan has been worked out, the end being the sweet flower that crowns the stem. So with Revelation. Paul puts it thus: "Unto me who am less than the least of all saints was this grace given, to preach unto the Gentiles the unsearchable riches of Christ, and to make all men see what is the dispensation of the mystery, which from all ages have been hid in God, who created all things, to the intent that now unto the principalities and the powers in the heavenly places might be made known THROUGH THE CHURCH the manifold wisdom of God, according to the eternal purpose (purpose of the ages), which he purposed in Christ Jesus our Lord " (Ep. 3:8-11). "O the depth of the riches, both of the wisdom and the knowledge of God! how unsearchable are his judgements and his ways past tracing out! For who hath known the mind of the Lord? or who hath been his counsellor? or who hath first given to Him, and it shall be recompensed to Him again? For of Him, and through Him, and to Him are all things, to whom be glory forever. AMEN."

Chapter II

MOSES-CHRIST

WE have already seen in a general way that Moses was a type of Christ. Let us examine further into this truth. In no respect does Moses appear as a type of Christ more

(1 कुरिं। 10: 4)। और यीशु कहते हैं, "मैं जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी है, ताकि एक आदमी उसे खाए और न मरे" (1 कुरिं। 10: 4)। यूहन्ना 6:51) जहां तक उसके आध्यात्मिक जीवन का संबंध है, ईसाईयों के लिए यह दुनिया एक बंजर रेगिस्तान है, लेकिन वह अपने आनंद से जानता है कि "मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीता।" 10:4)। और यीशु कहते हैं, "मैं जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी है, कि मनुष्य उस में से खाए और न मरे" (यूहन्ना 6:51)। जहां तक उनके आध्यात्मिक जीवन का संबंध है, ईसाईयों के लिए यह दुनिया एक बंजर रेगिस्तान है, लेकिन वह अपने आनंद से जानते हैं कि "मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीता।" 10:4)। और यीशु कहते हैं, "मैं जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी है, कि मनुष्य उस में से खाए और न मरे" (यूहन्ना 6:51)। जहां तक उनके आध्यात्मिक जीवन का संबंध है, ईसाईयों के लिए यह दुनिया एक बंजर रेगिस्तान है, लेकिन वह अपने आनंद से जानते हैं कि "मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीता।"

3. जंगल में इस्राएलियों के कुड़कुड़ाने, अनाज्ञाकारिता, और दंड को अक्सर नए नियम के लेखकों द्वारा हमारे लाभ के लिए चेतावनी और प्रतीक के रूप में उपयोग किया जाता है। "जंगल में सर्प" एक प्रकार का मसीह है जो क्रूस पर "उठा लिया" गया है। लोग कुड़कुड़ाए, और परमेश्वर ने तेज विष वाले सांप भेजे, जिन्होंने उन्हें नष्ट कर दिया, और जब उन्होंने दया के लिए परमेश्वर को पुकारा, तो उसने मूसा को आदेश दिया कि जितना हो सके तेज सर्पों के समान पीतल का एक सर्प बनाए, और उसे खम्भे पर चढ़ाए, कि जो कोई देखा तो ठीक हो सकता है। यीशु इसे स्वयं के एक प्रतीक के रूप में उपयोग करते हैं। टाइप वास्तव में एक बहुत ही आकर्षक है, लेकिन यीशु के लिए खुद की तुलना एक सर्प से करना कितना अजीब है! लेकिन नहीं, वह सांप नहीं था, बल्कि सांप की समानता थी। तो यह प्रतीक कितना सच है, यीशु को "पापमय शरीर की समानता में" बनाया गया था, कि " पाप के बलिदान के रूप में वह शरीर में पाप को दोषी ठहरा सकता है।" प्रेरित पौलुस कहता है: "ये बातें इस बात के लिये हमारे दृष्टान्त थीं, कि जैसा उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें। न तो तुम मूर्तिपूजक बनो, जैसा कि उनमें से कुछ थे। . . और न हम मसीह की परीक्षा करें, जैसा उन में से कितनों ने भी किया, और नाश करने वाले के द्वारा नाश किए गए। अब ये सब बातें जो उन पर घटीं, दृष्टान्त के लिथे और वे हमारी चिंतावनी के लिथे लिखी गई हैं जिन पर जगत के अन्त का समय आ पहुंचा है। इसलिये जो समझता है, कि मैं स्थिर हूँ, वह चौकस रहे, कि गिर न पड़े" (1 कुरिं:10)। फिर से इब्रानियों 3:12-19 में: "वह चालीस वर्ष तक किसके साथ शोकित रहा? क्या उन्हीं से नहीं जिन ने पाप किया, और जिनकी लोथें जंगल में पड़ी रहीं? और जिनके लिये वह शपथ खाता है, कि वे उसके विश्राम में प्रवेश न करने पाएंगे, केवल उन्हीं के लिथे जो आज्ञा न मानते थे,

पूर्वगामी से यह संदेह नहीं किया जा सकता है कि इज़राइल के बच्चों का इतिहास "स्वर्गीय चीजों" के विशिष्ट होने का इरादा था, यानी नई वाचा की आध्यात्मिक वास्तविकताएं। इस अध्याय को समाप्त करने से पहले, हम एक या दो पाठों पर संक्षेप में विचार

strikingly than as the law-giver of Israel. When he descended from the holy mount his face shone with heavenly glory, and because the people could not bear the light, he put a veil over his face. This reminds us of Him who "came out from God" and "down from heaven" to reveal the will of God to man. In doing so He laid aside the glory which He had with the Father before the world began, and veiled His divine nature in human flesh. The apostle presents this wonderful event by way of contrast. It is impossible to use language more expressive and sublime. "Ye are not come unto the mount that might be touched and that burned with fire, and unto blackness, and darkness, and tempest, and the sound of a trumpet, and the voice of words; which voice they that heard entreated that no word more should be spoken unto them, for they could not endure that which was enjoined. If even a beast touched the mount it shall be stoned; and so fearful was the appearance that Moses said, I exceedingly fear and quake. But ye are come unto Mount Zion, unto the city of the living God, the heavenly Jerusalem, and to innumerable hosts of angels, and to the general assembly and church of the first-born, who are enrolled in heaven, and to God the judge of all, and to the spirits of just men made perfect, and to Jesus the mediator of the new covenant, and to the blood of sprinkling that speaketh better things than that of Abel" (Heb. 12:18-24).

The above contrast receives its finishing touch in the facts which followed the giving of the law both of the old and new covenants. During Moses' absence in the mount the people gave themselves to idolatry. For this sin three thousand of the rebels perished by the swords of their own brethren. But when the law of the gospel was first proclaimed from Mount Zion three thousand souls were saved (Acts 2). This is a solemn illustration of the truth. "The letter (law of Moses) killeth, but the spirit (by the gospel) giveth life" (2 Cor. 3:6).

But Moses not only received the law of the ten commandments when in the holy mount. He had committed to his trust also a perfect model, or "pattern" of the tabernacle. Now it is important just here to emphasize the truth that Moses stood related to the tabernacle just as Jesus Christ is related to His Church. In Heb. 3:1-6 we read: "Wherefore, holy brethren, partakers of a heavenly calling, consider the Apostle and High Priest of our confession, even Jesus, who was faithful to Him that appointed Him, as also Moses was faithful in all His (God's) House. For He hath been counted worthy of more glory than Moses, by so much as he that built the house hath more honor than the house, for every house is built by someone, but He that built all things is God. And Moses, indeed, was faithful in all His (God's) house as a servant for a testimony of those things, which were afterwards to be spoken. But Christ as a Son over His (own) house, whose house are WE." In this passage the APOSTLESHIP of Christ is in view. Moses

कर सकते हैं जिन्हें हमने अपने लाभ के लिए सीखा है। पहला। हम देखते हैं कि ईसाई कानून के अधीन हैं, जैसा कि यहूदी थे। अंतर यह है कि जबकि मूसा की व्यवस्था "मार दी गई," आत्मा की व्यवस्था जीवन देती है। यह अधिक कारण है कि बाद वाले को खुशी से और ईमानदारी से पालन करना चाहिए। मसीह हमारा प्रभु और अगुवा है, जैसा कि मूसा इस्राएल के लिए था, और यह हमारा है कि हम अपने दिव्य अगुवे का अनुसरण करें क्योंकि इस्राएल उनका अनुसरण करने के लिए बाध्य था। जो इस प्रकार आज्ञापालन करते हैं, उनके लिए उनकी सेवा पूर्ण स्वतंत्रता है। दूसरा। हमारी जिम्मेदारियों को हमारे फायदों से मापा जाता है। जहां ज्यादा दिया जाता है, वहां ज्यादा की जरूरत होती है। यदि, इसलिए, मूसा के तहत, लोगों को अवज्ञा के लिए दंडित किया गया था, "हम कितने अधिक गंभीर दंड के योग्य होंगे यदि हम उससे दूर हो जाते हैं जो स्वर्ग से बोलता है।" तीसरा। मूसा का अनुसरण करने के प्रलोभन महान थे, लेकिन यीशु के पीछे चलने के प्रलोभन कितने अधिक हैं। मूसा वास्तव में अपने लोगों के लिए आत्म-बलिदान का एक महान उदाहरण था - एक बुद्धिमान नेता, एक वफादार मित्र; लेकिन मसीह का प्रेम कितना गहरा है; क्या दोस्त उसके साथ तुलना कर सकते हैं! मूसा लोगों को उनके पापों से नहीं बचा सका--अनन्त जीवन के लिए उनका मार्गदर्शन नहीं कर सका। परन्तु यीशु "मार्ग, सत्य और जीवन" है, और सभी मनुष्य उसके द्वारा पिता के पास आ सकते हैं। मूसा का अनुसरण करने के प्रलोभन महान थे, लेकिन यीशु के पीछे चलने के प्रलोभन कितने अधिक हैं। मूसा वास्तव में अपने लोगों के लिए आत्म-बलिदान का एक महान उदाहरण था - एक बुद्धिमान नेता, एक वफादार मित्र; लेकिन मसीह का प्रेम कितना गहरा है; क्या दोस्त उसके साथ तुलना कर सकते हैं! मूसा लोगों को उनके पापों से नहीं बचा सका--अनन्त जीवन के लिए उनका मार्गदर्शन नहीं कर सका। परन्तु यीशु "मार्ग, सत्य और जीवन" है, और सभी मनुष्य उसके द्वारा पिता के पास आ सकते हैं।

छाया और पदार्थ

पूर्वगामी परिचय में, हमने देखा है कि मिस्र से कनान तक के इस्राएलियों के इतिहास को पाप और शैतान के बंधन से हमारे छुटकारे के समय से लेकर शेष में हमारे प्रवेश द्वार तक ईसाई जीवन के विशिष्ट होने के लिए डिज़ाइन किया गया था। अल्लाह के बंदे। हमने केवल एक रूपरेखा तैयार की है; लेकिन उनके प्रलोभनों, परीक्षाओं, युद्धों, जीतों आदि के बारे में और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन हमारे पास जगह नहीं है, और इसके अलावा, संपूर्ण होने के बजाय विचारीतेजक होना बेहतर है,

was a type of Christ as an Apostle, or one sent on a divine mission. Aaron was a type of His (Christ's) priesthood, which is brought into view later on in the epistle. The mission of Moses was to build God's house. The details of the work were all minutely stated, and Moses was not at liberty to depart from the specifications he had received in the smallest particular. "See, saith He, that thou make all things according to the pattern which was showed thee in the holy mount." Moses "was faithful." He carried out the will of God in all things. God had a great purpose in view in the erection of the tabernacle, and the slightest deviation would have marred that purpose. We do not know that Moses understood that purpose, but we do know that he was anxiously careful in seeing that the building was faithful to the "pattern." "According to all that the Lord commanded Moses, so the children of Israel made all the work. And Moses did look upon all the work, and behold they had done it, as the Lord commanded, even so had they done it; and Moses blessed them."

Now in this great mission MOSES IS A TYPE OF JESUS. As the "Apostle" of God the Lord Jesus "came down from heaven not to do Mine own will," says he, "but the will of Him that sent Me." And again: "My teaching is not Mine, but His that sent Me . . . he that speaketh from himself seeketh his own glory; but he that seeketh the glory of him that sent him, the same is true and no unrighteousness is in him. Did not Moses give you the law . . . the law of Moses may not be broken" (John 8:16-23). Again, He says: "When ye have lifted up the Son of Man then shall ye know that I am He, and that I do nothing of Myself, but as the Father taught Me, I speak these things. And He that sent Me is with Me, He hath not left Me alone, for I do always those things that are pleasing to Him" (John 8:26-29). The mission of Jesus was "to seek and to save the lost"--to deliver men from the power of darkness, and restore to holiness and to God. This great work was completed in two parts: first in laying the foundation of the spiritual house of God; and second, in building the edifice. The first part of this grand work was accomplished in the ministry of Christ on earth, and terminated in his resurrection and ascension into heaven. The second part was commenced on the day of Pentecost, and completed by the apostles. But the entire work of constructing the "true tabernacle" was committed to Jesus. He is the author and perfecter of the faith." "All authority in heaven and earth" is His. Luke speaks of all that Jesus did on earth as but the beginning of His great work (Acts 1:1). And our Lord said: "On this rock will I build My Church, and the gates of hades shall not prevail against it" (Matt. 16:18).

Thus, the great antitype of Moses as a divine law-giver and master-builder is before us. He who made the worlds, and "by whom

ताकि भक्त पाठक के पास आगे के शोध और तुलना के लिए जगह हो सके .

अब मैं यह दिखाने के लिए आगे बढ़ूंगा कि जंगल में निवासस्थान को एक प्रकार की ईसाई प्रणाली के रूप में डिजाइन किया गया था। इस सत्य की पुष्टि के लिए हम लगभग पूरी तरह से इब्रानियों की पत्री के ऋणी हैं। हेब। 10:1: "कानून के लिए आने वाली अच्छी चीजों की छाया है, न कि चीजों की छवि," आदि। जो मिलापवाले तम्बू और उसके संयोजनों से संबंधित है, या जिसे "औपचारिक नियम" कहा जाता है। इस कानून में "आने वाली अच्छी चीजों की छाया" थी। ये "अच्छी बातें" मसीह के सुसमाचार की आशीर्षें हैं, जैसा कि अध्याय बहुत निर्णायक रूप से दिखाता है। छाया को "(अच्छी) चीजों की छवि नहीं" कहा गया है। एक छाया कभी भी अपने पदार्थ की सटीक छवि नहीं होती, लेकिन आमतौर पर इसे इंगित करने के लिए पर्याप्त होता है। कभी-कभी छाया और उसके पदार्थ की पहचान मुश्किल होती है - शायद असंभव - जब तक कि पदार्थ प्रकट न हो जाए। लेकिन फिर, उनका एक-दूसरे से संबंध आसानी से स्थापित हो जाता है। यदि हमें सूर्य या चंद्रमा द्वारा डाली गई किसी वृक्ष की छाया दिखाई देती है, भले ही वृक्ष दृष्टि से ओझल हो, तो हम पूर्ण निश्चितता के साथ कहते हैं कि छाया वृक्ष की है; लेकिन जब तक वस्तु की तुलना उसकी छाया से नहीं की जाती तब तक हम हमेशा इतने निश्चित नहीं हो सकते। अब यह व्याख्या का सिद्धांत है जिसका हमें पालन करना चाहिए। नए नियम के पदार्थ को पुराने नियम की छाया की व्याख्या करनी चाहिए। फैंसी का असीमित खेल है, और इस सिद्धांत की उपेक्षा के माध्यम से इस विषय के उपचार में भ्रम पैदा हुआ है। इस सिद्धांत का पालन करके, हम आशा करते हैं कि हम मिलापवाले तम्बू की लाक्षणिक शिक्षा और इसके संबंधों को लगातार और खूबसूरती से समझाने में सक्षम होंगे। हम अपनी मुख्य स्थिति की सच्चाई को नहीं मानेंगे, बल्कि इसे साबित करेंगे। यह कि तम्बू अपनी सेवाओं के साथ विशिष्ट होने का इरादा था, निम्नलिखित शास्त्रों को दिखाने के लिए पर्याप्त होगा: "अब ये चीजें (निवास और उसके सामान) इस प्रकार तैयार की गई हैं, याजक पहले तम्बू में सेवाओं को पूरा करने के लिए लगातार जाते हैं; लेकिन अंदर दूसरा महायाजक अकेला, वर्ष में एक बार बिना लोहू के नहीं, जिसे वह अपने लिथे और लोगोंके अधर्म के लिथे चढ़ाया करता था; पहला तम्बू अब भी खड़ा है, जो इस समय के लिथे दृष्टान्त है... परन्तु मसीह आनेवाली अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, उस बड़े और सिद्ध तम्बू के द्वारा, जो हाथ से बना हुआ नहीं है," आदि। (इब्रानियों 9:6-11)। स्वर्ग में की वस्तुएँ इन्हीं से (बैल आदि के लहू से) शुद्ध की जाएँगी, परन्तु स्वर्गीय वस्तुएँ आप ही इन से उत्तम बलिदानों के द्वारा शुद्ध की जाएँगी। क्योंकि मसीह ने हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं किया, जैसे सत्य के नमूने पर, परन्तु स्वयं स्वर्ग में, आदि। (इब्रानियों 9:23-25)। यीशु के लहू के द्वारा, उस मार्ग से जो उसने हमारे लिए समर्पित किया, एक नया और जीवित मार्ग, परदे के माध्यम से, कहने का अर्थ है, उसका मांस; और परमेश्वर के भवन का महायाजक होने के नाते, आओ हम सच्चे मन से, और पूरे विश्वास से उसके निकट आएँ, वे स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि पहला तम्बू एक दूसरे का एक प्रकार था जो कि

all things were created," is also the builder of a still greater edifice--the house of God. In the building up of the material universe, from the mightiest world to the minutest insect, perfect order obtains. The same is true of the Mosaic system, and the same is also true of the Christian system. God is a God of order. There is a "law of the spirit of life," as there is "the law of sin and death." God's "pattern" of the tabernacle in the wilderness was perfect. No man dare add to or take from it, on pain of death. Is God less jealous of His will regarding the "true" tabernacle, of which the first was but the shadow? Disregard of this most important matter has resulted in innumerable divisions and sects among those who professed to be the faithful servants of Jesus Christ. They have acted as if every man were a "law unto himself," and as though God had declared that every man might do that which is right in His own eyes. But it is not so. The new covenant is a Revelation from God, and its terms are to be obeyed. The kingdom of heaven is among us, and the laws of citizenship must be submitted to. The Church of Christ is on earth, and its ordinances must not be tampered with. These things are before us in the New Testament, and they manifest the wisdom and glory of God. The system is divinely beautiful and complete; and adapted to man all the world over and for all time. Let us then bear in mind that infringement of divine law always brings a curse.

Chapter III

INSPIRED WORKMEN

LET us now move a step forward and consider another important point of resemblance between the tabernacle of Moses and "the true tabernacle which the Lord pitched and not man." In the construction of both houses inspired workmen were employed. God said to Moses: "See, I have called by name Bezelel the son of Uri, the son of Hur, of the tribe of Judah; and I have filled him with the spirit of God in wisdom and understanding, and in knowledge and in all manner of workmanship; to devise cunning works, to work in gold, and in silver, and in brass, and in cuttings of stones for settings, and carving in wood, to work in all manner of workmanship. And I, behold I have appointed with him Aholiab the son of Ahisamack of the tribe of Dan, and in the hearts of all that are wise-hearted I have put wisdom, that they may make all things that I have commanded thee" (Ex. 31:1-6). Here we see that a number of men were chosen of God and filled with His Holy Spirit, by whose power they were specially skilled and fully qualified to work out the divine ideal of the tabernacle in its every particular. Their gifts were manifold and varied according to the different requirements of their work. It does not appear that they had received any previous training in the various arts, or that they were naturally qualified, but the inference is in the opposite direction. They had been slaves in Egypt. Their condition had been by no means that

सांसारिक तम्बू एक स्वर्गीय का प्रतीक था; कि हाथों से बनाई गई झांकी "बिना हाथों के" आने वाली झांकी की आलंकारिक थी, "जिसे भगवान ने खड़ा किया था और मनुष्य ने नहीं, कि छाया को सच्ची" (या वास्तविकता) से बदल दिया जाना था।" पवित्र आत्मा ने अनुग्रहपूर्वक हमें एक अलग रूपरेखा-व्याख्या प्रदान की है। जब तक हम इस व्यापक रूपरेखा को ध्यान में रखते हैं, और जब तक हम इसे अपनी नींव के रूप में काम करते हैं, तब तक हम बहुत दूर नहीं भटक सकते। वे स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि पहला तम्बू एक दूसरे का एक प्रकार था जो कि सांसारिक तम्बू एक स्वर्गीय का प्रतीक था; कि हाथों से बनाई गई झांकी "बिना हाथों के" आने वाली झांकी की आलंकारिक थी, "जिसे भगवान ने खड़ा किया था और मनुष्य ने नहीं, कि छाया को सच्ची" (या वास्तविकता) से बदल दिया जाना था।" पवित्र आत्मा ने अनुग्रहपूर्वक हमें एक अलग रूपरेखा-व्याख्या प्रदान की है। जब तक हम इस व्यापक रूपरेखा को ध्यान में रखते हैं, और जब तक हम इसे अपनी नींव के रूप में काम करते हैं, तब तक हम बहुत दूर नहीं भटक सकते।

उपरोक्त शास्त्रों से एक निष्कर्ष अवश्यम्भावी है, और मैं इसे यहाँ बताऊँगा। यह उस अधिरचना का आधार और जमीनी कार्य करेगा जिसे हम बनाने जा रहे हैं। इसलिए, इसे ध्यान में रखना ठीक-नहीं आवश्यक होगा। यह यह है: जंगल में मिलाप का तम्बू यीशु मसीह के चर्च का एक प्रकार था। चर्च ऑफ क्राइस्ट द्वारा, मेरा मतलब है क्राइस्ट और उनके लोग, उन सभी के साथ जो उन्हें एक साथ बांधते हैं। मेरा मानना है कि इस तुलना में हम जो भी कदम उठाएंगे, वह एक दिशा में एक कदम और एक रमणीय लक्ष्य की ओर एक चरमोत्कर्ष के रूप में देखा जाएगा, जो इस छोटे से काम को पूरा करने पर भक्त पाठक के मन को मधुर और धन्य विश्राम में छोड़ देगा।

मोज़ेक अनुष्ठान शुरू से अंत तक दैवीय उत्पत्ति का था। इसलिए, यह एक कर्मकांड प्रणाली के रूप में परिपूर्ण था। लेकिन यह "स्वर्गीय चीजों की छाया" थी। इसलिए, "स्वर्गीय चीजें" एक प्रणाली का निर्माण करती हैं। सुविधा के लिए जिसे हम ईसाई धर्म कहते हैं, वह व्यवस्था है। अब ईसाई धर्म अकेले मसीह का व्यक्ति नहीं है, हालांकि हमें यह जानकर खुशी होती है कि वह केंद्र, कुंजी पत्थर, नींव है। ईसाई प्रणाली में ईश्वर महान प्रथम कारण शामिल है; जीवित परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह; पवित्र आत्मा; क्रूस, कब्र और पुनरूत्थान; विश्वास, पश्चाताप, बपतिस्मा, और एक समर्पित जीवन; चर्च और उसके अध्यादेश। मोज़ेक प्रणाली में इन सभी चीजों का प्रतीक था। हमें यकीन नहीं है कि कोई भी ईसाएली, यहाँ तक कि मूसा भी इसे समझ गया था; हालांकि निस्संदेह उनमें से ईमानदार और भक्तों के लिए कानून कुछ अर्थों में उनका "स्कूल-मास्टर" था जो उन्हें मसीह के पास ले आए। लेकिन वे इन बातों को पहले समझते थे या नहीं, जब वे प्रकट हुए तो प्रतिरूप इतना स्पष्ट था, कि कोई भी जो "आध्यात्मिक" थे, यह गलती नहीं कर सकते थे। क्राइस्ट और उनके द्वारा प्रकट किया गया सत्य मानो एक कुंजी बन गया जिसके द्वारा कानून के चित्रलिपि का आसानी से अनुवाद किया जा सकता है। इस प्रकार मांस में वाचा आत्मा में वाचा की छाया के रूप में प्रकट होती है, मांस में खतना हृदय का

in which the cultivation of the arts would be encouraged. It is, therefore, highly probable that God chose these men, unfit as they were naturally for the work, that it might appear that they were inspired, and that the glory should be ascribed to God. The idea was divine; the pattern was divine; and the wisdom and power to work it out were divine also, hence there was no room for mere human ideas and methods. God was the architect, Moses was the master builder, and Bezelel and his companions were the laborers. It is no part of the laborer's duty, when working on a building, to alter the design of the architect, or depart from the specifications in the smallest particular; but their duty is to faithfully work out the instructions given to them relative to their particular departments. By so doing every part conduces to the completeness and harmony of the whole. It was so with the workmen in the tabernacle. Each man wrought in perfect accord with instructions, and in the end the tabernacle was formed with all that appertained to it, exactly according to the pattern showed to Moses in the mount.

There is a world of meaning in Scripture names. They are often prophetic. In a wonderful manner they indicate the very character and office, and even destiny of the persons that bear them. The names of the two principal workmen on the tabernacle are wonderfully suggestive. Bezelel means "in the shadow (or protection) of God." Aholiab means "Father's tent;" and truly they must have felt themselves perfectly secure under the "shadow of the Almighty" while they faithfully worked away at their "Father's tent." And so may we, if we be followers of that which is good, and be content with obeying our Father's will in all things.

Now these inspired workmen occupied exactly the same place in relation to the "first tabernacle" as the apostles of Jesus Christ hold in relation to the "second." They, the apostles, were not naturally qualified. They received no previous education for their great apostolic work. They were, in the eyes of men of culture, and they were in fact, "unlearned and ignorant men." And though they had followed Jesus and listened to His wonderful doctrine, yet when He departed from them, He left them in complete bewilderment as to the real character of the work which lay before them. Hence Jesus told them to "tarry in Jerusalem until they should be endued with power from on high." A short time before He suffered, Jesus had graciously promised over and over again the gift of the Holy Spirit. He knew that in order that they might carry out His great commission, which He gave to them after His resurrection (Matt. 28:18-20), it was essential that they should be endued with superhuman, infallible guidance. Hence His repeated utterances concerning the outpouring of the Holy Spirit. "I will pray the Father, and He shall give you another comforter, that He may abide with you forever, even the Spirit of truth: whom the world cannot receive; for it beholdeth Him not, neither knoweth Him." "The

खतना बन जाता है। कभी-कभी तुलनाएं विरोधाभास बन जाती हैं। "मांस की सन्तान नहीं," परन्तु इस्राएल, विश्वास के अनुसार, इब्राहीम का वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस हैं। हम सिनाई में उसके भयानक आतंक के साथ नहीं, बल्कि जीवित परमेश्वर के नगर सिय्योन में आए हैं।

जितना अधिक इस तुलना पर काम किया जाता है उतना ही स्पष्ट रूप से यह प्रकट होता है कि पुराने और नए नियम दोनों पर एक ही ईश्वरीय ग्रन्थकारिता की मुहर लगी है; और जितना अधिक हम छुटकारे की शानदार चीजों को छाया देने के लिए इतनी सरल चीजों का उपयोग करने में भगवान के अद्भुत ज्ञान से प्रभावित होते हैं। बाइबिल को एक इकाई के रूप में देखा जाता है। मिलापवाले तम्बू की तरह इसका अपना पवित्र और सबसे पवित्र स्थान है - पुराना और नया नियम; और यह देखने के लिए कि दोनों एक हैं, केवल पर्दा फाड़ने की जरूरत है। दोनों एक ही पवित्र आत्मा के कार्य हैं। दोनों परमेश्वर के पवित्र पुरुषों की उपज हैं, जिन्होंने पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होकर लिखा। कोई भ्रम नहीं है, बल्कि पूर्णता के लिए दिव्य सत्य का क्रमिक विकास है। प्रकृति और रहस्योद्घाटन सहमत हैं। प्रगति और विकास के समान नियम दोनों को नियंत्रित करते हैं। ट्यूलिप के बल्ब में रहस्यमयी तहों के भीतर सुंदर फूल होता है। परन्तु अनुभव के लिये यह अनुमान लगाना असम्भव था कि उस बल्ब को धरती में गाड़ देने से क्या बनेगा; लेकिन जब पूरी तरह से विकसित हो जाते हैं तो हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि एक अद्भुत और सुंदर योजना तैयार की गई है, जिसका अंत तने पर लगे मीठे फूल से होता है। तो रहस्योद्घाटन के साथ। पॉल इसे इस प्रकार कहते हैं: "मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से छोटा हूं, यह अनुग्रह दिया गया, कि अन्यजातियों में मसीह के अगम्य धन का प्रचार करूं, और सब मनुष्यों को दिखलाऊं कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब में से है।" युगों को परमेश्वर में छिपाया गया है, जिसने सभी चीजों को बनाया है, इस इरादे से कि अब स्वर्गीय स्थानों में प्रधानताओं और शक्तियों को चर्च के माध्यम से भगवान के विविध ज्ञान के बारे में बताया जा सकता है, अनन्त उद्देश्य (युगों का उद्देश्य) के अनुसार), जिसे उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में ठान लिया था" (इप. 3:8-11)। "हे धन की गहनता, और परमेश्वर का ज्ञान और ज्ञान दोनों! उसके विचार कैसे अगम हैं, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं! क्योंकि यहोवा की मनसा को किसने जाना है? या उसका सलाहकार कौन रहा है? या किसने पहिले उसे दिया है, और उसका बदला उसे फिर दिया जाएगा? क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है, जिसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। तथास्तु।"

दूसरा अध्याय

मूसा-मसीह

Comforter, even the Holy Spirit, whom the Father will send in My name, He shall teach you all things, and bring to your remembrance all that I said unto you" (John 14:16,17, 25, 26). "When the Comforter is come, whom I will send unto you from the Father, even the Spirit of truth which proceedeth from the Father, He shall bear witness of Me: and ye also shall bear witness of Me, because ye have been with Me from the beginning," (ch. 15:26, 27). "It is expedient for you that I go away: for if I go not away the Comforter will not come unto you; but if I go, I will send Him unto you. And He, when He is come, will convict the world in respect of sin, of righteousness, and of judgment . . . I have yet many things to say unto you, but ye cannot bear them now. Howbeit, when He, the Spirit of truth, is come, He shall guide you into ALL THE TRUTH; for He shall not speak from Himself, but what things soever He shall hear, these shall He speak; and He shall declare unto you the things that are to come. He shall glorify Me, for He shall take of Mine, and shall declare it unto you" (ch. 16:7-14). "Being assembled together with them, He charged them not to depart from Jerusalem, but to wait for the promise of the Father, which, said He, ye heard from Me. For John indeed baptized with (in) water; but ye shall be baptized with (in) the Holy Ghost not many days hence" (Acts 1:4, 5).

From these Scriptures we see that the chosen apostles of Christ were not to commence their great work of preaching the gospel and building the true tabernacle till the Holy Spirit came upon them, that the Spirit should be poured out upon them in such copiousness as that they should be "baptized" in it; that this same Spirit the world, as such, could not receive; that He should come as a "comforter," should recall all the previous teaching of Christ to their memory, and guide them into all truth, and unveil the future to their understanding; that He was to speak through them the whole truth of Christ.

Thus, the inspired apostles of Jesus were divinely qualified for their great work. And that they might be armed with sufficient authority, God worked with them, "bearing witness with them both by signs and wonders, and by manifold powers, and by gifts of the Holy Ghost, according to His own power" (Heb. 2:4). They were also able, by the power of God, to kill (Acts 5) and make alive (Acts 9:36-43); they could "retain" sins and they could "remit" them; they stood in the place and were the mouthpiece of Christ and of God. "He that heareth you heareth Me, and he that rejecteth you rejecteth Me; and he that rejecteth Me rejecteth Him that sent Me." Here is a chain of three links—God, Christ, the apostles; God in heaven, Christ the mediator, and the apostles on earth. He that grasps the apostolic link grasps Christ, and God Almighty. Let me not be misunderstood. The apostles hold this most important office because of their infallible teaching. It is wonderful

हम पहले ही एक सामान्य तरीके से देख चुके हैं कि मूसा मसीह का एक प्रतीक था। आइए इस सच्चाई की ओर जाँच करें। मूसा किसी भी तरह से इस्राएल के कानून-दाता की तुलना में अधिक स्पष्ट रूप से मसीह के रूप में प्रकट नहीं होता है। जब वह पवित्र पर्वत से उतरा, तो उसका मुख स्वर्गीय तेज से चमका, और लोग उस प्रकाश को सह न सके, इसलिये उस ने अपने मुँह पर परदा डाल लिया। यह हमें उसकी याद दिलाता है जो "परमेश्वर के पास से निकला" और "स्वर्ग से नीचे" आया ताकि मनुष्य पर परमेश्वर की इच्छा प्रकट करे। ऐसा करने में उसने उस महिमा को एक ओर रख दिया जो संसार के आरम्भ होने से पहले पिता के पास थी, और मानव शरीर में अपने दिव्य स्वभाव पर पर्दा डाला। प्रेरित इस अद्भुत घटना को विरोधाभास के रूप में प्रस्तुत करता है। इससे अधिक अभिव्यंजक और उदात्त भाषा का प्रयोग असम्भव है। "तुम उस पर्वत के पास नहीं आए हो जिसे छुआ जा सकता था, और जो आग से जल गया था, और जहाँ तक काली छाया थी," और अन्धकार, और आँधी, और तुरही का शब्द, और शब्दों का शब्द सुनाई देना; जिस आवाज को सुनने वालों ने विनती की थी कि अब उनसे और कोई बात न की जाए, क्योंकि जो आदेश दिया गया था उसे वे सहन नहीं कर सकते थे। और यदि कोई पशु भी पर्वत को छूए, तो वह पत्थरवाह किया जाए; और वह रूप इतना भयानक था कि मूसा ने कहा, मैं बहुत डरता हूँ, और कांपता हूँ। परन्तु तुम सिय्योन पर्वत के पास, जीवित परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, और स्वर्गदूतों की असंख्य सेनाओं के पास, और महासभा और पहिलौठों की कलीसिया के पास, जो स्वर्ग में नामांकित हैं, और परमेश्वर के पास आए हो। और सब का न्यायी, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं, और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के लोहू के पास जो हाबिल के लोहू से उत्तम बातें कहता है" (इब्रानियों 12:18-24)। जिस आवाज को सुनने वालों ने विनती की थी कि अब उनसे और कोई बात न की जाए, क्योंकि जो आदेश दिया गया था उसे वे सहन नहीं कर सकते थे। और यदि कोई पशु भी पर्वत को छूए, तो वह पत्थरवाह किया जाए; और वह रूप इतना भयानक था कि मूसा ने कहा, मैं बहुत डरता हूँ, और कांपता हूँ। परन्तु तुम सिय्योन पर्वत के पास, जीवित परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, और स्वर्गदूतों की असंख्य सेनाओं के पास, और महासभा और पहिलौठों की कलीसिया के पास, जो स्वर्ग में नामांकित हैं, और परमेश्वर के पास आए हो। और सब का न्यायी, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं, और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और

that God should give such power to man; but it is His plan, and we must joyfully submit.

The early church fully recognized this authority. "They continued steadfastly in the Apostle's teaching" (Act 2). They knew that they were Christ's ambassadors; and that their word was, therefore, final in all that appertained to the faith of Christ, and today the same apostolic authority is in force. The apostles have no successors; none are necessary. The faith, in all its fullness, was through them, "once for all delivered to the saints;" and is contained within the covers of the New Testament. All attempts to add to or take from the authority of the apostles, whether by throne, state, parliament, synod, conference, Pope, or counsel, are acts of rebellion against the will of God. Jesus recognized that the world was only to be converted "through their word" (John 17:20). And Peter states that God had committed unto them "all things that pertain to life and godliness." We conclude, then, by reiterating the fact that the inspired workmen on the first tabernacle were types of the inspired workmen on the second, and that just as the former worked out, accurately and fully, the first tabernacle according to the divine "pattern;" so the apostles of Jesus Christ, under the inspiration of the Holy Spirit, worked out and completed the Christian system; and the great moral we have to learn from this is entire and unreserved acceptance of the truth as we find it in the New Testament. If all who profess to believe in Jesus were to accept this rule, and would but "strive together for the faith of the gospel," the result would be ONENESS--"One body, one spirit, one hope, one Lord, one faith, one baptism, and one God and Father of all. Would to God that ALL who love the dear Lord Jesus did but grasp this great foundation truth, then would

"Name and sects and parties fall,
And Jesus Christ be all in all."

Chapter IV

THE MATERIALS

THE Tabernacle and its furniture were made of a variety of precious materials: gold silver, brass, precious stones, accasia wood, fine linen, costly skins, dyes, rich embroidery, &c. The first thing we may profitably notice is, that all these things were the free-will offerings of the people of God. "And the Lord spake unto Moses, saying, speak unto the children of Israel that they take for me an offering; of every man whose heart maketh him willing, ye shall take my offering," &c. (Ex. 25:1-9). "And they came every one whose heart stirred him up, and every one whose Spirit made him willing, and brought the Lord's offering, for the work of the tent of meeting, and for the service thereof, and for the holy garments. And they came both men and women, as many as were willing-hearted, and brought brooches, and earrings, and signet rings," &c. (ch. 35:20-

छिड़काव के लोह के पास जो हाबिल के लोह से उत्तम बातें कहता है" (इब्रानियों 12:18-24)। और यदि कोई पशु भी पर्वत को छूए, तो वह पथरवाह किया जाए; और वह रूप इतना भयानक था कि मूसा ने कहा, मैं बहुत डरता हूँ, और कांपता हूँ। परन्तु तुम सिय्योन पर्वत के पास, जीवित परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, और स्वर्गदूतों की असंख्य सेनाओं के पास, और महासभा और पहिलौठों की कलीसिया के पास, जो स्वर्ग में नामांकित हैं, और परमेश्वर के पास आए हो। और सब का न्यायी, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं, और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के लोह के पास जो हाबिल के लोह से उत्तम बातें कहता है" (इब्रानियों 12:18-24)। और यदि कोई पशु भी पर्वत को छूए, तो वह पथरवाह किया जाए; और वह रूप इतना भयानक था कि मूसा ने कहा, मैं बहुत डरता हूँ, और कांपता हूँ। परन्तु तुम सिय्योन पर्वत के पास, जीवित परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, और स्वर्गदूतों की असंख्य सेनाओं के पास, और महासभा और पहिलौठों की कलीसिया के पास, जो स्वर्ग में नामांकित हैं, और परमेश्वर के पास आए हो। और सब का न्यायी, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं, और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के लोह के पास जो हाबिल के लोह से उत्तम बातें कहता है" (इब्रानियों 12:18-24)।

उपरोक्त विरोधाभास उन तथ्यों में अपना अंतिम स्पर्श प्राप्त करता है जो पुरानी और नई दोनों वाचाओं की व्यवस्था को देने के बाद आए थे। पहाड़ में मूसा की अनुपस्थिति के दौरान लोगों ने खुद को मूर्तिपूजा के लिए समर्पित कर दिया। इस पाप के कारण तीन हजार विद्रोही अपने ही भाइयों की तलवारों से मारे गए। परन्तु जब सिय्योन पर्वत से पहली बार सुसमाचार की व्यवस्था का प्रचार किया गया तो तीन हजार लोगों को बचाया गया (प्रेरितों के काम 2)। यह सच्चाई का एक गंभीर चित्रण है। "पत्र (मूसा की व्यवस्था) मारता है, परन्तु आत्मा (सुसमाचार के द्वारा) जीवन देती है" (2 कुरिन्थियों 3:6)।

लेकिन पवित्र पर्वत पर मूसा ने न केवल दस आज्ञाओं की व्यवस्था प्राप्त की। उसने अपने भरोसे को एक आदर्श मॉडल, या मिलापवाले तम्बू के "पैटर्न" के लिए भी प्रतिबद्ध किया था। अब यहाँ केवल इस सच्चाई पर जोर देना महत्वपूर्ण है कि मूसा मिलाप वाले तम्बू से संबंधित था, ठीक वैसे ही जैसे यीशु मसीह अपने गिरजे से संबंधित है। हेब में। 3:1-6 में हम पढ़ते हैं: "इस कारण, पवित्र भाइयों, स्वर्गीय बुलाहट में भागी, हमारे अंगीकार के प्रेरित और महायाजक, अर्थात् यीशु पर ध्यान करो, जो उसके नियुक्त करनेवाले के प्रति विश्वासयोग्य रहा, जैसा कि मूसा भी अपने सब कामों में विश्वासयोग्य रहा। (परमेश्वर का) भवन, क्योंकि वह मूसा से कहीं अधिक महिमा के योग्य गिना गया है, जितना कि भवन का बनानेवाला भवन से बढ़कर आदर पाता है, क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई बनानेवाला होता है, परन्तु जिस ने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है। और मूसा निश्चय ही अपने सब कामों में विश्वासयोग्य था। s) उन बातों की गवाही के लिए एक नौकर के रूप में घर, जो बाद में बोली जाने वाली थीं। लेकिन मसीह अपने (स्वयं) घर पर एक पुत्र के रूप में, जिसका घर हम हैं। उनके

24. "And they (the workmen) received of Moses all the offerings which the children of Israel had brought for the work of the service of the sanctuary to make it withal: and they brought yet unto him free will offerings every morning . . . the people bring much more than enough for the service of the work which the Lord commanded us to make. "And Moses gave commandment, and they caused it to be proclaimed throughout the camp, saying, let neither man nor woman make any more work for the offerings of the sanctuary, so the people were restrained from giving" (Ex. 36:3-6.) Thus to the Divine call the people responded with such overflowing liberality that they had to be RESTRAINED FROM GIVING! a beautiful example of self-sacrifice!

We have in this incident an illustration of the voluntary principle that pervades the whole scheme of human redemption from its first great cause to its last effect. "God so loved the world that HE GAVE His only begotten Son," and Jesus "loved us and GAVE HIMSELF for us." "BY GRACE we are saved, through faith; and that not of ourselves; it is the GIFT of God." "O every one that thirsteth come ye to the waters; and he that hath no money, come ye buy and eat without money and without price." God delights in giving. He gives all things--life and life's supplies; salvation; and all its tremendous cost. And He delights in the free-will offerings of His creatures. He forces no man. The doctrine of the "irresistible influence of the Holy Spirit" is opposed to the genius and spirit of the Bible. If Christ stands at the door of the human heart calling and knocking, we must ourselves open and let Him in; if God says, "O every one that thirsteth come ye to the waters," WE MUST COME OURSELVES and drink. He will not force us. If men WILL NOT come, that they may have life, they must perish. God will not force them. He has said "My people shall be a willing people in the day of my power." How truly does this apply to the Christian religion! On the day of Pentecost, the people "first gave themselves to the Lord" under the powerful appeal of the Apostle Peter, and then there followed an incident which wonderfully coincides with the incident above narrated. Just as the people brought freely of their substance at the call of Moses, so, when the people "gladly received the Apostle's word, and were baptized," we are told that "not one of them said that aught of the things that he possessed was his own . . . and as many as were possessed of houses or lands sold them, and brought the prices of the things that were sold, and laid them at the Apostle's feet, and distribution was made unto each according as anyone had need" (Acts 4:32-34). How the truth in Christ must have gripped their hearts! O if believers grasped the salvation of God now as they did then there would be no need to beg and pray for a little money to carry on the Lord's work. There is no law in the new covenant saying "Thou shalt give." God has purposely left us free to do as our heart prompts us. "If there be first a willing mind it is accepted according to that a man hath,

(मसीह के) याजकत्व का प्रकार, जिसे बाद में पत्र में देखा गया है। मूसा का मिशन भगवान के घर का निर्माण करना था। काम का विवरण सभी सूक्ष्मता से बताया गया था, और मूसा विनिर्देशों से विचलित होने के लिए स्वतंत्र नहीं था उसने छोटे से छोटे अंश में प्राप्त किया था। "देख, वह कहता है, कि तू सब कुछ उस नमूने के अनुसार बनाता है जो तुझे पवित्र पर्वत पर दिखाया गया था।" मूसा "विश्वासयोग्य था।" उसने सब बातों में परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया। मिलापवाले तम्बू के निर्माण में परमेश्वर का एक महान उद्देश्य था, और जरा सा भी विचलन उस उद्देश्य को बिगाड़ देता। हम नहीं जानते कि मूसा ने उस उद्देश्य को समझा था, लेकिन हम यह जानते हैं कि वह यह देखने के लिए उत्सुक था कि इमारत "पैटर्न" के अनुरूप थी। "जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी उन सब के अनुसार इस्राएली सब काम करने लगे। और मूसा ने सब काम पर दृष्टि की, और क्या देखा कि यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन्होंने बुरा काम किया है, और मूसा ने वैसा ही किया है; और मूसा उन्हें आशीर्वाद दिया।" इस प्रकार इस्राएल के पुत्रों ने सब काम किया। और मूसा ने सब काम को देखा, और क्या देखा, कि उन्होंने यहोवा की आज्ञा के अनुसार उस को बुरा किया, यहां तक कि उन्होंने वैसा ही किया; और मूसा ने उन्हें आशीष दी।"

अब इस महान मिशन में मूसा यीशु का एक प्रकार है। परमेश्वर के "प्रेषित" के रूप में प्रभु यीशु "मेरी अपनी इच्छा नहीं करने के लिए स्वर्ग से नीचे आया," वह कहता है, "लेकिन उसकी इच्छा जिसने मुझे भेजा है।" और फिर से: "मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु उसका है जिसने मुझे भेजा है... जो अपनी ओर से बोलता है, वह अपनी महिमा चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है, वही सत्य है और उस में अधर्म नहीं क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी...मूसा की व्यवस्था टलने न पाए" (यूहन्ना 8:16-23)। फिर से, वह कहता है: "जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे, तब तुम जानोगे कि मैं वह हूं, और यह कि मैं अपनी ओर से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसा पिता ने मुझे सिखाया है, वैसे ही ये बातें कहता हूं। और जिसने मुझे भेजा है वह है उसने मेरे साथ मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं सदा वही करता हूं, जो उसे भाता है" (यूहन्ना 8:26-29)। यीशु का मिशन "खोए हुआ को ढूँढ़ना और उनका उद्धार करना" था - लोगों को अंधकार की शक्ति से छुड़ाना, और पवित्रता और परमेश्वर को पुनर्स्थापित करना। यह महान कार्य दो भागों में पूरा हुआ: पहला परमेश्वर के आत्मिक भवन की नींव डालने में; और दूसरा, इमारत के निर्माण में। इस भव्य कार्य का पहला भाग पृथ्वी पर मसीह की सेवकाई में पूरा हुआ, और उसके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण में समाप्त हुआ। दूसरा भाग पित्तेकुस्त के दिन शुरू हुआ, और प्रेरितों के द्वारा पूरा किया गया। लेकिन "सच्चे तम्बू" के निर्माण का पूरा कार्य यीशु को समर्पित था। वही विश्वास का कर्ता और सिद्ध करनेवाला है। "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार" उसी का है। लूका उन सब के बारे में बोलता है

and not according to that he hath not." "But this I say that he that soweth sparingly shall reap also sparingly; and he that soweth bountifully shall reap also bountifully. Every man according as he purposes in his heart, so let him give; not grudgingly or of necessity; for God loveth a cheerful giver" (2 Cor. 8:12; 9:6-8).

But while we are left thus free, who that has the faintest conception of the value of God's "unspeakable gift" to us will not be willing to say "Were the whole world of nature mine That were an offering far too small, Love so amazing, so Divine, Demands my soul, my life, my all."

We may note, in the second place, to supply the needs of the tabernacle, the people of God alone were appealed to. It may be said that they could do nothing else; but that would be to assume too much. That they did not beg of the outside world is a fact which accords with the practice of the first Christians. They took nothing of the heathen to support them in preaching the gospel, or building up the church.

Then, in the third place, the preciousness of the materials used on the tabernacle point to the "unsearchable riches of Christ." By those things which MEN prize so highly, the inestimable wealth of the gospel is set forth. All things here are precious. Jesus is precious, to God and to us; peace and pardon are precious; the presence of Christ, and the comfort of the Holy Spirit are precious; and the glorious hope of eternal life is precious. All is precious to us who believe.

CHAPTER V

THE COURT

THE enclosure, called the court of the tabernacle, was 100 cubits long and 50 wide. The form was an oblong square. A cubit was 1.824 ft. Hence the length was about 185 ft. and the breadth about 88 ft. The tabernacle stood within this enclosure towards the west end, and facing the east. The enclosure was formed of a curtain of fine twined linen which was firmly supported by sixty pillars of brass, twenty on the north and twenty on the south side, and ten at each end. The pillars were let into sockets of brass and crowned with silver capitals or "chapiters." At the east end was the "gate of the court," about 35 ft. wide. It was formed of a beautiful curtain of blue and purple and scarlet and fine twined linen. The hanging was supported by four pillars, uniform with the rest of the enclosure. Thus the enclosure was high enough to prevent the tabernacle from being exposed to the gaze of all except those who came to the appointed entrance and desired to enter with their offerings. We do not read that the enclosure was accessible to all, whether worshipfully inclined or not; but only (it seems) to those who came to offer sacrifice. The beautiful screen of the "gate" was doubtless kept close, but always readily

जो यीशु ने पृथ्वी पर किए, वह उसके महान कार्य का आरम्भ था (प्रेरितों के काम 1:1)। और हमारे प्रभु ने कहा : "

इस प्रकार, दिव्य व्यवस्था-दाता और मास्टर-निर्माता के रूप में मूसा का महान प्रतिरूप हमारे सामने है। वह जिसने दुनिया बनाई, और "किसके द्वारा

उन्होंने ऐसा काम किया है जैसे कि हर आदमी "खुद के लिए कानून" हो, और मानो परमेश्वर ने घोषित किया था कि हर आदमी वह कर सकता है जो उसकी अपनी दृष्टि में सही है। लेकिन यह वैसा नहीं है। नई वाचा परमेश्वर की ओर से एक रहस्योद्घाटन है, और इसकी शर्तों का पालन किया जाना है। स्वर्ग का राज्य हमारे बीच है, और नागरिकता के नियमों का पालन करना चाहिए। चर्च ऑफ क्राइस्ट पृथ्वी पर है, और इसकी विधियों के साथ छेड़छाड़ नहीं की जानी चाहिए। नए नियम में ये बातें हमारे सामने हैं, और वे परमेश्वर की बुद्धि और महिमा को प्रकट करती हैं। प्रणाली दिव्य रूप से सुंदर और पूर्ण है; और पूरी दुनिया में और हमेशा के लिए मनुष्य के अनुकूल हो गया। तो आइए हम यह ध्यान रखें कि ईश्वरीय कानून का उल्लंघन हमेशा एक अभिशाप लाता है। नई वाचा परमेश्वर की ओर से एक रहस्योद्घाटन है, और इसकी शर्तों का पालन किया जाना है। स्वर्ग का राज्य हमारे बीच है, और नागरिकता के नियमों का पालन करना चाहिए। चर्च ऑफ क्राइस्ट पृथ्वी पर है, और इसकी विधियों के साथ छेड़छाड़ नहीं की जानी चाहिए। नए नियम में ये बातें हमारे सामने हैं, और वे परमेश्वर की बुद्धि और महिमा को प्रकट करती हैं। प्रणाली दिव्य रूप से सुंदर और पूर्ण है; और पूरी दुनिया में और हमेशा के लिए मनुष्य के अनुकूल हो गया। तो आइए हम यह ध्यान रखें कि ईश्वरीय कानून का उल्लंघन हमेशा एक अभिशाप लाता है। नई वाचा परमेश्वर की ओर से एक रहस्योद्घाटन है, और इसकी शर्तों का पालन किया जाना है। स्वर्ग का राज्य हमारे बीच है, और नागरिकता के नियमों का पालन करना चाहिए। चर्च ऑफ क्राइस्ट पृथ्वी पर है, और इसकी विधियों के साथ छेड़छाड़ नहीं की जानी चाहिए। नए नियम में ये बातें हमारे सामने हैं, और वे परमेश्वर की बुद्धि और महिमा को प्रकट करती हैं। प्रणाली दिव्य रूप से सुंदर और पूर्ण है; और पूरी दुनिया में और हमेशा के लिए मनुष्य के अनुकूल हो गया। तो आइए हम यह ध्यान रखें कि ईश्वरीय कानून का उल्लंघन हमेशा एक अभिशाप लाता है। प्रणाली दिव्य रूप से सुंदर और पूर्ण है; और पूरी दुनिया में और हमेशा के लिए मनुष्य के अनुकूल हो गया। तो आइए हम यह ध्यान रखें कि ईश्वरीय कानून का उल्लंघन हमेशा एक अभिशाप लाता है।

अध्याय III

प्रेरित कार्यकर्ता

drawn aside to admit any and every one who desired to come near to God.

Now we may learn at least three very beautiful lessons from this enclosure.

1. The deep things of God in Christ, "the things of the Spirit of God," are not exposed to the careless or critical gaze of all. Before a man can understand and appreciate them, he must come within understanding distance. God has hidden these things from the (worldly) wise and prudent and has revealed them unto, babes. There must be the humble, teachable spirit, and the willing heart, "If any man WILL do His will he shall know of the doctrine, whether it be of God or whether it be of men." The "honest and good heart" was the only soil in which the seed of the Kingdom took root and bore fruit. Our blessed Lord said to the Jews, "Ye believe not because ye are not of my sheep." That is, they had not the submissive, yielding disposition to follow Him, as sheep their shepherd, and therefore they could not believe. This is how it is that the sceptic can find so much in the Bible to cavil at, while the Christian sees beauty on every page, in every verse. To them that are perishing in unbelief the things of God are foolishness; but to those that believe Christ is the power of God and the wisdom of God. All this seems foreshadowed by the enclosure of the court of the tabernacle. Let us then be wise; let us come to the gate; let us enter in with sacrifice and offering. "Blessed are the poor in spirit, for theirs is the kingdom of heaven. Blessed are the pure in heart for they shall see God."

2. The gate was wide. All who desired to come before God with penitence and offering were free to do so. So, the door of mercy stands open wide, and "whosoever will" may enter in. The very colors of the hangings of the gate of the court were suggestive. Blue points heavenward; purple speaks of royalty; scarlet (the extract of a worm) tells of humility and suffering; pure white linen suggests holiness. All are summed up in Jesus Christ. He came from heaven, the royal Son of the living God, to humble Himself and become obedient unto death that He might redeem us with His most precious blood, and He offered Himself without spot to God. As such He is "the way, the truth and the life, and no man cometh to the Father but by Him."

3. The "chapters" or capitals which crowned the brass pillars were made of the atonement money taken from the Israelites at their numbering. All the males from twenty years old upwards were required to give half a shekel of silver for his ransom (Ex. 30:11-16), value 1/2. The rich were not allowed to give more, nor the poor less. Thus, while considering the means of all, God also taught them the need of a common redemption for all. The Apostle seems to refer to this institution when he says, "Ye were not redeemed with corruptible things, as silver and gold . . . but with precious blood, as of a lamb without blemish and

आइए अब हम एक कदम आगे बढ़ते हैं और मूसा के तम्बू और "सच्चा तम्बू जिसे यहोवा ने खड़ा किया था, मनुष्य ने नहीं, के बीच समानता के एक और महत्वपूर्ण बिंदु पर विचार करते हैं।" दोनों घरों के निर्माण में प्रेरित श्रमिकों को लगाया गया था। परमेश्वर ने मूसा से कहा: सुन, मैं ने यहूदा के गोत्र में से ऊरी के पुत्र बसेलेल को, जो हूर का पोता था, नाम लेकर बुलाया है; और मैं ने उसको बुद्धि और समझ और ज्ञान और ज्ञान में परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण किया है। सब प्रकार की कारीगरी निकालना, अर्थात् सोने, चांदी, और पीतल में, और जड़ने के लिये मणि काटने में, और लकड़ी पर नक्काशी करना, और सब प्रकार की कारीगरी करना, और सब प्रकार की कारीगरी करना। उसके संग दान के गोत्र वाले अहीसामैक के पुत्र ओहोलीआब को ठहराया, और सब बुद्धिमानोंके मन में मैं ने बुद्धि दी है, और यह कि महिमा परमेश्वर को दी जानी चाहिए। विचार दिव्य था; पैर्न दिव्य था; और इसे पूरा करने की बुद्धि और शक्ति दिव्य भी थी, इसलिए केवल मानवीय विचारों और तरीकों के लिए कोई जगह नहीं थी। परमेश्वर वास्तुकार था, मूसा मास्टर बिल्डर था, और बसेलेल और उसके साथी मजदूर थे। किसी भवन पर काम करते समय, वास्तुकार के डिजाइन को बदलना, या छोटी से छोटी विशिष्टताओं से हटना मजदूर के कर्तव्य का हिस्सा नहीं है; लेकिन उनका कर्तव्य है कि वे अपने विशेष विभागों के संबंध में उन्हें दिए गए निर्देशों का ईमानदारी से पालन करें। ऐसा करने से प्रत्येक भाग संपूर्ण की पूर्णता और सामंजस्य की ओर अग्रसर होता है। निवास-स्थान के सेवकों के साथ ऐसा ही था। हर एक मनुष्य ने आज्ञा के अनुसार सिद्ध रीति से काम किया, और अन्त में जो कुछ उस से सम्बद्ध था, वह मिलापवाला तम्बू बन गया,

पवित्रशास्त्र के नामों में अर्थ का संसार है। वे प्रायः भविष्यवाणी करते हैं। एक अद्भुत तरीके से वे उन लोगों के चरित्र और कार्यालय, और यहां तक कि भाग्य को भी इंगित करते हैं जो उन्हें धारण करते हैं। मिलापवाले तम्बू पर दो प्रमुख कामगारों के नाम आश्चर्यजनक रूप से विचारोत्तेजक हैं। बेज़ेल का अर्थ है "ईश्वर की छाया (या सुरक्षा) में।" अहोलियाब का अर्थ है "पिता का तम्बू;" और वास्तव में जब वे अपने "पिता के तम्बू" में ईमानदारी से काम कर रहे थे, तब उन्होंने "सर्वशक्तिमान की छाया" के नीचे खुद को पूरी तरह से सुरक्षित महसूस किया होगा। और हम भी, यदि हम भलाई के अनुयायी हों, और सब बातों में अपने पिता की इच्छा का पालन करने में सन्तुष्ट रहें।

अब इन उत्प्रेरित कार्यकर्ताओं ने "पहला तम्बू" के संबंध में ठीक उसी स्थान पर कब्जा कर लिया जैसा कि यीशु मसीह के प्रेरित "दूसरे" के संबंध में रखते हैं। वे, प्रेरित, स्वाभाविक रूप से योग्य नहीं थे। उनके महान प्रेरितिक कार्यों के लिए उन्हें कोई पूर्व शिक्षा नहीं मिली थी। वे संस्कृति के पुरुषों की दृष्टि में थे, और वे वास्तव में, "अनपढ़ और अज्ञानी पुरुष थे।" और यद्यपि उन्होंने यीशु का अनुसरण किया था और उनके अद्भुत सिद्धांत को सुना था, फिर भी जब वह उनके पास से चला गया, तो उसने उन्हें उस कार्य के वास्तविक स्वरूप के बारे में पूरी तरह से चकित कर दिया, जो उनके सामने था। इसलिए यीशु ने उनसे कहा, "यरूशलेम में तब

without spot, even the blood of Christ," and in this redemption, as in its figure, "God is no respecter of persons." "There is no distinction, for all have sinned and come short of the glory of God."

These chapters, then, would constantly remind the Israelite of the price of His redemption. Now I have pointed out that the tabernacle was hidden from the careless and indifferent observer. But these caps of silver would be always in view, being on the pillars of brass and rising above the curtain. This suggests an important point; that is, the necessity of keeping the cross of Christ, or rather Christ crucified, before the world. It is the duty and privilege of the Church to preach the gospel to every creature, to point them to the price of human redemption. The preaching of Christ is the thing that draws the sinner to God. "I, if I be lifted up from the earth will draw all men unto Me." "I am not ashamed of the gospel, for it is the power of God unto salvation to everyone that believeth." Redemption should be the chief point in preaching the gospel. Much preaching is lost--useless, because the preachers do not centre upon vital, saving truth. Then again, the silent testimony of the redeemed life of the Christian is also suggested by these crowns of silver. This is a way--perhaps the most telling--in which all can and should preach Christ. "Let your light so shine before men that they may see your good works and glorify your Father which is in heaven." "Ye are bought with a PRICE, therefore glorify God in your bodies and in your spirits which are His."

"Take my life and let it be
Consecrated, Lord, to Thee."

CHAPTER VI

THE STRUCTURE

THE ground plan of the tabernacle was similar in shape and proportion to the court. Its walls were formed of 48 boards of accasia wood, overlaid with pure gold. These boards were 17½ feet long by 2½ broad.

They were fixed perpendicularly in silver sockets. There were 96 sockets, a talent of silver in each, whose value in our money would be £34,200. There were 20 boards on each side and 8 at the west end. They were firmly united together by means of gold rings and horizontal bars of wood overlaid with gold. At the east end, or entrance, there were five pillars of wood overlaid with gold for the door. Four pillars of the same materials were fixed across the inside of the building, a little more than midway, for the veil; which divided the "holy" from the "most holy" place. The whole framework was at once simple, and yet rich beyond expression. It was wonderfully adapted to the circumstances. It was built on strictly scientific principles. While its durability and strength were very great, it was so

तक ठहरे रहो, जब तक कि उन्हें स्वर्ग से सामर्थ्य न मिल जाए।" पीड़ित होने से कुछ समय पहले, यीशु ने अनुग्रहपूर्वक बार-बार पवित्र आत्मा के उपहार का वादा किया था। वह जानता था कि वे उसके महान आदेश को पूरा कर सकें, जो उसने अपने पुनरुत्थान के बाद उन्हें दिया था (मत्ती 28:18-20), यह आवश्यक था कि उन्हें अलौकिक, अचूक मार्गदर्शन दिया जाए। इसलिए पवित्र आत्मा के उंडेले जाने के संबंध में उनके बार-बार के कथन। "मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और शान्ति देनेवाला देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे, अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह उसे न तो देखता है, और न उसे जानता है।" "दिलासा देने वाला, अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा" (यूहन्ना 14:16,17,25,26)। "जब दिलासा देनेवाला आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, वह मेरी गवाही देगा, और तुम भी मेरी गवाही दोगे, क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो," (अध्याय 15:26, 27)। मैं नहीं जाता, दिलासा देनेवाला तुम्हारे पास नहीं आएगा; परन्तु यदि मैं जाता हूँ, तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा। और जब वह आएगा, तो संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा। . . मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। तौभी जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो वह तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा; क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा; और वह तुम्हें आनेवाली बातें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा" (अध्याय 16:7-14)। "उनके साथ इकट्ठे होकर, उस ने उन्हें चिताया, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बात जोहते रहो, जिसे तुम ने मुझ से सुना है। जॉन के लिए वास्तव में (में) पानी से बपतिस्मा; परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे" (प्रेरितों के काम 1:4, 5)।

इन शास्त्रों से हम देखते हैं कि मसीह के चुने हुए प्रेरितों को पवित्र आत्मा के आने तक सुसमाचार का प्रचार करने और सच्चे तम्बू का निर्माण करने का अपना महान कार्य शुरू नहीं करना था, ताकि आत्मा उन पर इतनी अधिकता से उंडेली जाए कि वे इसमें "बपतिस्मा" होना चाहिए; कि यही आत्मा संसार, जैसे, ग्रहण नहीं कर सकता; कि वह एक "सात्वना देने वाले" के रूप में आए, मसीह के सभी पिछले उपदेशों को उनकी स्मृति में याद करे, और उन्हें सभी सत्यों में मार्गदर्शन करे, और उनकी समझ के लिए भविष्य का अनावरण करे; कि वह उनके द्वारा मसीह का सारा सत्य कहे।

इस प्रकार, यीशु के उत्प्रेरित प्रेरित अपने महान कार्य के लिए ईश्वरीय रूप से योग्य थे। और ताकि वे पर्याप्त अधिकार से लैस हो सकें, परमेश्वर ने उनके साथ काम किया, "चिन्हों, और चमत्कारों, और नाना प्रकार की शक्तियों, और पवित्र आत्मा के दानों के द्वारा, अपनी सामर्थ्य के अनुसार उन की गवाही दी" (इब्रा. 2: 4). वे परमेश्वर की शक्ति से मारने (प्रेरितों के काम 5) और

constructed that it could be taken down or put up in a very short time.

The tabernacle itself was the type of the Church. I want this to be kept steadily in mind. Well, this being so, what are we to learn from its general structure? 1st. That the Church of God is marvellously simple and gloriously rich; and wonderfully adapted to the needs of man in all ages and climes. It is a perfect system. It is impossible to improve upon the Church of the New Testament, though many have tried to do so. But they have only made an exhibition of their folly. 2nd. The boards were let into massive silver sockets, made of the ransom money, before referred to; standing in and on the price of atonement! How we are here again reminded of the foundation of the Church of God. It rests on the atonement of Christ, which is beyond valuation. By His death He laid the foundation on which the Church is built. "Other foundation can no man lay than that which is laid, which is Jesus Christ." We are built upon the foundation of the apostles and prophets (i.e., the foundation they built on), Jesus Christ Himself being the chief corner stone.

3rd. By the compact unity of the tabernacle is set forth the unity of the Christian system, and Church of Jesus Christ. As there was but one way in, and one tabernacle, so there is but one way of salvation, and one Church. To the Ephesians Paul wrote: "I, therefore, the prisoner of the Lord, beseech you to walk worthily of the calling wherewith you were called, with all lowliness and meekness; with long-suffering, forbearing one another in love, giving diligence to keep the unity of the spirit in the bond of peace. There is one body, and one spirit, even as also ye were called in one hope of your calling; one Lord, one faith, one baptism, one God and Father of all, who is over all, and through all, and in all" (Eph. 4:1-6). To the Corinthians the same apostle writes: "Be perfected together in the same mind and the same judgment." Again, he says: "All the building, fitly framed together, groweth unto a holy temple (sanctuary) in the Lord. In whom ye also are builded together for a habitation of God in the spirit." Our blessed Lord also prayed in these words: "I pray . . . that they may all be one, as Thou, Father, art in Me, and I in Thee, that they also may be one in us: that the world may believe that Thou didst send Me."

There is no mistaking this teaching. The purpose of God is that there should be one "head"--Christ, and "one body"--the Church; that there should be "no division in the body," but that all Christ's people should be one; that this unity should not be a mere sentiment, but a fact which would impress "the world" with the divine origin of its founder; and that it is the duty of all who profess to be Christ's to strive to bring about and maintain this unity. And how anyone who professes to love the Lord Jesus, in the face of His earnest prayer above quoted, can support or plead for

जीवित करने में भी सक्षम थे (प्रेरितों के काम 9:36-43); वे पापों को "रख" सकते थे और वे उन्हें "छोड़" सकते थे; वे उस स्थान पर खड़े थे और मसीह और परमेश्वर के मुखपत्र थे। "जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है, और जो तुम्हें तुच्छ जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है; और जो मुझे तुच्छ जानता है, वह मेरे भजनेवाले को तुच्छ जानता है।" यहाँ तीन कड़ियों की एक श्रृंखला है - भगवान, मसीह, प्रेरित; स्वर्ग में परमेश्वर, मध्यस्थ मसीह, और पृथ्वी पर प्रेरित। वह जो अपोस्टोलिक लिंक को पकड़ लेता है, वह मसीह और सर्वशक्तिमान ईश्वर को पकड़ लेता है। मुझे गलत न समझा जाए। प्रेरित अपनी अचूक शिक्षा के कारण इस सबसे महत्वपूर्ण पद को धारण करते हैं। यह अद्भुत है कि परमेश्वर मनुष्य को ऐसी शक्ति दे; लेकिन यह उसकी योजना है, और हमें खुशी-खुशी समर्पण करना चाहिए।

प्रारंभिक चर्च ने इस अधिकार को पूरी तरह से मान्यता दी। "वे प्रेरितों की शिक्षा में दृढ़ता से लगे रहे" (अधिनियम 2)। वे जानते थे कि वे मसीह के राजदूत हैं; और इसलिए, उनका वचन मसीह के विश्वास से संबंधित सभी बातों में अंतिम था, और आज वही प्रेरितिक अधिकार लागू है। प्रेरितों का कोई उत्तराधिकारी नहीं है; कोई आवश्यक नहीं है। विश्वास, अपनी संपूर्णता में, उनके द्वारा "पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया" था; और न्यू टेस्टामेंट के कवर के भीतर समाहित है। सिंहासन, राज्य, संसद, धर्मसभा, सम्मेलन, पोप, या वकील द्वारा प्रेरितों के अधिकार में जोड़ने या लेने के सभी प्रयास, ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध विद्रोह के कार्य हैं। यीशु ने पहचाना कि संसार को केवल "उनके वचन के द्वारा" परिवर्तित होना था (यूहन्ना 17:20)। और पतरस कहता है कि परमेश्वर ने उन्हें "जीवन और भक्ति से संबंधित सब कुछ" सौंप दिया था। हम निष्कर्ष निकालते हैं, फिर, इस तथ्य को दोहराते हुए कि पहले तम्बू पर प्रेरित कार्यकर्ता दूसरे पर प्रेरित कार्यकर्ता के प्रकार थे, और जैसा कि पूर्व ने ठीक और पूरी तरह से काम किया था, दिव्य "पैटर्न" के अनुसार पहला तम्बू; "इसलिए यीशु मसीह के प्रेरितों ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा के अधीन कार्य किया और ईसाई प्रणाली को पूरा किया; और इससे हमें जो महान नैतिकता सीखनी है, वह सत्य की संपूर्ण और अनारक्षित स्वीकृति है, जैसा कि हम इसे नए नियम में पाते हैं। यदि वे सभी जो यीशु में विश्वास करने का दावा करते हैं, इस नियम को स्वीकार करते हैं, और "सुसमाचार के विश्वास के लिए एक साथ प्रयास करते हैं," परिणाम एकता होगा - "एक शरीर, एक आत्मा, एक आशा, एक भगवान, एक विश्वास, एक बपतिस्मा, और एक ईश्वर और सभी का पिता। ईश्वर से कामना है कि वे सभी जो प्रिय प्रभु यीशु से प्रेम करते हैं, लेकिन इस महान आधार सत्य को समझेंगे, तब करेंगे

"नाम और संप्रदाय और पार्टियां गिर जाती हैं, और यीशु मसीह सब कुछ हो।"

अध्याय चतुर्थ

सामग्री

sectarianism, I am at a loss to understand. Thousands of professing Christians, finding themselves environed in a huge network of sectarianism, instead of doing their best to break through it, endeavor to find excuses for it, and even arguments in its favor. But it can never be defended by the Word of God. In fact, the Scriptures denounce and condemn it in no uncertain language. "Now this I mean, that each one of you saith, I am of Paul; and I of Apollos; and I of Cephas; and I of Christ. IS CHRIST DIVIDED? Was Paul crucified for you? Or were ye baptized into the name of Paul?" (I Cor. 1:10-13.) "And I, brethren, could not speak unto you as unto spiritual, but as unto carnal, as unto babes in Christ. I fed you with milk, not with meat; for ye were not able to bear it; nay, not even now are ye able; for ye are yet carnal: for whereas there is among you jealousy and strife, are ye not carnal, and walk after the manner of men? For when one saith, I am of Paul, and another, I am of Apollos, are ye not men? What then is Apollos? and what is Paul? Ministers (servants) through whom ye believed; and each as the Lord gave to him" (ch. 3:1-5). In the Corinthian church appeared the first signs--would that they had been the last--of sectarian divisions and party names. And no sooner did they appear than the voice of inspiration promptly condemned them as carnal, and opposed to the sweet spirit of union that was breathed into the early Church. Union is strength. It is "a thing of beauty, and a joy for ever," when holiness, purity and love are the bonds. Well might the Psalmist sing: "Behold how good and how pleasant it is for brethren to dwell together in unity! It is like the precious oil upon the head, that ran down upon the beard, even Aaron's beard; that came down upon the skirts of his garments; like the dew of Hermon, that cometh down upon the mountains of Zion: for there the Lord commanded His blessing, even life for evermore" (Ps. 133). These two figures, ointment and dew, express fragrance and refreshing, and beautifully set forth the pleasures of Christian union.

"How sweet, how heavenly is the sight,
When those that love the Lord
In one another's peace delight,
And so fulfil the Word.

When each can feel his brother's sigh,
And with him bear a part;
When sorrow flows from eye to eye,
And joy from heart to heart.

When free from envy, scorn and pride,
Our wishes all above,
Each can his brother's failings hide,
And show a brother's love.

When love, in one delightful stream,
Through every bosom flows;

मिलाप का तम्बू और उसका फर्नीचर विभिन्न कीमती सामग्रियों से बना था: सोना चाँदी, पीतल, कीमती पत्थर, बबूल की लकड़ी, बढ़िया मलमल, कीमती खाल, रंग, बढ़िया कढ़ाई, और सी। पहली बात जिस पर हम लाभकारी रूप से ध्यान दे सकते हैं, वह यह है कि ये सभी चीज़ें परमेश्वर के लोगों की स्वेच्छा-बलि थीं। "फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्त्राएलियोंसे कह, कि वे मेरे लिथे भेंट ले आएँ; जिस जिस पुरूष के मन में इच्छा हो उसी से मेरी भेंट ले लेना," और गा। (निर्ग. 25:1-9)। "और जितनों के मन में ऐसी उत्तेजना उत्पन्न हुई, और जितनों के मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई, वे मिलापवाले तम्बू के काम करने, और उसकी सेवकाई, और पवित्र वस्तुओंके बनाने के लिथे यहोवा का चढ़ावा ले आए। और वे जितने पुरूष और स्त्रियाँ अपक्की इच्छा से आई थी, और ब्रोच, और बालियाँ ले आए, और इस्त्राएली जो भेंट पवित्रस्थान की सेवकाई के काम के निमित्त उसके बनाने के लिथे लाए थे, उन सभोंको मूसा के हाथ से ले आए; . . और जिस काम के करने की आज्ञा यहोवा ने हमें दी है उसके लिथे लोग उसके लिथे से भी अधिक ले आते हैं।" "तब मूसा ने आज्ञा दी, और सारी छावनी में इस बात का प्रचार करवाया गया, कि क्या पुरूष, क्या स्त्री, पवित्रस्थान के चढ़ावे के लिथे फिर से काम न करें, इसलिथे लोग देने से रोके गए" (निर्ग. 36:3-3-)। 6.) इस प्रकार दैवीय आह्वान के लिए लोगों ने इतनी अधिक उदारता के साथ जवाब दिया कि उन्हें देने से रोकना पड़ा! आत्म-त्याग का एक सुंदर उदाहरण! और इस्त्राएली जो भेंट पवित्रस्थान की सेवकाई के काम के निमित्त उसके बनाने के लिथे लाए थे, उन सभोंको मूसा के हाथ से ले आए; . . और जिस काम के करने की आज्ञा यहोवा ने हमें दी है उसके लिथे लोग उसके लिथे से भी अधिक ले आते हैं।" "तब मूसा ने आज्ञा दी, और सारी छावनी में इस बात का प्रचार करवाया गया, कि क्या पुरूष, क्या स्त्री, पवित्रस्थान के चढ़ावे के लिथे फिर से काम न करें, इसलिथे लोग देने से रोके गए" (निर्ग. 36:3-3-)। 6.) इस प्रकार दैवीय आह्वान के लिए लोगों ने इतनी अधिक उदारता के साथ जवाब दिया कि उन्हें देने से रोकना पड़ा! आत्म-त्याग का एक सुंदर उदाहरण!

इस घटना में हमारे पास स्वैच्छिक सिद्धांत का एक उदाहरण है जो मानव छुटकारे की पूरी योजना को इसके पहले महान कारण से लेकर इसके अंतिम प्रभाव तक व्याप्त करता है। "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया," और यीशु ने "हम से प्रेम किया और हमारे लिये अपने आप को दे दिया।" "अनुग्रह से, हम विश्वास के द्वारा बचाए गए हैं, और यह हमारी ओर से नहीं, यह परमेश्वर का उपहार है।" "हे हर एक प्यासे पानी के पास आओ; और जिसके पास रूपया न हो तुम आकर बिना रूपया और बिना दाम मोल लो और खाओ।" भगवान देने से प्रसन्न होते हैं। वह सब कुछ देता है - जीवन और जीवन की आपूर्तियाँ; मोक्ष; और इसकी सभी जबरदस्त लागत। और वह अपने प्राणियों की स्वेच्छा-बलि में प्रसन्न होता है। वह किसी को बाध्य नहीं करता। "पवित्र आत्मा के अप्रतिरोध्य प्रभाव" का सिद्धांत बाइबिल की प्रतिभा और भावना का विरोध करता है। यदि मसीह मानव हृदय के द्वार पर खड़ा होकर पुकारता और खटखटाता है, तो हमें स्वयं उसे खोलना चाहिए और उसे अंदर

When union sweet, and dear esteem,
In every action glows."

If it be asked, "How can Christian union be realized?" the answer is simple. Just as the Israelites committed themselves to and followed Moses as their leader and law-giver, and no one else, so we must follow Christ, and no one else. The New Testament is His law book, given for our sole guidance. By being content with that alone, without human creed or human leadership, we must inevitably all become one in faith and one in life.

CHAPTER VII

THE COVERING

THERE were four coverings for the tabernacle, laid one over another. It seems strange that there should have been so many; but perhaps their symbolism is the best explanation. I notice that the word "atonement" in the Old Testament is, in the Hebrew, a word which means a covering. This forcibly recalls the incident in relation to the fall of our first parents. We read that after their fall they were ashamed of their nakedness, and made themselves aprons of fig leaves. But God was not pleased with this covering. With His own hands, it seems, he made for Adam and his wife coats of skins, and clothed them. Now is it not reasonable to suppose that the animals which were slain to procure skins, were those first offered in sacrifice? Cain and Abel understood about sacrifices; where did they get their knowledge? Surely from their parents, who in turn obtained their information direct from God. Assuming then that this was so, how beautiful is the spectacle? While Jehovah gives the gracious promise of the seed of the woman, He gives an object lesson in the slaughter of innocent victims: and with their skins covers the shame of sinful man. Did our first parents grasp the sublime symbolism? We know not. But to us how strikingly does this incident remind us of "the Lamb of God that beareth away the sin of the world," by whose blood we have redemption and by whose righteousness our shame is covered! But after all the symbols of Christ in the Old Testament but partially set forth the Redemption which is in Christ Jesus. The use of a covering was to hide, not obliterate or erase. But in Christ our sins are "blotted out"-cleansed away. The stain, the guilt, the shame, are removed. They are remembered no more. We may not forget them, the wound is too deep and sore for us to forget. But God says, "Their sins and their iniquities will I remember no more." Not merely covered, but expunged; not merely forgiven, but forgotten. We are "justified," declared "righteous." "Being justified by faith, we have peace with God, through our Lord Jesus Christ." "He is made unto us wisdom, righteousness, sanctification, and redemption." May it not be then that the coverings of the

आने देना चाहिए; यदि परमेश्वर कहता है, "हे सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ," तो हमें स्वयं आकर पीना चाहिए। वह हमें बाध नहीं करेगा। यदि मनुष्य जीवन पाने के लिये नहीं आएंगे, तो उनका नाश होना अवश्य है। भगवान उन्हें मजबूर नहीं करेगा। उसने कहा है, "मेरे लोग मेरी शक्ति के दिन एक इच्छुक लोग होंगे।" यह वास्तव में ईसाई धर्म पर कैसे लागू होता है! पिन्तेकुस्त के दिन, लोगों ने प्रेरित पतरस की शक्तिशाली अपील के तहत "पहले अपने आप को प्रभु को दे दिया", और उसके बाद एक घटना हुई जो ऊपर वर्णित घटना के साथ आश्चर्यजनक रूप से मेल खाती है। जिस प्रकार मूसा के बुलाने पर लोग अपनी-अपनी सम्पत्ति सेंटमेंट ले आए, उसी प्रकार जब लोगों ने "आनन्द से प्रेरित का वचन ग्रहण किया, और बपतिस्मा लिया," "हमें बताया गया है कि" उनमें से किसी ने भी यह नहीं कहा कि जो कुछ भी उसके पास था, वह उसका अपना था। . . और जितने लोगों के पास घर या खेत थे, उन्होंने उन्हें बेच डाला, और बेची हुई वस्तुओं का दाम लाकर प्रेरितों के पांवों पर रख दिया, और जिस जिस को आवश्यकता हो बांट दिया गया" (प्रेरितों के काम 4:32-32) 34)। मसीह में सच्चाई ने उनके दिलों को कैसे जकड़ लिया होगा! ओह अगर विश्वासियों ने परमेश्वर के उद्धार को अभी समझ लिया है जैसा कि उन्होंने किया था, तो प्रभु के काम को आगे बढ़ाने के लिए भीख माँगने और थोड़े पैसे के लिए प्रार्थना करने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। नई वाचा में व्यवस्था कहती है "तू देगा।" परमेश्वर ने जानबूझकर हमें वैसा ही करने के लिए स्वतंत्र छोड़ा है जैसा हमारा हृदय हमें संकेत देता है। "यदि पहले एक इच्छुक मन है तो यह उसके अनुसार स्वीकार किया जाता है जो मनुष्य के पास है, न कि उसके अनुसार वह नहीं है।" " परन्तु मैं यह कहता हूँ, कि जो थोड़ा बोता है, वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा भी। हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दे; अनिच्छा से या आवश्यकता से नहीं; क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है" (2 कुरिन्थियों 8:12; 9:6-8)।

लेकिन जब हम इस प्रकार स्वतंत्र रह जाते हैं, जिसके पास हमारे लिए भगवान के "अकथनीय उपहार" के मूल्य की थोड़ी सी भी अवधारणा है, वह यह कहने को तैयार नहीं होगा कि "क्या प्रकृति की पूरी दुनिया मेरी थी जो बहुत छोटी थी, इतना अद्भुत प्यार इतना दिव्य, मेरी आत्मा, मेरा जीवन, मेरा सब कुछ मांगता है।

हम ध्यान दे सकते हैं, दूसरे स्थान पर, मिलापवाले तम्बू की जरूरतों को पूरा करने के लिए, अकेले परमेश्वर के लोगों से अपील की गई थी। यह कहा जा सकता है कि वे और कुछ नहीं कर सकते थे; लेकिन यह बहुत अधिक मान लेना होगा। यह कि वे बाहरी दुनिया से भीख नहीं मांगते थे, यह एक ऐसा तथ्य है जो पहले ईसाइयों की प्रथा के अनुरूप है। उन्होंने अन्यजातियों से सुसमाचार का प्रचार करने, या कलीसिया के निर्माण में सहायता करने के लिए कुछ भी नहीं लिया।

फिर, तीसरे स्थान पर, मिलाप वाले तम्बू में उपयोग की जाने वाली सामग्रियों की बहुमूल्यता "मसीह के अगम्य धन" की ओर इशारा करती है। उन चीजों के द्वारा जिन्हें पुरुष इतना अधिक महत्व देते

tabernacle speak of atonement? But let us examine these coverings separately.

THE COVERING OF BADGER SKINS.

The outermost covering, which hid completely all the rest, was made of badger skins (some think seal skins, others porpoise skins are intended). This material was well suited to resist the changes of weather. It was in appearance dark, rude and unattractive. From the song of Solomon, chap. 1:5, it would appear that tents, in those days, were usually made of a dark material. In a previous chapter we noticed that the tabernacle was hidden from the common gaze. But even when seen from without there was no beauty about it. Now in this exterior plainness, I think we have a most important fact set forth. 1st. As regards the person of our blessed Lord on earth. The prophet Isaiah foretold "His visage was so marred more than any man, and His form more than the sons of men" (Is. 52:14). "He shall grow up before Him as a tender plant, and as a root out of a dry ground; He hath no form nor comeliness; and when we see Him, there is no beauty that we should desire Him. He is despised and rejected of men, a man of sorrows and acquainted with grief; and as one from whom men hide their face, He was despised and we esteemed Him not." Is. 53:2,3. All this, as every Bible-reader knows, was fulfilled to the letter in Jesus the Nazarene. What wonder that the proud Jew was offended, and his ideas of propriety shocked, when the poor carpenter of Nazareth claimed to be the Messiah-the hope of Israel! Painters usually delight to represent Jesus with a majestic presence, a divine face, and a halo of light around His head. Well, I think it is very natural, but all a mistake. If He ever had any natural beauty, His exposure, poverty, sorrows and toils were more than sufficient to efface it. It is more in accord with reason and Scripture to represent His face and form marred more than is usual with the sons of men. Why was this? Because it was not His purpose to "draw the carnal eye." Not the glory of His form, but of His character and work, was to be the attraction. 2nd. The same applies to the Church of Christ. "The kingdom of heaven (of which the Church of God forms an important part) cometh not with outward show." It was not ushered into the world with pomp and grand display. The apostles, like their Master, were peasants, of lowly birth and surroundings. The Church which they built up was simplicity itself. Its attractions were essentially and wholly spiritual. It had no worldly honours to offer; but plenty of cross-bearing, poverty and suffering for Christ's sake. Its faith, its doctrine its ordinances were all alike "to them that were perishing, foolishness." Its meeting places were "caves of the earth," upper rooms or open fields. Yet it went forth conquering and to conquer. It made itself felt everywhere, from the hovel to the throne, and from one end of the earth to the other. Christianity, as it came from the hands of Christ and the Apostles was severely hostile to all the vanities of pomp

हैं, सुसमाचार का अमूल्य धन सामने आता है। यहां की सभी चीजें अनमोल हैं। यीशु अनमोल है, परमेश्वर के लिए और हमारे लिए; शांति और क्षमा अनमोल हैं; मसीह की उपस्थिति, और पवित्र आत्मा की शान्ति बहुमूल्य है; और अनन्त जीवन की महिमामय आशा अनमोल है। विश्वास करने वाले हमारे लिए सब कुछ कीमती है।

अध्याय वी

कोर्ट

वह घेरा, जिसे मिलापवाले तम्बू का आँगन कहा जाता था, 100 हाथ लम्बा और 50 हाथ चौड़ा था। रूप एक आयताकार वर्ग था। एक हाथ 1.824 फीट था। इसलिए लंबाई लगभग 185 फीट और चौड़ाई लगभग 88 फीट थी। तम्बू इस अहाते के भीतर पश्चिम छोर की ओर खड़ा था, और पूर्व की ओर था। अहाता सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े के परदे से बना था, जो पीतल के साठ खम्भों, उत्तर की ओर बीस और दक्खिन की ओर बीस, और प्रत्येक सिरे पर दस दस खम्भों से मजबूती से टिका था। खंभे पीतल की कुर्सियों में लगाए गए थे और चांदी की राजधानियों या "अध्याय" के साथ ताज पहनाया गया था। पूर्वी छोर पर "अदालत का द्वार" था, जो लगभग 35 फीट चौड़ा था। वह नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े का और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का एक सुन्दर परदा बना। फांसी चार खंभों पर टिकी हुई थी, बाकी बाड़े के साथ एक समान। इस प्रकार अहाता इतना ऊंचा था कि तम्बू को सभी की निगाहों के सामने आने से रोका जा सके सिवाय उन लोगों के जो नियत प्रवेश द्वार पर आए थे और अपने चढ़ावे के साथ प्रवेश करना चाहते थे। हम यह नहीं पढ़ते हैं कि बाड़ा सभी के लिए सुलभ था, चाहे पूजा के इच्छुक हों या नहीं; लेकिन केवल उन्हें (ऐसा लगता है) जो बलिदान देने आए थे। "गेट" की सुंदर स्क्रीन निस्संदेह बंद रखी गई थी, लेकिन हमेशा किसी भी और प्रत्येक व्यक्ति को भगवान के पास आने की इच्छा रखने के लिए आसानी से अलग कर दिया गया था।

अब हम इस बाड़े से कम से कम तीन बेहद खूबसूरत सबक सीख सकते हैं।

1. मसीह में परमेश्वर की गूढ़ बातें, "परमेश्वर के आत्मा की बातें," सभी की लापरवाह या आलोचनात्मक निगाहों के सामने उजागर नहीं होती हैं। इससे पहले कि कोई व्यक्ति उन्हें समझ सके और उनकी सराहना कर सके, उसे समझ की दूरी के भीतर आना चाहिए। परमेश्वर ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा है, और बालकों पर प्रगट किया है। विनम्र, सिखाने योग्य आत्मा और इच्छुक हृदय होना चाहिए, "यदि कोई अपनी इच्छा पूरी करेगा तो वह इस सिद्धांत को जानेगा, चाहे वह परमेश्वर की ओर से हो या मनुष्यों की ओर से।" "ईमानदार और नेक दिल" ही एकमात्र मिट्टी थी जिसमें राज्य के बीज ने जड़ पकड़ी और फल लाए। हमारे धन्य प्रभु ने यहूदियों से कहा, "तुम विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो।" अर्थात्, उनके पास उनके

and show, and its spirit is not altered. Its nature has not changed.

What then must be said of the pride and vain show of present-day churches and professors? What mean our grand buildings, painted windows, expensive organs, high salaried ministers, "fashionable congregations," but a departure from the simplicity which is in Christ Jesus? These things may win the approval of men, especially worldly men, but they weaken and paralyse the spiritual power of the church. They tone down the sharp line of demarcation between the church and the world; they lead to distinctions and respect of persons in the church according to social position; they open the way to membership without conversion. Christianity needs no such accessories. It progresses far better without them; not in gaining multitudes of admirers, but in saving men from their sins. By pandering to pride and sensuous pleasures, and by offering inducements that are not in harmony with the spirit of Christ, we defeat the high purpose of the gospel. Hence, we conclude that just as there was nothing about the exterior of the tabernacle attractive, so there should be no mere carnal and sensuous attractions connected with the Church of God.

THE INNER COVERING

For the sake of contrast, it may be well now to consider the covering as seen from within the tabernacle, or the innermost covering. Nothing could be more striking than the contrast between the outside and the inside of the tabernacle. The former, as we have seen, was dark, sombre and unattractive; but the latter was brilliantly rich and beautiful. We have seen that it had walls of pure gold. It had also finely wrought furniture of pure gold. And beside these it had a hanging for the door, which was kept close, shutting out the light of day: a veil and a covering as seen from within; all these were made of the same beautiful texture and colors. The first compartment was illuminated by the seven bright lamps of the golden lamp-stand; and the Holy of Holies was lighted by the Shekinah, a glorious light from heaven, which shone down on to the mercy seat. How enchantingly beautiful, then, must the tabernacle have been as seen from within! The inner covering was made of fine twined linen, with colors of blue, purple and scarlet; angelic figures (most probably needlework of fine gold threads) were worked on the curtains. Now all this glory, beauty, and richness is suggestive. It speaks to us of the divinity of Christ. He was "God manifest in the flesh." He had a glory, but it was spiritual, and not carnal; "we beheld His glory," says John, "the glory as of the only begotten of the Father, full of grace and truth." "Who, being the effulgence of His glory, and the very image of His substance, and upholding all things by the word of His power, when He had made purification of sins, sat down on the right hand of God" (Heb. 1:3). When Moses said to God, "I pray Thee, show

चरवाहे भेड़ों के रूप में उनका अनुसरण करने के लिए आज्ञाकारी, उपज देने वाला स्वभाव नहीं था, और इसलिए वे विश्वास नहीं कर सकते थे। यह ऐसा है कि संशयवादी बाइबिल में इतना कुछ पा सकते हैं, जबकि ईसाई हर पृष्ठ पर, हर कविता में सुंदरता देखते हैं। जो अविश्वास के कारण नाश हो रहे हैं, उनके लिथे परमेश्वर की बातें मूढ़ता हैं; परन्तु जो विश्वास करते हैं उनके लिये मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर का ज्ञान है। यह सब मिलापवाले तम्बू के आँगन के बाड़े से पूर्वाभासित प्रतीत होता है। आइए हम बुद्धिमान बनें; आओ हम द्वार पर आएँ; हम बलिदान और भेंट के साथ प्रवेश करें। "धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।" परन्तु जो विश्वास करते हैं उनके लिये मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर का ज्ञान है। यह सब मिलापवाले तम्बू के आँगन के बाड़े से पूर्वाभासित प्रतीत होता है। आइए हम बुद्धिमान बनें; आओ हम द्वार पर आएँ; हम बलिदान और भेंट के साथ प्रवेश करें। "धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।" परन्तु जो विश्वास करते हैं उनके लिये मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर का ज्ञान है। यह सब मिलापवाले तम्बू के आँगन के बाड़े से पूर्वाभासित प्रतीत होता है। आइए हम बुद्धिमान बनें; आओ हम द्वार पर आएँ; हम बलिदान और भेंट के साथ प्रवेश करें। "धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।"

2. द्वार चौड़ा था। वे सभी जो पश्चाताप और भेंट के साथ भगवान के सामने आना चाहते थे, ऐसा करने के लिए स्वतंत्र थे। इसलिए, दया का द्वार खुला हुआ है, और "जो कोई भी चाहे" प्रवेश कर सकता है। आँगन के द्वार के पर्दे के रंग विचारोत्तेजक थे। नीला बिंदु स्वर्ग की ओर; बैंगनी रॉयल्टी की बात करता है; स्कार्लेट (कृमि का अर्क) विनम्रता और पीड़ा के बारे में बताता है; शुद्ध सफेद लिनन पवित्रता का सुझाव देता है। सभी का योग यीशु मसीह में है। वह स्वर्ग से आया, जीवित परमेश्वर का राजकीय पुत्र, स्वयं को दीन करने और मृत्यु तक आज्ञाकारी बनने के लिए ताकि वह हमें अपने सबसे कीमती लहू से छुटकारा दिला सके, और उसने स्वयं को परमेश्वर के सामने निर्दोष रूप से प्रस्तुत किया। इस तरह वह "मार्ग, सत्य और जीवन है, और कोई भी व्यक्ति पिता के पास नहीं आता है, लेकिन उसके द्वारा।"

3. "अध्यक्ष" या शीर्ष जिन पर पीतल के खम्भे लगे हुए थे, वे इस्राएलियों से उनकी गिनती के अनुसार प्रायश्चित्त के रुपये से बने थे। बीस वर्ष से अधिक आयु के सभी पुरुषों को उसकी फिरौती के लिए चाँदी का आधा शेकेल देना आवश्यक था (निर्ग. 30:11-16), मूल्य 1/2। अमीरों को अधिक देने की अनुमति नहीं थी, और न ही गरीबों को कम। इस प्रकार, सभी के साधनों पर विचार करते हुए, परमेश्वर ने उन्हें सभी के लिए एक सामान्य छुटकारे की आवश्यकता भी सिखाई। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेरित इस संस्था का उल्लेख करते हुए कहते हैं, "तुम्हारा छुटकारा सोने-चाँदी जैसी नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ... परन्तु निर्दोष और निष्कलंक

me Thy glory," God answered, "I will make all My GOODNESS pass before thee." So the surpassing glory of Christ on earth was His goodness. Again, the inner glory of the tabernacle speaks to its of the inner glory of the Church. Her beauties are spiritual, and not carnal.

"The King's daughter is all glorious within." "So shall the King greatly desire thy beauty, and worship thou Him." "Thou art all fair, My love."

The holiness, heavenly mindedness, sweet humility and entire submission to the will of God, which made Jesus so beautiful on earth, are the very graces which adorn the true Church of Christ in all ages. We have previously noticed the probable meanings of the colors and figures on the hangings, the veil, and the covering.

They speak of heavenliness, humility, royal glory and purity. To understand these things we must enter, and "abide in" Christ and His Church. They cannot be appreciated or understood except practically and experimentally. Neither reason nor observation can give to us the blessedness of the sanctuary. Some things must be tasted before their sweetness can be understood. The sceptic scoffs at what, in the nature of things, he has no power to appreciate. How deeply true are the words: "O taste and see that the Lord is good; blessed is the man that trusteth in Him." And also the words of Peter: "Long for the spiritual milk, which is without guile, that ye may grow thereby unto salvation; if ye have tasted that the Lord is gracious."

Without this tasting, there cannot be this longing for the nourishing food derived from communion with God. But he who has "tasted" has his appetite sharpened, and longs to be filled from the fulness of God in Christ.

The glory of the Church is also her goodness. The teaching of Jesus and His apostles almost entirely relate to character. In the Church, the works of the flesh--"fornication, uncleanness, idolatry, covetousness, sorcery, enmities, strifes, jealousies, wraths, factions, divisions, heresies, envyings, drunkenness, revellings and such like"--are to be severely condemned and destroyed; but the fruits of the Spirit--"love, joy, peace, long-suffering, kindness, goodness, faithfulness, meekness, temperance"--are cultivated and matured, till they hang in richest profusion about the lives of the saints.

THE COVERING OF RAMS' SKINS.

Between the two coverings just described were two others. The one next to the outer covering of "badgers' skins" was made of "rams' skins dyed red." The red dye is supposed to have been extracted from a worm. This illustrates the saying of David, who was speaking for Christ, "I am a

मेघे के बहुमूल्य लोहू, अर्थात् मसीह के लोहू के द्वारा हुआ है।" और इस छुटकारे में, जैसा कि इसके चित्र में है, "परमेश्वर व्यक्तियों का कोई आदर नहीं करता है।" "कोई भेद नहीं है,

ये अध्याय, तब, लगातार इस्राएलियों को उसके छुटकारे की कीमत की याद दिलाते थे। अब मैंने बताया है कि तम्बू लापरवाह और उदासीन पर्यवेक्षक से छिपा हुआ था। परन्तु चांदी की ये टोपियां पीतल के खम्भों पर और परदे के ऊपर उठकर, सदैव दृष्टिगोचर रहेंगी। यह एक महत्वपूर्ण बिंदु सुझाता है; अर्थात्, मसीह के क्रूस को रखने की आवश्यकता, या यून कहें कि क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह को संसार के सामने रखने की आवश्यकता है। यह चर्च का कर्तव्य और विशेषाधिकार है कि वह प्रत्येक प्राणी को सुसमाचार का प्रचार करे, उन्हें मानव छुटकारे की कीमत की ओर संकेत करे। मसीह का उपदेश वह चीज है जो पापी को परमेश्वर की ओर खींचती है। "मैं, यदि मैं पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब मनुष्यों को अपने पास खींच लूंगा।" "मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, क्योंकि यह हर एक विश्वास करने वाले के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।" सुसमाचार के प्रचार में छुटकारे का मुख्य बिंदु होना चाहिए। बहुत से उपदेश खो गए हैं - बेकार हैं, क्योंकि प्रचारक महत्वपूर्ण, बचाने वाले सत्य पर ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं। दूसरी ओर, चांदी के इन मुकुटों द्वारा ईसाई के छुड़ाए गए जीवन की मूक गवाही का भी सुझाव दिया गया है। यह एक तरीका है--शायद सबसे अधिक बताने वाला--जिसमें सभी को मसीह का प्रचार करना चाहिए और करना चाहिए। "तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।" "तुम एक मूल्य के साथ खरीदे गए हो, इसलिए अपने शरीर में और अपनी आत्माओं में भगवान की महिमा करो जो उनकी हैं।" यह एक तरीका है--शायद सबसे अधिक बताने वाला--जिसमें सभी को मसीह का प्रचार करना चाहिए और करना चाहिए। "तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।" "तुम एक मूल्य के साथ खरीदे गए हो, इसलिए अपने शरीर में और अपनी आत्माओं में भगवान की महिमा करो जो उनकी हैं।" यह एक तरीका है--शायद सबसे अधिक बताने वाला--जिसमें सभी को मसीह का प्रचार करना चाहिए और करना चाहिए। "तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।" "तुम एक मूल्य के साथ खरीदे गए हो, इसलिए अपने शरीर में और अपनी आत्माओं में भगवान की महिमा करो जो उनकी हैं।"

"मेरी जान ले लो और इसे पवित्र होने दो, भगवान, तुम्हारे लिए।"

अध्याय VI

ढांचा

निवासस्थान की जमीनी योजना आकार और आंगन के अनुपात में समान थी। इसकी दीवारें बबूल की लकड़ी के अड़तालीस तख्तों

worm, and no man." A worm is loathed, and trodden under foot of man. As applied to Jesus, it sets forth His wonderful abasement for our salvation. "He was despised and rejected of men." "He was despised, and we esteemed Him not." "Though He was rich, yet for our sakes He became poor, that we through His poverty might become rich." "He was made for a little while lower than the angels, because of the sufferings of death . . . that He by the grace of God should taste death for every man." How much "lower" than the angels may be judged from the following: "Have this mind in you, which was also in Christ Jesus, who, being in the form of God, counted it not a prize to be on an equality with God, but emptied Himself, taking the form of a servant, being made in the likeness of men; and being found in fashion as a man, He humbled Himself, becoming obedient even unto death, yea, the death of the cross."

As we take the tabernacle to represent the Church as she stands related to Christ, we accordingly see in this covering a trait in the Church of the "same mind which was in Christ Jesus." Our blessed Lord sought to impress this lesson upon the disciples, before He departed from them, by a beautiful act of humility. "He took a towel and girded Himself, and began to wash the disciples' feet;" and immediately after declaring the point of this object lesson: "Ye call me Master and Lord, and ye do well, for so I am. If I, then, the Lord and the Master, have washed your feet, ye also ought to wash one another's feet; for I have given you an example that ye should do as I have done to you. Verily, verily, I say unto you, a servant is not greater than his lord, neither one that is sent greater than he that sent him. If ye know these things, blessed are ye if ye do them." We are humbled and abased by sin, but we are proud and full of conceit, and slow to learn the depth of this great truth. But it must be learned. "Except a man humble himself, and become as a little child, he cannot enter the kingdom of heaven." And this spirit of humility must be maintained. "Blessed are the poor in spirit, for theirs is the kingdom of heaven."

"He that is greatest among you, let him be servant of all." This is a hard lesson to master. But few fully accomplish the task. For the greatest to become servant of all--to take the lowest place--is indeed a great act of self-abnegation. But our Lord did it; and we should not deem it too hard to be like Him--to follow in His footsteps. O, if this lesson were fully learned and practiced, how the Church would show forth the praises of her Redeemer! Then all would seek not their own glory, but Christ's. Then all would not look on their own things, but the things of others. Each would strive to spend and be spent for the good of the Church, and for the glory of Christ.

THE GOATS' HAIR COVERING

This covering came next to the beautiful innermost covering, and therefore lay beneath the covering of rams'

से बनी थीं, जिन पर शुद्ध सोना मढ़ा गया था। ये तख्ते साढ़े सत्रह फुट लंबे और ढाई चौड़े थे।

वे चाँदी की खानों में लम्बवत् जड़े हुए थे। उसमें 96 कुर्सियाँ थीं, प्रत्येक में एक किक्कार चाँदी थी, जिसका मूल्य हमारे मुद्रा में 34,200 पाउंड होगा। हर तरफ 20 तख्ते थे और 8 पश्चिमी छोर पर। वे सोने के छल्लों और सोने से मढ़ी लकड़ी की क्षैतिज सलाखों के ज़रिए एक-दूसरे से मज़बूती से जुड़े हुए थे। पूर्वी छोर या प्रवेश द्वार पर लकड़ी के पाँच खंभे थे, जो द्वार के लिए सोने से मढ़े हुए थे। घूँघट के लिए, इमारत के अंदर एक ही सामग्री के चार खंभे तय किए गए थे, बीच से थोड़ा अधिक; जिसने "पवित्र" को "सबसे पवित्र" स्थान से विभाजित किया। संपूर्ण ढाँचा एक साथ सरल था, और फिर भी अभिव्यक्ति से परे समृद्ध था। यह आश्चर्यजनक रूप से परिस्थितियों के अनुकूल था। यह कड़ाई से वैज्ञानिक सिद्धांतों पर बनाया गया था। जबकि इसकी स्थायित्व और ताकत बहुत अधिक थी,

मिलाप वाला तम्बू ही चर्च का प्रकार था। मैं चाहता हूँ कि इसे लगातार ध्यान में रखा जाए। खैर, ऐसा होने के कारण, हम इसकी सामान्य संरचना से क्या सीख सकते हैं? पहला। कि चर्च ऑफ गॉड आश्चर्यजनक रूप से सरल और शानदार रूप से समृद्ध है; और आश्चर्यजनक रूप से सभी युगों और जलवायु में मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुकूल है। यह एक संपूर्ण प्रणाली है। चर्च ऑफ द न्यू टेस्टामेंट में सुधार करना असंभव है, हालांकि कई लोगों ने ऐसा करने की कोशिश की है। लेकिन उन्होंने अपनी मूर्खता का प्रदर्शन ही किया है। दूसरा। बोर्डों को बड़े पैमाने पर चाँदी के सॉकेट में रखा गया था, जो फिरौती के पैसे से बना था, जिसे पहले संदर्भित किया गया था; में और प्रायश्चित की कीमत पर खड़े! कैसे हम यहां फिर से चर्च ऑफ गॉड की नींव की याद दिलाते हैं। यह मसीह के प्रायश्चित पर टिका है, जो मूल्यांकन से परे है। उनकी मृत्यु से उन्होंने वह नींव रखी जिस पर चर्च बनाया गया है। "

तीसरा। झांकी की कॉम्पैक्ट एकता से ईसाई प्रणाली और जीसस क्राइस्ट के चर्च की एकता सामने आती है। जैसे प्रवेश करने का एक ही मार्ग था, और एक ही मिलाप था, वैसे ही उद्धार का एक ही मार्ग, और एक ही कलीसिया है। इफिसियों को पौलुस ने लिखा: "इसलिये मैं जो प्रभु का बन्धु हूँ, तुम से बिनती करता हूँ, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए हो, उस के योग्य चाल चलो, सारी दीनता और नम्रता सहित, धीरज धरकर, प्रेम से एक दूसरे की सह लो, मेल के बन्धन में आत्मा की एकता बनाए रखो। एक देह और एक ही आत्मा है, जैसे तुम अपनी बुलाहट की एक ही आशा से बुलाए गए हो, एक प्रभु, एक विश्वास, एक ही बपतिस्मा, एक परमेश्वर, और सब का पिता। जो सब पर, और सब में, और सब में है" (इफि. 4:1-6)। कुरिन्थियों के लिए वही प्रेरित लिखता है: "एक ही मन और एक ही न्याय से मिलकर सिद्ध बनो। "फिर से, वह कहता है:" सारी इमारत, ठीक से एक साथ बनाई गई, भगवान में एक पवित्र मंदिर (अभयारण्य) के रूप में बढ़ती है। जिसमें तुम भी आत्मा में परमेश्वर के वासस्थान के लिये एक साथ बनाए गए हो।" हमारे धन्य

skins. Goats were offered in sacrifice. On the great day of all the Israelitish year, the day of Atonement, two goats were brought as offerings. One was slain as a SIN OFFERING, and Aaron took its blood into the Holy of Holies, and sprinkled it upon the mercy seat to make atonement for all the people. The other goat was taken alive, to the edge of the camp, and Aaron laid both his hands on its head and confessed over it all the iniquities of the children of Israel, and all their transgressions, even all their sins; and he put them upon the head of the live goat, and sent it away by the hand of a man that was in readiness into the wilderness, and the goat bore upon it all their iniquities into a solitary land.

The reader will bear in mind the opening remarks, introducing this study of the coverings, as to the relation between covering and atonement. Well, it seems to me that this covering of goats' hair specially reminds us of our great, atonement. And I think, also, that there is divine teaching in the arrangement of these coverings. Their symbolic application stands in order thus--Degradation, humility, atonement, the beauty of holiness, peace and blessedness. Thus, Jesus was made in human form, in the likeness of sinful flesh, humbled Himself, died for our sins, and entered into glory. And thus also we come with all our sins and shame, in deep humility of spirit, trusting in the atoning blood of Jesus, and obtain pardon, peace, the beauty of holiness, and the glory of God.

CHAPTER VIII

THE BRAZEN ALTAR

IT will be most in harmony with the plan of this little work to consider next the objects in the court of the tabernacle.

The first of these was the altar of burnt offering. This was square in shape, and was made of accasia wood overlaid with brass. It was hollow, having neither top nor bottom; but a strong brass grating was fixed nearly midway inside to hold the fire and the sacrifice. This altar was about nine feet broad and five feet high and its place was in the court, directly opposite the "gate" of the court and the door of the tabernacle, midway between. The first thing that demands our attention is

THE FIRE

The fire of the altar of sacrifice was first kindled by a direct act of God. "And the glory of the Lord appeared unto the people, and there came out a fire from before the Lord--(probably from the pillar of fire and cloud)--and consumed upon the altar the burnt offering and the fat, which when all the people saw they shouted and fell on their faces" (Lev. 9:23-24). This was done to impress the people in the most solemn manner that the fire on that altar was God's fire; and

प्रभु ने भी इन शब्दों में प्रार्थना की: "मैं प्रार्थना करता हूँ। . . कि वे सब एक हों, जैसे तू हे पिता, मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों, जिस से जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा है।"

इस शिक्षण में कोई गलती नहीं है। परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि एक "सिर" होना चाहिए - मसीह, और "एक शरीर" - चर्च; कि "शरीर में फूट न हो," परन्तु मसीह के सब लोग एक हों; यह एकता केवल एक भावना नहीं होनी चाहिए, बल्कि एक ऐसा तथ्य है जो "दुनिया" को इसके संस्थापक की दिव्य उत्पत्ति से प्रभावित करेगा; और यह उन सभी का कर्तव्य है जो इस एकता को लाने और बनाए रखने का प्रयास करने के लिए मसीह के होने का दावा करते हैं। और कैसे कोई भी व्यक्ति जो प्रभु यीशु से प्रेम करने का दावा करता है, ऊपर उद्धृत उनकी सच्ची प्रार्थना के बावजूद, संप्रदायवाद का समर्थन या वकालत कर सकता है, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। हजारों तथाकथित ईसाई, खुद को सांप्रदायिकता के एक विशाल नेटवर्क में घिरा हुआ पाकर, इसे तोड़ने की पूरी कोशिश करने के बजाय, इसके लिए बहाने खोजने का प्रयास करते हैं, और इसके पक्ष में तर्क भी। परन्तु परमेश्वर के वचन के द्वारा इसका कभी भी बचाव नहीं किया जा सकता है। वास्तव में, शास्त्र बिना किसी अनिश्चित भाषा में इसकी निन्दा और निन्दा करते हैं। "अब मेरा मतलब यह है, कि तुम में से हर एक कहता है, कि मैं पौलुस का हूँ, और मैं अपुल्लोस का, और मैं कैफा का, और मैं मसीह का हूँ। क्या मसीह बँट गया है? क्या पौलुस तुम्हारे लिथे क्रूस पर चढ़ाया गया? पॉल का?" (1 कुरिन्थियों 1:10-13।) "और मैं, भाइयों, तुम से आत्मिक बातें नहीं कर सका, परन्तु शारीरिक और मसीह में बालकों के विषय में। सहन नहीं कर सकते; नहीं, अब भी नहीं कर सकते; क्योंकि तुम अब तक शारीरिक हो; मैं पौलुस का हूँ, और दूसरा, मैं अपुल्लोस का हूँ, क्या तुम पुरुष नहीं हो? तो अपुल्लोस क्या है? और पॉल क्या है? मंत्री (नौकर) जिनके द्वारा आपने विश्वास किया; और हर एक जैसा प्रभु ने उसे दिया" (अध्याय 3:1-5)। कुरिन्थियन चर्च में सांप्रदायिक विभाजन और पार्टि के नामों के पहले संकेत दिखाई दिए - काश वे अंतिम होते - और जल्द ही उन्होंने नहीं किया प्रेरणा की आवाज से प्रकट होने पर तुरंत उन्हें कामुक के रूप में निन्दा की, और संघ की मधुर भावना का विरोध किया जो प्रारंभिक चर्च में सांस ली गई थी। संघ शक्ति है। यह "सुंदरता की बात है, और हमेशा के लिए एक खुशी है," जब पवित्रता, पवित्रता और प्रेम बंधन हैं। भजनकार गा सकता है: "भाइयों का एक साथ रहना कितना अच्छा और कितना सुखद है! वह उस अनमोल तेल के समान है जो हारून के सिर पर बह गया, अर्थात् हारून की दाढ़ी पर उतर आया; जो उसके वस्त्र की छोर तक उतर गया;

"कितना मधुर, कितना स्वर्गीय दृश्य है, जब वे जो एक दूसरे की शांति में प्रभु से प्रेम करते हैं, प्रसन्न होते हैं, और इस प्रकार वचन को पूरा करते हैं।"

had a most awful significance. We observe here also that the fire on the altar was to be kept burning forever. "And the fire on the altar shall be burning on it. It shall not be put out . . . the fire shall be burning upon the altar, it shall never go out" (Lev. 6:12-13).

Now what does this fire signify? This burning on the altar, standing in the way of approach to the tabernacle, and holy presence? It appears to me to represent one thing, and that only--the justice of God in the punishment of sin! It indicates "the fire that never shall be quenched." It says that "sin cannot go unpunished." It says that "our God--(to sin and everything with sin upon it)--is a consuming fire"; and that "He can by no means clear the guilty." The poor sinner as he brought his innocent victim to be slaughtered and consumed upon this altar recognized his own well-merited punishment in the whole transaction, and the one idea uppermost in his mind would be SUBSTITUTION. "As this innocent lamb suffers, so should I suffer," if the Lord had not in His great mercy appointed a ransom. And thus our dear Lord in dying for us, was "made sin," "bore our sins in His own body," "made a curse for us," and was consumed by the fire of God on the altar of atonement. "He was wounded for our transgressions; He was bruised for our iniquities; the chastisement of our peace was upon him; and with His stripes we are healed. All we like sheep have gone astray; we have turned everyone to his own way; and the Lord hath laid upon Him the iniquity of us all."

THE SACRIFICES AND OFFERINGS.

These were numerous and various. Doubtless they all pointed onward to, or foreshadowed, the cross of Christ--to Him who "at the end of the ages appeared to put away sin by the sacrifice of Himself." We enter now upon a heart-searching, soul-stirring study. The place whereon we stand is holy ground; let us approach with devoutness of spirit. Let us humbly and reverently pursue our way, and may our labors be richly rewarded.

The first thing worthy of note is that all these sacrifices were to be "without spot or blemish." This represents the spotless purity of Christ. He through the eternal spirit, "offered Himself without spot to God." We are redeemed "with the precious blood of Christ, as of a lamb without blemish and without spot." The stainless and spotless purity of Christ is borne witness to in many Scriptures. He was "holy, harmless, and separate from sinners"; he "did no sin, neither was guile found in his mouth"; God "made Him to be sin for us who knew no sin, that we might be made the righteousness of God in Him"; He "was in all points tempted like as we are yet without sin"; He "died the righteous for the unrighteous that He might bring us to God"; Pilate said, "I find no fault in Him," and Jesus Himself could challenge all His foes by asking, "which of you convicteth Me of sin." Thus, Christ stands before a

जब प्रत्येक अपने भाई की आँखें महसूस कर सकता है, और उसके साथ एक भाग ले सकता है; जब आँख से आँख में दुःख बहता है, और दिल से दिल में खुशी।

ईर्ष्या, तिरस्कार और गर्व से मुक्त होने पर, हमारी सभी इच्छाएँ ऊपर हैं, हर कोई अपने भाई की कमियाँ छिपा सकता है, और भाई का प्यार दिखा सकता है।

जब प्रेम, एक रमणीय धारा में, हर हृदय से बहता है; जब मिलन मधुर हो, और प्रिय सम्मान, हर क्रिया में चमक हो।"

यदि यह पूछा जाए, "कैसे ईसाई संघ का एहसास हो सकता है?" उत्तर सीधा है। जिस प्रकार इस्राएलियों ने स्वयं को अपने अगुआ और व्यवस्था देने वाले के रूप में मूसा के प्रति समर्पित किया और उनका अनुसरण किया, और किसी और का नहीं, इसलिए हमें मसीह का अनुसरण करना चाहिए, और किसी का नहीं। नया नियम उसकी व्यवस्था की पुस्तक है, जो हमारे एकमात्र मार्गदर्शन के लिए दी गई है। मानव पंथ या मानव नेतृत्व के बिना केवल उसी से संतुष्ट होकर, हम सभी को अनिवार्य रूप से विश्वास में एक और जीवन में एक होना चाहिए।

अध्याय सातवीं

आवरण

निवास के लिये चार आवरण थे जो एक के ऊपर एक रखे हुए थे। यह अजीब लगता है कि इतने सारे होने चाहिए थे; लेकिन शायद उनका प्रतीकवाद सबसे अच्छा स्पष्टीकरण है। मैंने देखा कि पुराने नियम में "प्रायश्चित्त" शब्द इब्रानी भाषा में एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ आवरण होता है। यह हमारे पहले माता-पिता के पतन के संबंध में हुई घटना को बलपूर्वक याद करता है। हम पढ़ते हैं कि गिरने के बाद वे अपने नंगेपन पर लज्जित हुईं, और अंजीर के पत्तों का झोला बना लिया। लेकिन भगवान इस आवरण से प्रसन्न नहीं हुए। ऐसा प्रतीत होता है कि अपने हाथों से उसने आदम और उसकी पत्नी के लिए चमड़े के अंगरखे बनाए और उन्हें पहनाए। अब क्या यह मान लेना उचित नहीं है कि जिन जानवरों की खालें प्राप्त करने के लिए वध किया गया था, क्या वे पहले बलिदान में चढ़ाए गए थे? कैन और हाबिल बलिदानों के बारे में समझ गए; उन्हें अपना ज्ञान कहाँ से मिला? जरूर अपने माँ-बाप से, जिन्होंने बदले में अपनी जानकारी सीधे परमेश्वर से प्राप्त की। यह मानते हुए कि ऐसा था, तमाशा कितना सुंदर है? जबकि यहोवा स्त्री के वंश का अनुग्रहपूर्ण वचन देता है, वह निर्दोष पीड़ितों के वध में एक वस्तु सबक देता है: और उनकी खाल से पापी मनुष्य की लज्जा ढँक जाती है। क्या हमारे पहले माता-पिता ने उदात्त प्रतीकवाद को समझा? हम नहीं जानते। लेकिन हमारे लिए यह घटना कितनी आश्चर्यजनक रूप से हमें "ईश्वर के मेमने की याद दिलाती है जो जगत के पाप उठा ले जाता है," जिसके लहू से हमें छुटकारा मिला है और जिसकी धार्मिकता से हमारी लज्जा ढँकी हुई है! लेकिन

guilty world a perfectly holy and immaculate sacrifice, offering Himself to God as our all-sufficient Redeemer; a beautiful example for our imitation; whose spotless character acts as a charm and inspiration to the poor sin-burdened soul. And under that charm and that inspiration the classes:--"Burnt offerings," "sin offerings," "trespass offerings," "peace offerings," "meat offerings," "drink offerings," and offerings for "sins of ignorance." We shall only have space to notice a few of these.

1. **The Burnt Offering**--This might be a bullock, a ram, a goat, a dove or a pigeon, according to the means of the offerer, as noted above. One was just as acceptable to God as the other, if it represented the means of the offerer. In all cases it must be a male without blemish. The offering of the bullock was perhaps the most impressive. It was to be slain "at the door of the tent of meeting," thus indicating that the only way of access to God is through the crucified Saviour. The offerer was to "lay his hand upon the head of the burnt offering," thereby in the most expressive manner declaring his faith in God, his heartfelt repentance and prayer that the innocent victim might be accepted in the place of him, the guilty sinner. Thus in the "new and living way" to God the convicted sinner lays his hand of faith on God's own appointed sacrifice, and full of penitence believes that the agonies and death of Jesus are accepted in place of the doom which he so fully deserves. The offerer, it seems, was required to kill the victim with his own hands. The method of killing a beast among the Jews, to this day, is to draw a large and exceedingly sharp knife across the throat so as to sever the main blood vessels at one stroke. This method ensures the speedy death of the animal and the complete draining out of its life-blood. This free effusion of blood thus effected, forcibly reminds us of the words of Isaiah, "He hath poured out His soul (life) unto death." The offerer killing the beast with his own hand indicates in the most striking manner possible, the relation between the offerer and the death of his substitute. The truth intended is the fact that OUR SINS caused the death of Christ as much so as if we had been his actual murderers. It is a tremendous truth that I am so involved in the tragedy of the cross that I am either guilty of the awful deed, or redeemed by it. If I reject Christ, I take sides with those who cried "Crucify Him; crucify Him"; but if I receive Him, His precious blood cleanses my guilty soul from all its stains.

The next thing to be done was for Aaron's sons to take the blood of the victim and sprinkle it round about the altar. In this we have an illustration of the words "We are come . . . to the blood of sprinkling, that speaks better things than that of Abel." Also, "Having our hearts sprinkled from an evil conscience."

Then followed the flaying of the animal, and cutting it in pieces, washing the inwards and legs and placing the whole in order upon the fire on the altar. It has been truly remarked

पुराने नियम में मसीह के सभी प्रतीकों के बाद लेकिन आंशिक रूप से उस मोचन को निर्धारित किया जो मसीह यीशु में है। आवरण का उपयोग छिपाने के लिए होता था, मिटाने या मिटाने के लिए नहीं। परन्तु मसीह में हमारे पाप "मिटा दिये जाते हैं" - साफ कर दिये जाते हैं। दाग, अपराधबोध, शर्म, हटा दिए गए हैं। अब उनकी याद नहीं आती। हम उन्हें भूल नहीं सकते, घाव बहुत गहरा है और हमें भूलने के लिए पीड़ादायक है। परन्तु परमेश्वर कहते हैं, "मैं उनके पापों और उनके अधर्म के कामों को फिर स्मरण न करूंगा।" न केवल कवर किया गया, बल्कि मिटा दिया गया; न केवल क्षमा किया गया, बल्कि भुला दिया गया। हम "धर्मी" हैं, घोषित "धर्मी" हैं। "विश्वास से धर्मी ठहरकर, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखते हैं।" "वह हमारे लिए ज्ञान, धार्मिकता, पवित्रता और मुक्ति बना है।" क्या ऐसा नहीं है कि तम्बू के आवरण प्रायश्चित की बात करते हैं? लेकिन आइए हम इन आवरणों की अलग से जाँच करें। लेकिन निष्कासित; न केवल क्षमा किया गया, बल्कि भुला दिया गया। हम "धर्मी" हैं, घोषित "धर्मी" हैं। "विश्वास से धर्मी ठहरकर, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखते हैं।" "वह हमारे लिए ज्ञान, धार्मिकता, पवित्रता और मुक्ति बना है।" क्या ऐसा नहीं है कि तम्बू के आवरण प्रायश्चित की बात करते हैं? लेकिन आइए हम इन आवरणों की अलग से जाँच करें। लेकिन निष्कासित; न केवल क्षमा किया गया, बल्कि भुला दिया गया। हम "धर्मी" हैं, घोषित "धर्मी" हैं। "विश्वास से धर्मी ठहरकर, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखते हैं।" "वह हमारे लिए ज्ञान, धार्मिकता, पवित्रता और मुक्ति बना है।" क्या ऐसा नहीं है कि तम्बू के आवरण प्रायश्चित की बात करते हैं? लेकिन आइए हम इन आवरणों की अलग से जाँच करें।

बेजर की खाल को ढंकना।

सबसे बाहरी आवरण, जो पूरी तरह से बाकी सभी को छुपाता था, बेजर की खाल से बना था (कुछ सोचते हैं कि सील की खाल, अन्य पोरपोईस की खाल का इरादा है)। यह सामग्री मौसम के परिवर्तन का विरोध करने के लिए उपयुक्त थी। यह दिखने में काला, असभ्य और अनाकर्षक था। सुलैमान के गीत से, अध्या. 1:5, ऐसा प्रतीत होता है कि उन दिनों तंबू आमतौर पर काले रंग के पदार्थ से बने होते थे। पिछले अध्याय में हमने देखा कि मिलाप का तम्बू आम लोगों की नज़रों से छिपा हुआ था। लेकिन बाहर से देखने पर भी उसमें कोई सुंदरता नहीं थी। अब इस बाहरी स्पष्टता में, मुझे लगता है कि हमारे पास एक सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है। पहला। जैसा कि पृथ्वी पर हमारे धन्य भगवान के व्यक्ति के संबंध में है। भविष्यवक्ता यशायाह ने भविष्यवाणी की थी "उसका रूप मनुष्य से अधिक बिगड़ा हुआ था, और उसकी सुन्दरता मनुष्यों से अधिक बिगड़ी हुई थी" (यशायाह 52:14)। "वह उसके सामने कोमल पौधे के समान बड़ा होगा, और ऐसी जड़ के समान जो निर्जल भूमि में फूट निकले; उसका न तो रूप है और न रूप। और जब हम उसे देखते हैं, तो उसमें कोई सुन्दरता नहीं होती कि हम उसकी इच्छा करें। वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्याग हुआ है, वह दुःखी पुरुष और दुःख से उसकी जान पहिचान है; और लोग उस

that, in hot seasons especially, the sight and smell of so much blood, and the slaughtered beasts laid open to the sun, must have been most sickening and revolting, and that which was revolting to man's nature could hardly have given any pleasure to God. And so it is declared, "I delight not in burnt offerings," and "sacrifice and offering Thou hast no delight in." Why, then, were they appointed? SIN necessitated them! Sin required a sufficient and appropriate remedy; it must be exposed in all its hideousness; and guilty man needed to be deeply impressed with the nature of sin and the punishment it merits.

Turning to the antitype--the death of Jesus--the same thing intensified meets our view. How horribly sickening and revolting must have been the sight of the crucifixion! Some men can be found brutal enough--perhaps the soldiers and the rulers of the Jews were--to find pleasure in witnessing such sights, but none else. God Himself drew a thick veil of darkness over the scene, as if to shut out the awful sight from the angels.

The sight of Jesus suffering, dying, must have made many hearts faint. Already his back had been ploughed up by the terrible scourge; His brow was pierced and torn with the crown of thorns; blood stained His vesture, His face, His body; and now, weak and faint from pain and loss of blood, trembling and emaciated, the beginning of the end has come. They strip Him naked, exposing His open wounds and blood-stained body. He is thrown to the earth and His hands and feet nailed to the rude cross. He is now lifted up between earth and heaven, and there He hangs for six hours, till death's shadows creep over face and form. The body is now ghastly in death's awful embrace! What a spectacle! Who in heaven or earth could look upon it without horror! It was a terrible, revolting sight. God seemed to frown by palling the heavens; to groan, by rending the earth and the rocks. But it was necessary. Without the shedding of His blood there could be no remission. To make us righteous HE must be accursed.

2. The Sin Offering of Ignorance.--The law required an offering for the sin of ignorance. It differed from the burnt offering in the following respects. The whole of the fat was to be carefully removed from the "inwards," and burnt upon the altar; but the entire carcass was to be carried without "unto a clean place, where the ashes are poured out, and (there) burnt on wood with fire." This seems to be intended to show how intensely abominable sin is to God--even in its mildest form, i. e., when committed in ignorance. The writer of the epistle to the Hebrews (chap. 13:11-13) refers to the crucifixion of Christ outside the city wall as the antitype of this sacrifice, and recognizes the shame attaching thereto. "For the bodies of those beasts, whose blood is brought into the holy place by the high priest as an offering for sin, are burned without the camp. Wherefore Jesus also, that He might sanctify the people through His

से मुंह फेर लेते थे, वह तुच्छ जाना गया, और हम ने उसका मूल्य न जाना। जब नाज़रेथ के गरीब बढ़ई ने इस्राएल की आशा-मसीहा होने का दावा किया, तो घमंडी यहूदी नाराज हो गया, और औचित्य के उसके विचार चौंक गए! चित्रकार आमतौर पर एक राजसी उपस्थिति, एक दिव्य चेहरे और एक प्रभामंडल के साथ यीशु का प्रतिनिधित्व करने में प्रसन्न होते हैं उसके सिर के चारों ओर प्रकाश। ठीक है, मुझे लगता है कि यह बहुत स्वाभाविक है, लेकिन सब एक गलती है। अगर उसके पास कभी कोई प्राकृतिक सुंदरता थी, तो उसका जोखिम, गरीबी, दुख और परिश्रम उसे मिटाने के लिए पर्याप्त थे। यह उसके चेहरे और रूप का प्रतिनिधित्व करने के लिए कारण और पवित्रशास्त्र के अनुरूप है जो पुरुषों के पुत्रों के साथ सामान्य से अधिक है। यह क्यों था? क्योंकि उसका उद्देश्य "शारीरिक दृष्टि को आकर्षित करना" नहीं था। उनके रूप की महिमा नहीं, उनके चरित्र और कार्य का आकर्षण होना था। दूसरा। यही बात चर्च ऑफ क्राइस्ट पर भी लागू होती है। "स्वर्ग का राज्य (जिसका चर्च ऑफ गॉड एक महत्वपूर्ण हिस्सा है) बाहरी दिखावे के साथ नहीं आता है।" यह धूमधाम और भव्य प्रदर्शन के साथ दुनिया में नहीं आया था। प्रेरित, अपने गुरु की तरह, निम्न जन्म और परिवेश के किसान थे। उन्होंने जिस चर्च का निर्माण किया, वह स्वयं सादगीपूर्ण था। इसके आकर्षण अनिवार्य रूप से और पूर्ण रूप से आध्यात्मिक थे। उसके पास देने के लिए कोई सांसारिक सम्मान नहीं था; लेकिन मसीह के लिए क्रॉस-असर, गरीबी और पीड़ा बहुत है। इसका विश्वास, उसके सिद्धांत और उसके नियम सब "नाश होने वालों की मूढ़ता" के समान थे। इसके मिलन स्थल "पृथ्वी की गुफाएँ", ऊपरी कमरे या खुले मैदान थे। फिर भी वह जीतता हुआ और जीतता चला गया। झोपड़ी से सिंहासन तक, और पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक, इसने हर जगह स्वयं को महसूस किया। ईसाई धर्म, जैसा कि यह मसीह और प्रेरितों के हाथों से आया था, धूमधाम और दिखावे के सभी घमंड के लिए गंभीर रूप से शत्रुतापूर्ण था, और इसकी भावना नहीं बदली है। इसकी प्रकृति नहीं बदली है। जैसा कि यह मसीह के हाथों से आया था और प्रेरित धूमधाम और दिखावे के सभी घमंड के प्रति गंभीर रूप से शत्रुतापूर्ण थे, और इसकी भावना नहीं बदली है। इसकी प्रकृति नहीं बदली है। जैसा कि यह मसीह के हाथों से आया था और प्रेरित धूमधाम और दिखावे के सभी घमंड के प्रति गंभीर रूप से शत्रुतापूर्ण थे, और इसकी भावना नहीं बदली है। इसकी प्रकृति नहीं बदली है।

तो फिर वर्तमान कलीसियाओं और प्रोफेसरों के गर्व और व्यर्थ के प्रदर्शन के बारे में क्या कहा जाना चाहिए? हमारे भव्य भवन, रंगी हुई खिड़कियाँ, महँगे अंग, उच्च वेतनभोगी सेवक, "फैशनबल कलीसियाएँ", लेकिन उस सादगी से प्रस्थान जो मसीह यीशु में है, का क्या अर्थ है? ये बातें मनुष्यों, विशेष रूप से सांसारिक पुरुषों की स्वीकृति प्राप्त कर सकती हैं, लेकिन वे चर्च की आध्यात्मिक शक्ति को कमजोर और पंगु बना देती हैं। वे चर्च और दुनिया के बीच सीमांकन की तेज रेखा को कम करते हैं; वे सामाजिक स्थिति के अनुसार चर्च में व्यक्तियों के भेद और सम्मान की ओर ले जाते हैं; वे बिना रूपांतरण के सदस्यता का रास्ता खोलते हैं। ईसाइयत को ऐसे किसी सामान की जरूरत नहीं है। यह उनके बिना कहीं

own blood, suffered without the gate. Let us therefore go forth unto Him without the camp, bearing His reproach." He "became sin for us," bearing its shame and punishment. Let us therefore be willing to share His shame and reproach. The shame of the cross has not ceased. Those who follow their Lord in all things are as much despised as ever. But they are content to endure their cross, despising the shame, like their divine Master, and wait patiently for the great day of their vindication. The shame is really on the other side. So, Peter writes: "Let none of you suffer as a murderer, or a thief, or an evildoer, or as a meddler in other men's matters; but if any man suffer as a Christian let him not be ashamed, but let him glorify God in this name."

In this offering for the sin of ignorance there is a solemn lesson for the careless and indolent who profess to believe in Christ. A very large number of these entirely neglect the study of God's holy word, and take for granted their perfectly safe standing in Christ; but if asked for "a reason for the hope that is in them," would be confused and at a loss for a satisfactory answer. They heard a voice, or they felt a change, or they appropriated a text, which perhaps was never intended for them, or they "trusted in Christ." They doubted no more: it had been sinful to doubt. But they did not take the trouble to TEST their standing by the Scriptures of truth; they did not "search and see." What wonder that many go blindly on, with a sense of self-security, while at the same time they are committing the sin of ignorance. The writer once met a preacher of the gospel who declared that he was living absolutely without sin; he had reached the exalted state of "perfect sanctification." I asked him a few questions relative to some of the positive commands of Jesus Christ. He acknowledged that he was living in utter neglect of them--had not given them much thought, and regarded them as unnecessary! That man was committing the sin of ignorance every day, a sin far more heinous and culpable than any under the law of Moses. This sin needs the atonement of Christ as much as any other form of wickedness; and to remove it it is needful to "search the Scriptures."

3. The Sacrifice of the Red Heifer. In the 19th chap. of Numbers is given full particulars of this sacrifice. The animal was to be red all over, and "without spot." Eleazar the priest was to take her forth without the camp, and there cause her to be slain. He was then to take of her blood and with his finger sprinkle it before the door of the tabernacle seven times. He was then to cause her entire body to be burnt to ashes, and into the midst of the fire he was to cast "cedar wood, and hyssop, and scarlet." The ashes of the heifer were to be laid up in a clean place, and, when required to be used, were to be mixed with spring or running water. This was "the water of purification," which was used to purify persons from all kinds of fleshly defilement.

बेहतर प्रगति करता है; बहुत सारे प्रशंसक बनाने के लिए नहीं, बल्कि लोगों को उनके पापों से बचाने के लिए। गर्व और कामुक सुखों को बढ़ावा देकर, और प्रलोभन देकर जो मसीह की आत्मा के अनुरूप नहीं हैं, हम सुसमाचार के उच्च उद्देश्य को पराजित करते हैं। इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि जैसे मिलापवाले तम्बू के बाहरी हिस्से में कुछ भी आकर्षक नहीं था, वैसे ही चर्च ऑफ गॉड से जुड़े कोई मात्र कामुक और कामुक आकर्षण नहीं होने चाहिए।

भीतरी आवरण

इसके विपरीत के लिए, यह अच्छा हो सकता है कि अब उस आवरण पर विचार किया जाए जैसा कि तम्बू के भीतर से देखा जाता है, या सबसे भीतरी आवरण। मिलापवाले तम्बू के बाहर और भीतर के बीच के अंतर से अधिक आश्चर्यजनक कुछ नहीं हो सकता। पूर्व, जैसा कि हमने देखा है, अंधेरा, उदास और अनाकर्षक था; लेकिन बाद वाला शानदार ढंग से समृद्ध और सुंदर था। हमने देखा है कि इसकी दीवारें शुद्ध सोने की थीं। इसमें शुद्ध सोने का बारीक-बारीक फर्नीचर भी बनाया गया था। और इनके अलावा उस में द्वार के लिथे एक पर्दा था, जो दिन के उजियाले को बन्द करने के लिथे बन्द रहता था; ये सभी एक ही सुंदर बनावट और रंगों से बने थे। पहला डिब्बा सोने के दीवट के सात चमकीले दीपों से प्रकाशित था; और परमपवित्र स्थान शकीना द्वारा प्रकाशित किया गया था, स्वर्ग से एक शानदार प्रकाश, जो दया के आसन पर चमक रहा था। तो फिर, निवासस्थान भीतर से कितना मनोहर रूप से देखा गया होगा! भीतरी आवरण बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का बना, और उस में नीले, बैजनी और लाल रंग का रंग था; पर्दों पर स्वर्गदूतों की आकृतियाँ (संभवतः महीन सोने के धागों की सुई का काम) का काम किया गया था। अब यह सारी महिमा, सुंदरता और समृद्धि विचारोत्तेजक है। यह हमें मसीह की दिव्यता के बारे में बताता है। वह "देह में प्रकट हुआ परमेश्वर" था। उसकी एक महिमा थी, परन्तु वह आत्मिक थी, न कि शारीरिक; यूहन्ना कहता है, "हमने उसकी महिमा देखी," अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण पिता के एकलौते की महिमा।" "जो उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व का प्रतिबिम्ब होकर, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है, और वह पापों को धोकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा" (इब्रानियों 1)। : 3)। जब मूसा ने परमेश्वर से कहा, "मैं तुझ से प्रार्थना करता हूँ, तो मुझे अपनी महिमा दिखा," परमेश्वर ने उत्तर दिया, "मैं अपनी सारी अच्छाई को तेरे साम्हने से पार करूँगा।" अतः पृथ्वी पर मसीह की अतुलनीय महिमा उसकी भलाई थी। फिर से, मिलाप वाले तम्बू की आंतरिक महिमा गिरजे की आंतरिक महिमा के बारे में बोलती है। उसकी सुंदरता आध्यात्मिक है, न कि शारीरिक।

"राजा की बेटी भीतर सभी गौरवशाली है।" "इस प्रकार राजा तेरी सुन्दरता की अति अभिलाषा करेगा, और तुझे दण्डवत् करेगा।" "तू सब ठीक है, मेरी जान।"

This sacrifice of the red heifer affords us another great type of the sacrifice of Christ. Its color--red all over--points to the intensity and fulness of His sufferings in our behalf. He was submerged in them. He said: "I have a baptism to be baptized with, and how am I straitened till it be accomplished!" Baptism is never sprinkling; it is a complete overwhelming. Christ was completely overwhelmed in suffering. "All thy waves and thy billows have gone over me."

The heifer was "without spot," and no yoke had been upon it. It was never in the service of man, but entirely reserved for God. The entire devotion of Jesus to the service of God may be here indicated. He said: "I delight to do Thy will, O God;" "My meat and drink is to do the will of Him that sent Me, and to finish His work." She was burnt entire; the whole carcass was consumed to ashes. Of Jesus we read: "Not a bone of Him shall be broken." His was, as it were, a "whole burnt offering." Spirit, soul, body, all "consumed" in agony and death. The "cedar wood, and hyssop, and scarlet" may point to the extreme bitterness of the cup which His Father gave Him to drink. We may judge of its bitterness by Gethsemane. His bitter cry, "My Father, if it be possible, let this cup pass from Me," and His blood-like sweat, are the signs of the agony of soul which the dear Saviour bore. The ashes and water of purification point to the power of the blood of Jesus to cleanse us from sins, and separate us to the service of God. "For if," says the inspired penman, "the blood of goats and bulls, and the ashes of a heifer, sprinkling them that have been defiled, sanctify unto the cleanness of the flesh, how much more shall the blood of Christ, who through the eternal Spirit offered Himself without blemish unto God, cleanse your conscience from dead works to serve the living God."

This interesting theme of sacrificial types and shadows might be pursued much further; but we have gone far enough for our space and the patience of the reader. No doubt can be entertained as to the typical character of these offerings, made year by year and day by day. They all pointed onward to the one great sacrifice of Christ. And now, looking back from our vantage ground, how sweet to sing:

Before the building of the tabernacle, it was lawful to offer sacrifice anywhere, but afterwards there was only one spot and one altar on which sacrifices might be offered: that was on the altar right before the door of the tabernacle. So there is one place--Calvary, and one offering--Christ crucified, to which we may now come and find salvation. "I am the way, the truth, and the life; no man cometh unto the Father but by Me." "There is none other name given among men whereby we must be saved."

CHAPTER IX

पवित्रता, स्वर्गीय मन, मधुर विनम्रता और ईश्वर की इच्छा के प्रति संपूर्ण समर्पण, जिसने यीशु को पृथ्वी पर इतना सुंदर बना दिया, वे सभी युगों में मसीह के सच्चे चर्च को सुशोभित करते हैं। हमने पहले पर्दे, घूंघट और आवरण पर रंगों और आकृतियों के संभावित अर्थों पर ध्यान दिया है।

वे स्वर्गत्व, विनम्रता, राजसी वैभव और पवित्रता की बात करते हैं। इन बातों को समझने के लिए हमें प्रवेश करना चाहिए, और मसीह और उसके गिरजे में "निवास" रखना चाहिए। व्यावहारिक और प्रयोगात्मक रूप से छोड़कर उन्हें न तो सराहा जा सकता है और न ही समझा जा सकता है। न तो कारण और न ही अवलोकन हमें पवित्र स्थान का आशीर्वाद दे सकता है। कुछ चीजों की मिठास समझने से पहले उन्हें चखना जरूरी है। संशयवादी किस बात का उपहास करता है, चीजों की प्रकृति में, उसके पास सराहना करने की शक्ति नहीं है। ये शब्द कितने गहरे सच हैं: "परखकर देखो कि यहोवा भला है; क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो उस पर भरोसा रखता है।" और पतरस के शब्द भी: "आध्यात्मिक दूध की लालसा करो, जो निष्कपट है, ताकि तुम उसके द्वारा उद्धार के लिये बढ़ सको, यदि तुम ने चखा है कि प्रभु अनुग्रहकारी है।"

इस चखने के बिना, ईश्वर के साथ संवाद से प्राप्त पौष्टिक भोजन की यह लालसा नहीं हो सकती। परन्तु जिस ने "चख" लिया है उसकी भूख तेज हो गई है, और वह मसीह में परमेश्वर की परिपूर्णता से परिपूर्ण होना चाहता है।

चर्च की महिमा भी उसकी अच्छाई है। यीशु और उसके प्रेरितों की शिक्षा लगभग पूरी तरह से चरित्र से संबंधित है। चर्च में, मांस के कार्य - "व्यभिचार, अस्वच्छता, मूर्तिपूजा, लोभ, जादू-टोना, शत्रुता, कलह, ईर्ष्या, क्रोध, गुट, विभाजन, विधर्म, ईर्ष्या, मादकता, लीला-क्रीड़ा और इसी तरह" - होने हैं कड़ी निंदा की और नष्ट कर दिया; लेकिन आत्मा के फल - "प्रेम, आनंद, शांति, दीर्घ-पीड़ा, दया, अच्छाई, विश्वास, नम्रता, संयम" - खेती और परिपक्व होते हैं, जब तक कि वे संतों के जीवन के बारे में सबसे समृद्ध प्रचुरता में न हों।

मेढ़ों की खाल का ओढ़ना।

अभी वर्णित दो आवरणों के बीच दो अन्य थे। "बैजर की खाल" के बाहरी आवरण के बगल में "मेढ़े की खाल को लाल रंग से रंगा गया था।" माना जाता है कि लाल रंग कीड़ा से निकाला गया था। यह दाऊद के कथन को दर्शाता है, जो मसीह के लिए बोल रहा था, "मैं एक कीड़ा हूँ, और कोई मनुष्य नहीं।" कीड़े से घृणा की जाती है, और मनुष्य के पैरों तले रौंदा जाता है। जैसा कि यीशु पर लागू किया गया है, यह हमारे उद्धार के लिए उसकी अद्भुत नीचता को दर्शाता है। "वह तुच्छ जाना जाता था और मनुष्यों का त्याग हुआ था।" "वह तुच्छ जाना गया, और हम ने उसका मूल्य न जाना।" "वह धनी होकर भी हमारे लिये कंगाल बन गया, कि हम उसके कंगाल हो जाने से धनी हो जाएं।" "वह मृत्यु के कष्टों के कारण, कुछ समय के लिए स्वर्गदूतों से भी कम किया गया... कि वह

THE LAVER

BETWEEN the altar of burnt offering and the door of the Tabernacle stood the Laver. It was made of the brass mirrors of the "serving women." No account is given of its size and shape. It must have been of considerable dimensions, as it was used for the priests to bathe in. For the priests to attempt to enter the tabernacle without washing at the laver was to incur instant death. What does this laver represent? That it betokens something very important is evident from the awful penalty the priest incurred who despised or neglected it. In answering this question, I wish to draw special attention to a passage in Ep. 6:25-27. "Husbands love your wives, even as Christ also loved the church, and gave Himself up for it; that he might sanctify it, having cleansed it by the washing of water with the word," &c. Here is an evident reference to the sanctification of the priest at the laver, which helps us to a right understanding of its significance. The laver represents two things inseparably joined together--"The Water with the Word."

1. The "Word" is indicated by the substance of which the laver was formed--the mirrors of the serving women. The purpose of a mirror is to reflect one's likeness. The word of God is compared to a mirror by the Apostle James. "For if anyone is a hearer of the word and not a doer, he is like unto a man beholding his natural face in a mirror, for he beholdeth himself, and goeth away, and straightway forgetteth what manner of man he was. But he that looketh into the perfect law, the law of liberty, and so continueth, being not a hearer that forgetteth, but a doer that worketh, this man shall be blessed in his doings" Jam. 1:23-25. This is a striking and beautiful illustration of the word of God. It shows us ourselves; it exposes our naked deformity--the corrupt state of our hearts--in the sight of God, and thus leads us to seek cleansing and renewing. The word of God holds a most important place in saving the sinner. We are "begotten" by the word. David said: "Thy word quickeneth me;" "Faith cometh by hearing the word of God;" It is--"the sword of the spirit," and "is living and active, and sharper than any two-edged sword." There are some who say that the word of God is a "dead letter," but no one can say so truthfully in the light of these scriptures.

2. The "water" in the above scripture (Ep. 5) refers to the Christian institution of baptism. All scholars are agreed in this; and indeed, it is impossible to doubt it when the place and design of baptism, as taught in the New Testament is understood. Let us see. Baptism is in water. "See here is water, what doth hinder me to be baptized," "Can any man forbid the water, that these should not be baptized." Baptism is a washing (or bathing); "Arise, and be baptized, and wash (bathe) away thy sins, calling upon His name." Baptism is only to be administered to the penitent believer. "He that believeth and is baptized shall be saved," "Repent

परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखें।"

जैसा कि हम तम्बू को चर्च का प्रतिनिधित्व करने के लिए लेते हैं क्योंकि वह मसीह से संबंधित है, हम इसके अनुसार "उसी मन जो मसीह यीशु में था" के चर्च में एक विशेषता को कवर करते हुए देखते हैं। हमारे धन्य प्रभु ने विनम्रता के एक सुंदर कार्य द्वारा शिष्यों पर इस पाठ को प्रभावित करने की कोशिश की, इससे पहले कि वह उनसे विदा लेते। "उसने अंगोछा लिया और कमर बान्धी, और चेलों के पांव धोने लगा।" और तुरंत इस वस्तु पाठ की बात की घोषणा करने के बाद: "तुम मुझे मास्टर और भगवान कहते हो, और तुम अच्छा करते हो, क्योंकि मैं ऐसा ही हूँ। यदि मैं, भगवान और मास्टर ने तुम्हारे पैर धोए हैं, तो तुम्हें भी धोना चाहिए।" एक दूसरे के पैर; क्योंकि मैंने तुम्हें एक उदाहरण दिया है कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है वैसा ही तुम भी करो। मैं तुम से सच सच कहता हूँ, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, और न भेजा हुआ अपने भेजने वाले से बड़ा होता है। उसका।

"जो तुम में बड़ा है, वह सब का सेवक बने।" यह मास्टर करने के लिए एक कठिन सबक है। लेकिन कुछ पूरी तरह से कार्य पूरा करते हैं। सबसे बड़े के लिए सभी का नौकर बनना - सबसे निचली जगह लेना - वास्तव में आत्म-त्याग का एक महान कार्य है। परन्तु हमारे प्रभु ने यह किया; और हमें यह नहीं समझना चाहिए कि उसके जैसा बनना--उसके पदचिन्हों पर चलना बहुत कठिन है। ओह, अगर इस पाठ को पूरी तरह से सीखा और अभ्यास किया जाता, तो चर्च अपने उद्धारक की प्रशंसा कैसे करता! तब सब अपनी महिमा नहीं, परन्तु मसीह की चाहते हैं। तब सभी अपनी बातों को नहीं, बल्कि दूसरों की बातों को देखेंगे। प्रत्येक चर्च की भलाई के लिए, और मसीह की महिमा के लिए खर्च करने और खर्च करने का प्रयास करेगा।

बकरियों के बालों को ढकना

यह आवरण सुंदर अंतरतम आवरण के बाद आया, और इसलिए मेढ़ों की खाल के आवरण के नीचे स्थित था। कुर्बानी में बकरे चढ़ाए गए। पूरे इस्राएली वर्ष के विशेष दिन, प्रायश्चित्त के दिन, दो बकरे भेंट के लिये चढ़ाए जाते थे। एक तो पापबलि के लिये वध किया गया, और हारून ने उसका लोहू परमपवित्र स्थान में ले जाकर प्रायश्चित्त के ढकने पर छिड़क दिया, कि सब लोगोंके लिये प्रायश्चित्त करे। और दूसरा बकरा जीवित होकर छावनी के सिरे पर ले जाया गया, और हारून ने उसके दोनोंहाथ उसके सिर पर रखे, और इस्त्राएलियोंके सब अधर्म के कामोंऔर उनके सब अपराधोंऔर सब पापोंको मान लिया; और उस ने उनको जीवित बकरे के सिर पर धर दिया, और उसको एक मनुष्य के हाथ जो तैयार था जंगल में भेज दिया, और वह बकरी अपने ऊपर उनके सारे अधर्म के कामों को उठा ले गई, और एकान्त देश में चली गई।

and be baptized every one of you in the name of the Lord Jesus for the remission of your sins." Baptism admits into the "one, body," the church. "Ye are all baptized into one body." Baptism is in order to "salvation" or "remission of sins." See Mark 16:15-16; Acts 2:28.

We conclude then that the water of the laver before the door of the tabernacle represents baptism. We do so because it can represent nothing else, and because the analogy is complete. This will appear still more conclusively in the next chapter. Just now I want to show the two-fold type-- "The water with the word." In Tit. 3:5 we read, "According to His mercy He saved us through the washing (marg., laver) of regeneration and renewing of the Holy Ghost." We have seen that the word of God is the "sword of the spirit," i. e., it is the means used by the Holy Spirit in conversion. Hence what the word does the spirit does. In the above text then we have the truth established that the word and the water are inseparable in regeneration. The same truth is taught by Jesus, "Except a man be born of water and the spirit he cannot enter into the kingdom of God" (John 3:5).

CHAPTER X

THE PRIESTHOOD

THE Levitical Priesthood was typical of the Christian Priesthood. "Ye also as living stones, are built up a spiritual house, to be a holy priesthood, to offer up spiritual sacrifices, acceptable to God through Jesus Christ," I Peter 2:5. Also verse 9 "But ye are an elect race, a royal priesthood, a holy nation, a people for God's own possession." "Worthy art thou to take the book, and to open the seals thereof, for thou wast slain, and didst purchase unto God with Thy blood, men of every tribe, and tongue, and people, and nation, and madest them to be unto our God a kingdom and priests, and they reign on the earth" Rev. 5:9, 10. "Having therefore, brethren, boldness to enter into the holy place by the blood of Jesus, by the way which he dedicated for us, a new and living way, through the veil, that is to say his flesh; and having a great high priest over the house of God, let us draw near with a true heart, in fulness of faith, having our hearts sprinkled from an evil conscience, and our body washed with pure water" Heb. 10:19, 20. "We have an altar whereof they have no right to eat which serve the tabernacle" Heb. 13:10. Also verse 15:11 "Through him, therefore, let us offer up a sacrifice of praise to God continually, that is, the fruit of lips which make confession to his name."

These scriptures teach:

1. That all Christians are priests unto God in Christ. There is therefore no such thing as a class priesthood, such as obtains in the Church of Rome and the Church of England.

पाठक आवरण और प्रायश्चित के बीच के संबंध के रूप में, आवरणों के इस अध्ययन का परिचय देते हुए, प्रारंभिक टिप्पणियों को ध्यान में रखेंगे। खैर, मुझे ऐसा लगता है कि बकरियों के बालों का यह आवरण हमें विशेष रूप से हमारे महान प्रायश्चित की याद दिलाता है। और मुझे यह भी लगता है कि इन आवरणों की व्यवस्था में ईश्वरीय शिक्षा है। उनका प्रतीकात्मक अनुप्रयोग इस प्रकार क्रम में है - पतन, विनम्रता, प्रायश्चित, पवित्रता की सुंदरता, शांति और आशीर्वाद। इस प्रकार, यीशु मानव रूप में, पापमय शरीर की समानता में बनाया गया था, उसने स्वयं को दीन किया, हमारे पापों के लिए मरा, और महिमा में प्रवेश किया। और इस प्रकार हम भी अपने सारे पापों और लज्जा के साथ, आत्मा की गहरी विनम्रता में, यीशु के प्रायश्चित लहू पर भरोसा करते हुए आते हैं, और क्षमा, शांति, पवित्रता की सुंदरता, और परमेश्वर की महिमा प्राप्त करते हैं।

अध्याय आठ

पीतल की वेदी

यह मिलापवाले तम्बू के आँगन में अगले वस्तुओं पर विचार करने के लिए इस छोटे से काम की योजना के साथ सबसे अधिक मेल खाएगा।

इनमें से पहली होमबलि की वेदी थी। यह आकार में चौकोर था, और पीतल से मढ़ी बबूल की लकड़ी से बना था। यह खोखला था, न तो ऊपर और न ही नीचे; लेकिन आग और बलिदान को रखने के लिए एक मजबूत पीतल की झंझरी अंदर लगभग बीच में लगी हुई थी। यह वेदी लगभग नौ फीट चौड़ी और पाँच फीट ऊँची थी और इसका स्थान आँगन में था, आँगन के "द्वार" और तम्बू के द्वार के ठीक सामने, बीच में। पहली बात जो हमारा ध्यान मांगती है वह है

आग

बलिदान की वेदी की आग सबसे पहले परमेश्वर के प्रत्यक्ष कार्य से प्रज्वलित हुई थी। "और यहोवा का तेज लोगों को दिखाई दिया, और यहोवा के साम्हने से आग निकली - (सम्भवतः आग और बादल के खम्भे से) - और होमबलि और चरबी को वेदी पर भस्म कर दिया, जो जब सब लोगों ने देखा कि वे चिल्ला रहे हैं, और मुंह के बल गिरे" (लैव्य 9:23-24)। यह लोगों को सबसे गंभीर तरीके से प्रभावित करने के लिए किया गया था कि उस वेदी पर आग भगवान की आग थी; और इसका सबसे भयानक महत्व था। हम यहां यह भी देखते हैं कि वेदी पर लगी आग को हमेशा जलते रहना था। "और वेदी पर आग उस पर जलती रहे, वह कभी बुझने न पाए... वेदी पर आग जलती रहे, वह कभी बुझने न पाए" (लैव्यव्यवस्था 6:12-13)।

अब यह अग्नि क्या दर्शाती है? यह वेदी पर जलना, निवास के साम्हने खड़ा होना, और पवित्र उपस्थिति? यह मुझे एक चीज का

This mistake has been, in all ages since it was foisted upon the Church, a prolific source of error. It is without doubt the root of the tree of anti-Christ. And how hard it is to root up this evil! The distinction between "clergy" and "laity," the one-man ministry, and indeed every form of mere officialism are traceable to this gigantic evil.

2. That "the priesthood being changed there is also a change of the law." Our sacrifices are "spiritual," and hence our altar is spiritual. "The sacrifice of the mass" and the "altar" of the Episcopal Church, priestly vestments, the offering of incense, are all alike alien to the "new and living way." They either belong to dead Judaism or to heathen idolatry.

3. That the consecration of the priest under the law was typical of the Christian's consecration to Christ.

We have seen in previous chapters that the relative positions of the altar of burnt offering and the laver in the court of the tabernacle indicated the way of salvation. For as both stood opposite the door of the tabernacle, so the cross of Christ and the ordinance of baptism stand opposite the church and must be approached to enter it. Again, the first thing approached through the gate of the court was the altar, and then the laver. So, in the way of salvation the sinner first comes to Christ crucified, believing, repenting; then as a penitent believer in Jesus he is baptized, and enters the church. Now this order has been reversed by the introduction of infant baptism. This practice places the "laver of regeneration" before the cross of Christ, and has led to some terrible errors of doctrine; for, correctly recognizing the scriptural connection between baptism and remission of sins and the new birth, nearly all baptismal services for infants teach that the baby is regenerated in baptism. And so firm a hold has this doctrine on ministers and people, that the former often scruple to read their burial service over the dead infant who has died unbaptized; and the latter often imagine the infant in such a case LOST. Infant baptism must, in the nature of things, be wrong, as we have seen the word of God is meant to be present and operative in the heart of the person baptized. Baptism is not a mere bodily act. It is the baptism of the whole man, soul and body; it means death to sin, and resurrection to "newness of life;" it expresses inward faith and repentance by an outward symbol. Now as none of these things can be true of infants, it is certain that infant baptism is contrary to the word of God. What then? The order of the priests' consecration is the order of conversion to God. As the candidate for the priesthood first came with his sacrifice, and received atonement through the blood of the innocent victim, while full of faith and repentance; then was bathed in the laver; then was robed in the pure white robes; and then entered into the holy place to minister in the tabernacle; so in conversion the poor lost sinner must first come with faith and repentance to the crucified Savior--to the blood of his cross--and thus believing, be baptized in

प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रतीत होता है, और वह केवल पाप की सजा में भगवान का न्याय है! यह इंगित करता है "वह आग जो कभी बुझने वाली नहीं है।" यह कहता है कि "पाप अकारण नहीं हो सकता।" यह कहता है कि "हमारा परमेश्वर - (पाप के लिए और उस पर पाप के साथ सब कुछ) - एक भस्म करने वाली आग है"; और यह कि "वह किसी भी तरह से दोषियों को मुक्त नहीं कर सकता है।" बेचारा पापी जब अपने निर्दोष शिकार को वध के लिए लाया और इस वेदी पर भस्म कर दिया, तो उसने पूरे लेन-देन में अपनी अच्छी-खासी सजा को पहचान लिया, और उसके दिमाग में सबसे ऊपर एक विचार प्रतिस्थापन होगा। "जैसा कि यह निर्दोष मेमना पीड़ित है, इसलिए मुझे भी पीड़ित होना चाहिए," अगर प्रभु ने अपनी महान दया में फिरौती नहीं दी होती। और इस प्रकार हमारा प्रिय प्रभु हमारे लिए मरा, "पाप बना," "हमारे पापों को अपनी देह में लिए," "हमारे लिए शाप दिया," और प्रायश्चित की वेदी पर परमेश्वर की आग से भस्म हो गया। "वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं। हम सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; यहोवा ने हम सबों के अधर्म का भार उसी पर लाद दिया है।" हम सब के सब भेड़ों की नाई भटक गए हैं; हम ने सब को उसके अपने मार्ग पर फिराया है; और यहोवा ने हम सब के अधर्म का भार उसी पर लाद दिया है।" हम सब के सब भेड़ों की नाई भटक गए हैं; हम ने सब को उसके अपने मार्ग पर फिराया है; और यहोवा ने हम सब के अधर्म का भार उसी पर लाद दिया है।"

बलिदान और भेंट।

ये असंख्य और विविध थे। निस्संदेह उन सभी ने मसीह के क्रूस की ओर इशारा किया, या पूर्वाभास दिया - उसे जो "युगों के अंत में स्वयं के बलिदान से पाप को दूर करने के लिए दिखाई दिया।" अब हम एक हृदय-खोजी, आत्मा-उत्तेजक अध्ययन में प्रवेश करते हैं। जिस स्थान पर हम खड़े हैं वह पवित्र भूमि है; आइए हम आत्मा की भक्ति के साथ संपर्क करें। आइए हम विनम्रतापूर्वक और श्रद्धापूर्वक अपने मार्ग का अनुसरण करें, और हो सकता है कि हमारे परिश्रम का भरपूर प्रतिफल मिले।

पहली बात ध्यान देने योग्य है कि ये सभी बलिदान "निर्दोष और निष्कलंक" होने थे। यह मसीह की बेदाग पवित्रता का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने अनंत आत्मा के माध्यम से, "स्वयं को निष्कलंक परमेश्वर के सामने प्रस्तुत किया।" हमें "निर्दोष और निष्कलंक मेमे के समान मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा" छुड़ाया गया है। मसीह की निष्कलंक और निष्कलंक पवित्रता की गवाही कई शास्त्रों में दी गई है। वह "पवित्र, हानिरहित और पापियों से अलग" था; उसने "कोई पाप नहीं किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली"; परमेश्वर ने "उसे हमारे लिए जो पाप से अज्ञात थे, पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं"; वह "सब बातों में वैसे ही परखा गया जैसे हम अभी तक निष्पाप हैं"; वह "अधर्मियों के लिए धर्मी मरा, कि वह हमें परमेश्वर के पास

water into the name of the Father, the Son, and the Holy Spirit, and thus "putting on Christ" he is robed in his spotless righteousness, and is fitted to enter the Church and become a lively member of the same.

And now in concluding this chapter let my kind reader ask, "Have I come to Christ in this way?" I ask you to search the New Testament and judge for yourself whether it is the "way of the Lord" or not. First come to Jesus--come to the Lamb of God--come to the blood of the new covenant, come and trust him, come and love him, come and surrender yourself wholly to him, and thus, and thus only, come to his baptism, be "buried with Christ," and "into Christ." Bury the old life--the old man, and rise from the symbolic grave to live for Christ, holiness and eternity. Then with joy enter His holy place--the Church, and devoutly serve the great King, and sweetly enjoy the "communion of saints."

CHAPTER XI

THE HOLY PLACE

THE priest duly consecrated, entered the Holy Place to do service therein. The Holy Place was the first compartment of the tabernacle, divided from the "Holy of Holies," or inner compartment, by a thick veil of very rich material. This veil completely hid the Holy of Holies from view, and was only passed once a year by the high priest. The curtain at the door of the tabernacle was made of the same rich material as the veil, and was doubtless kept down so as to obscure the Holy Place from outside view. Now, this Holy place, with its furniture and divine service, is typical of the Church of Jesus Christ. By the term church I do not mean that universal, mystical nothing which so many now regard the Church to be, but the assembly of Christ's people, meeting regularly in any given place to worship God in spirit and in truth; or in other words, the Church of God as ordered and set before us in the New Testament. In this church all are priests--as we have seen--made such by blood and water--faith in Christ, and baptism. "Let us draw near (as priests) having had our hearts sprinkled from an evil conscience, and our body washed (bathed) in pure water." And as no one dare enter the tabernacle who was not a duly ordained priest, so no one should presume to enter the Church and partake in its privileges who has not been duly consecrated in the way of God's appointment.

Of the church when first established (Acts 2:42) it is said "They continued steadfastly in the apostles' teaching and fellowship; in the breaking of bread and the prayers." This passage indicates the principle things which engaged the devotion and worship of the church. And in our examination of the tabernacle, with its furniture and its

पहुंचाए"; पीलातुस ने कहा, " मसीह एक दोषी दुनिया के सामने एक पूरी तरह से पवित्र और बेदाग बलिदान के रूप में खड़ा है, अपने आप को हमारे सर्व-पर्याप्त उद्धारक के रूप में परमेश्वर को अर्पित करता है; हमारे अनुकरण के लिए एक सुंदर उदाहरण; जिनका निष्कलंक चरित्र पाप के बोझ से दबी बेचारी आत्मा के लिए आकर्षण और प्रेरणा का काम करता है। और उस आकर्षण और उस प्रेरणा के तहत वर्ग: - "जले हुए प्रसाद," "पाप प्रसाद," "अतिचार प्रसाद," "शांति प्रसाद," "मांस प्रसाद," "पेय प्रसाद," और "अज्ञानता के पाप" के लिए प्रसाद। " हमारे पास इनमें से कुछ को ही नोटिस करने की जगह होगी। मसीह एक दोषी दुनिया के सामने एक पूरी तरह से पवित्र और बेदाग बलिदान के रूप में खड़ा है, अपने आप को हमारे सर्व-पर्याप्त उद्धारक के रूप में परमेश्वर को अर्पित करता है; हमारे अनुकरण के लिए एक सुंदर उदाहरण; जिनका निष्कलंक चरित्र पाप के बोझ से दबी बेचारी आत्मा के लिए आकर्षण और प्रेरणा का काम करता है। और उस आकर्षण और उस प्रेरणा के तहत वर्ग: - "जले हुए प्रसाद," "पाप प्रसाद," "अतिचार प्रसाद," "शांति प्रसाद," "मांस प्रसाद," "पेय प्रसाद," और "अज्ञानता के पाप" के लिए प्रसाद। " हमारे पास इनमें से कुछ को ही नोटिस करने की जगह होगी। और उस आकर्षण और उस प्रेरणा के तहत वर्ग: - "जले हुए प्रसाद," "पाप प्रसाद," "अतिचार प्रसाद," "शांति प्रसाद," "मांस प्रसाद," "पेय प्रसाद," और "अज्ञानता के पाप" के लिए प्रसाद। " हमारे पास इनमें से कुछ को ही नोटिस करने की जगह होगी। और उस आकर्षण और उस प्रेरणा के तहत वर्ग: - "जले हुए प्रसाद," "पाप प्रसाद," "अतिचार प्रसाद," "शांति प्रसाद," "मांस प्रसाद," "पेय प्रसाद," और "अज्ञानता के पाप" के लिए प्रसाद। " हमारे पास इनमें से कुछ को ही नोटिस करने की जगह होगी।

1. जली हुई भेंट - जैसा कि ऊपर बताया गया है, यह एक बैल, एक मेढ़ा, एक बकरी, एक कबूतर या एक कबूतर हो सकता है। एक भगवान के लिए उतना ही स्वीकार्य था जितना कि दूसरा, अगर यह प्रस्तावक के माध्यम का प्रतिनिधित्व करता है। सभी मामलों में यह बिना किसी दोष के पुरुष होना चाहिए। बैल की भेंट शायद सबसे प्रभावशाली थी। इसे "मिलन के तंबू के द्वार पर" मारना था, इस प्रकार यह दर्शाता है कि क्रूस पर चढ़ाए गए उद्धारकर्ता के माध्यम से भगवान तक पहुंचने का एकमात्र तरीका है। प्रस्तावक को "जले हुए बलिदान के सिर पर अपना हाथ रखना" था, जिससे सबसे अभिव्यंजक तरीके से भगवान में अपनी आस्था, अपने हार्दिक पश्चाताप और प्रार्थना की घोषणा की कि उसके स्थान पर निर्दोष पीड़ित को स्वीकार किया जा सकता है, दोषी पापी . इस प्रकार "नए और जीवित तरीके" में भगवान के लिए सजायापता पापी भगवान के अपने नियुक्त बलिदान पर विश्वास का हाथ रखता है, और पश्चाताप से भरा विश्वास करता है कि यीशु की पीड़ा और मृत्यु उस कयामत के स्थान पर स्वीकार की जाती है जिसके वह पूरी तरह से हकदार हैं। ऐसा लगता है कि प्रस्तावक को पीड़ित को अपने हाथों से मारने की आवश्यकता थी। यहूदियों के बीच एक जानवर को मारने की विधि, आज तक, गले में एक बड़ा और अत्यधिक तेज चाकू खींचना है ताकि मुख्य रक्त वाहिकाओं को एक झटके में काट दिया जा सके। यह विधि पशु की शीघ्र मृत्यु

services, we shall find that these things were the very things most prominently symbolized.

THE LAMPSTAND.

We begin with the golden lampstand. This was a very beautiful and costly piece of furniture. It was beaten out of one solid mass of gold, weighing a talent, which was equal to £5475 in our money. It had a central stand with upright lamp, and six branch-lamps, three on either side. The whole was tastefully and ornamentally designed, being worked throughout into shapes of flowers and fruits of the pomegranates. Oil extracted from olive berries was burnt in the lamps, which emitted an exceedingly bright flame. The lights were never allowed to go out, but it was the duty of the priests to keep them replenished with oil and trimmed continually. Golden snuffers were provided to assist in the trimming, but no extinguishers. The lampstand was placed on the left side of the holy place, and was ITS ONLY LIGHT.

Now what, in the Church of Christ, was this beautiful lampstand, with its burning flames, intended to foreshadow? The answer is the word of divine inspiration, or the "apostles' teaching." That teaching is the word of God, and nothing else. The following comparisons will show the truth of this conclusion:

1. The lampstand was of great value, being of pure solid gold. The word of God is pure and of inestimable value. Those who know anything of its worth fully endorse the saying of the Psalmist: "How precious also are thy thoughts unto me, O God!" The word of God is precious because it reveals God, heaven, eternity; shows the way of salvation, of holiness and eternal life. In a word because it is full of Christ.
2. Pure gold is the most enduring of substances. Here again the lampstand testifies to the word of God which "endureth forever."
3. It was exceedingly beautiful. The word of God is full of the beauty of holiness.
4. The seven branches point to perfection--completeness. The number seven was the perfect number. It has been suggested with considerable force and beauty (see Maston's Christ in the Tabernacle), that these seven lamps indicate the Bible, with its three great divisions--the law, the psalms, and the prophets on the one side; and three New Testament divisions--the Acts, the epistles, and the Revelation on the other hand; with Christ in the gospels as chief central stem. I am however disposed to regard these seven branches as intended to point to another matter. I take it that the old covenant institutions were typical of things which essentially belong to the new. The lamp-stand therefore represents NEW COVENANT TEACHING, i. e., the teaching of the apostles. Hence, I take the seven branches-

और उसके जीवन-रक्त के पूर्ण निकास को सुनिश्चित करती है। रक्त का यह मुक्त प्रवाह इस प्रकार प्रभावित हुआ, हमें यशायाह के शब्दों की जबरन याद दिलाता है, "उसने अपनी आत्मा (जीवन) को मृत्यु के लिए उंडेल दिया है।" जानवर को अपने हाथ से मारने वाला प्रस्ताव सबसे आश्चर्यजनक तरीके से इंगित करता है, प्रस्तावक और उसके स्थानापन्न की मृत्यु के बीच संबंध। सच्चाई का इरादा यह तथ्य है कि हमारे पापों ने मसीह की मृत्यु का कारण बना दिया जैसे कि हम उसके वास्तविक हत्यारे थे। यह एक जबरदस्त सच्चाई है कि मैं क्रूस की त्रासदी में इतना शामिल हूँ कि या तो मैं उस भयानक काम का दोषी हूँ, या इसके द्वारा छुड़ाया गया हूँ। यदि मैं मसीह को अस्वीकार करता हूँ, तो मैं उनका पक्ष लेता हूँ जो चिल्लाते हैं "उसे क्रूस पर चढ़ाओ; उसे क्रूस पर चढ़ाओ"; परन्तु यदि मैं उसे ग्रहण करता हूँ, तो उसका बहुमूल्य लहू मेरी दोषी आत्मा को उसके सब दागों से शुद्ध करता है।

अगला काम यह किया जाना चाहिए कि हारून के पुत्रों को बलिदान के लहू को लेकर वेदी के चारों ओर छिड़कना चाहिए। इसमें हमारे पास इन शब्दों का एक उदाहरण है, "हम छिड़काव के उस लहू के पास आए हैं, जो हाबिल के लहू से उत्तम बातें कहता है।" इसके अलावा, "हमारे दिलों को एक बुरे विवेक से छिड़का जाना।"

तब पशु का छिलना, और उसके टुकड़े टुकड़े करना, और अंतडियों और पांवोंको धोना, और सब को वेदी की आग पर सजाना। यह वास्तव में टिप्पणी की गई है कि, विशेष रूप से गर्म मौसम में, इतने सारे रक्त की दृष्टि और गंध, और मारे गए जानवरों को सूरज के लिए खुला रखा जाना चाहिए, यह सबसे अधिक घिनौना और विद्रोही रहा होगा, और जो मनुष्य की प्रकृति के प्रति विद्रोह कर रहा था, वह शायद ही हो सकता था भगवान को कोई खुशी दी। और इसलिए यह घोषित किया गया है, "मैं होमबलियों से प्रसन्न नहीं होता," और "बलिदान और भेंट से तू प्रसन्न नहीं होता।" फिर, उन्हें क्यों नियुक्त किया गया? पाप उन्हें जरूरी! पाप के लिए एक पर्याप्त और उचित उपाय की आवश्यकता थी; इसे इसकी सारी भयानकता में उजागर किया जाना चाहिए; और दोषी मनुष्य को पाप की प्रकृति और इसके योग्य दंड से गहराई से प्रभावित होने की आवश्यकता थी।

प्रतिरूप की ओर मुड़ना - यीशु की मृत्यु - वही तीव्र होना हमारे विचार को पूरा करता है। सूली पर चढ़ाए जाने का दृश्य कितना वीभत्स और वीभत्स रहा होगा! कुछ लोगों को इतना क्रूर पाया जा सकता है - शायद सैनिकों और यहूदियों के शासकों को - ऐसी जगहों को देखने में खुशी मिलती है, लेकिन कोई और नहीं। परमेश्वर ने स्वयं उस दृश्य पर अँधेरे का एक घना पर्दा डाल दिया, मानो स्वर्गादूतों से भयानक दृश्य को दूर करने के लिए।

यीशु को तड़पते, मरते हुए देखकर, कई दिलों को बेहोश कर दिया होगा। पहले से ही उसकी पीठ भयानक संकट से गिरवी रखी गई थी; उसका माथा कांटों के मुकुट से छेदा और फटा हुआ था; खून ने उनके वस्त्र, उनके चेहरे, उनके शरीर को दाग दिया; और अब,

the perfect number--to represent the "unity of the spirit" as summarized in Eph. 4:1-6: "I therefore, the prisoner in the Lord, beseech you to walk worthily of the calling wherewith ye were called, with all lowliness and meekness, with long-suffering, forbearing one another in love, giving diligence to keep the unity of the spirit in the bond of peace. There is one body and one spirit, even as also ye were called in one hope of your calling; one Lord, one faith, one baptism, one God and Father of all, who is over all, and through all, and in all."

The unity of the lampstand was not only seen in the perfect number of its branches, but also in the fact that it was all beaten out of one solid mass of gold. This is beautifully suggestive of the unity of the spirit as expounded by the "apostle's teaching." As we see in Eph. 4, there are seven units in the unity of the spirit, and all evolved out of one precious mass--the Lord Jesus Christ, and all inseparably joined to Him. To have removed any one of the branches of the lamp-stand would have disfigured it, and destroyed its perfectness. So, to remove any one of the things mentioned by Paul in the "unity of the spirit," were to destroy its completeness and render it deformed. Suppose we try its effect. Let us remove from Christianity (for that is what spirit" means) the "one Lord." How meaningless would all the rest become!

There would be a body with a spirit, but no head. Faith would have no attraction, no object; baptism would have no end and hope would have no incentive.

5. The light of the lamp-stand was the only light of the tabernacle. There were no windows. No light was borrowed from nature. By the light of the lamps the priest worked, and all the other objects in the tabernacle were distinctly seen. Its soft, clear light lit up the whole with great beauty. So in the Church of Christ. The teaching of the apostles is the only rule of faith and duty. It is of the utmost importance for all who desire to please God to understand this. Fearful and destructive have been the consequences of neglecting this in all the Christian ages. In a previous chapter we have seen that the apostles were invested with divine authority, and clothed with infallible power as the founders and organizers of the Church. If this great truth had always been recognized, human creeds, doctrines, and sects had been impossible. To this authority nature and reason must submit. In proportion as the "apostles' teaching" prevails in the Church, shall we as Christians discern our place and work, and behold the glory of Christ in all His ordinances.

6. The lamps were to be kept trimmed and burning by the priests. So, in the Church God's people are in duty bound to preserve the faith as at first delivered, and to keep it free from all interpolations and perversions.

दर्द और खून की कमी से कमजोर और बेहोश, कांपते और क्षीण, अंत की शुरुआत आ गई है। वे उसके खुले घाव और खून से सने शरीर को उजागर करते हुए उसे नंगा कर देते हैं। उसे जमीन पर फेंक दिया गया और उसके हाथों और पैरों को कठोर क्रूस पर कीलों से ठोक दिया गया। वह अब पृथ्वी और स्वर्ग के बीच ऊपर उठा लिया गया है, और वहाँ वह छह घंटे तक लटका रहा, जब तक कि मृत्यु की छाया चेहरे और रूप पर नहीं छा गई। शरीर अब भयावह रूप से मृत्यु के भयानक आलिंगन में है! क्या तमाशा है! स्वर्ग या पृथ्वी में कौन बिना भय के इसे देख सकता है! यह एक भयानक, विद्रोही दृश्य था। ऐसा लग रहा था कि भगवान आकाश को पाल रहे हैं; कराहने के लिए, धरती और चट्टानों को चीर कर। लेकिन यह जरूरी था। उनका लहू बहाए बिना कोई क्षमा नहीं हो सकती थी। हमें धर्मी बनाने के लिए वह श्रापित होना चाहिए।

2. अज्ञानता का पापबलि --- व्यवस्था में अज्ञानता के पाप के लिए भेंट की आवश्यकता थी। यह निम्नलिखित बातों में होमबलि से भिन्न था। पूरी चर्बी को सावधानी से "अंदर" से हटाना था और वेदी पर जलाना था; लेकिन पूरे शव को "एक साफ जगह पर ले जाया जाना था, जहां राख डाली जाती है, और (वहां) आग से लकड़ी पर जलाया जाता है।" ऐसा लगता है कि यह दिखाने का इरादा है कि भगवान के लिए कितना घृणित पाप है - यहां तक कि अपने सबसे हल्के रूप में, यानी जब अज्ञानता में किया जाता है। इब्रानियों के पत्र के लेखक (अध्याय 13:11-13) शहर की दीवार के बाहर मसीह के क्रूस पर चढ़ने को इस बलिदान के प्रतिरूप के रूप में संदर्भित करता है, और इससे जुड़ी शर्म को पहचानता है। "उन जानवरों के शरीर के लिए, जिनका लहू महायाजक पापबलि करके पवित्र स्थान में ले जाया है, वे छावनी से बाहर जलाए जाते हैं। इसी कारण यीशु ने भी लोगों को अपने लहू के द्वारा पवित्र करने के लिये फाटक के बाहर दुःख उठाया। इसलिये आओ, हम उसकी नामधराई सहते हुए छावनी से बाहर उसके पास निकल जाएं।" वह "हमारे लिए पाप बन गया," उसकी लज्जा और दण्ड को सहता हुआ। इसलिए आइए हम उसकी लज्जा और तिरस्कार को साझा करने के लिए तैयार हों। क्रूस की लज्जा समाप्त नहीं हुई है। जो लोग हर बात में अपने प्रभु का अनुसरण करते हैं वे हमेशा की तरह तिरस्कृत हैं। लेकिन वे अपने ईश्वरीय स्वामी की तरह, शर्म की परवाह न करते हुए, अपने क्रूस को सहन करने के लिए संतुष्ट हैं, और अपने न्याय के महान दिन के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हैं। लज्जा वास्तव में जारी है। दूसरी तरफ। तो, पीटर लिखता है: "तुम में से कोई भी एक हत्यारे, या एक चोर, या एक कुकर्मों के रूप में, या अन्य पुरुषों में एक बाधा के रूप में पीड़ित न हो" मायने रखता है; परन्तु यदि कोई मनुष्य मसीही होने के कारण दुःख उठाए, तो लज्जित न हो, पर इस नाम से परमेश्वर की महिमा करे ॥

अज्ञानता के पाप के लिए इस भेंट में लापरवाह और आलसी लोगों के लिए एक गंभीर सबक है जो मसीह में विश्वास करने का दावा करते हैं। इनमें से बहुत बड़ी संख्या पूरी तरह से परमेश्वर के पवित्र वचन के अध्ययन की उपेक्षा करती है, और मसीह में अपनी पूरी तरह से सुरक्षित स्थिति को मान लेती है; लेकिन अगर उनसे पूछा जाए कि "उनमें जो आशा है उसका कारण," भ्रमित हो जाएगा

Thus, the lamp-stand was indicative of the teaching of the inspired apostles of Christ. And as the stem and substance of that teaching was Christ, we see how perfectly the lamp-stand foreshadowed it. The reason for the presence of the lamp-stand in the tabernacle was that its light might shine. So, the reason for the apostles' teaching in the church is that Christ may be our light, that we may be filled with His light, and go forth into the world to be in our turn "The light of the world."

CHAPTER XII

THE TABLE OF SHEW-BREAD

THIS was a table made of accasia wood overlaid with gold, and had a golden crown. It was about 3½ feet long, 2 feet wide, and 2½ feet high. It had dishes, spoons, bowls and covers; all of pure gold. The use of this costly and beautiful table was to hold the "shew-bread." Full directions are given in Lev. 24:5-9. The "shew-bread" consisted of twelve unleavened cakes: one for each tribe. They were to be placed on the table in two rows--six in each "before the Lord." They were to be eaten only by the priests, every Sabbath; and fresh loaves placed in their stead as the old ones were removed. This table stood on the right side of the tabernacle, opposite the golden lamp-stand.

There is no doubt, I think, that this was intended to symbolize the "breaking of bread," the next thing noticed in Acts 2:42 among the things which the Church "steadfastly" observed. The points of comparison are as clear as the shadow to its substance. 1st. The table was covered all over with gold (we meet with gold everywhere in the tabernacle), which points to the precious things set forth in the Lord's supper. Gold is prized and sought after more than anything else. But to the hungry soul the spiritual feast of the Lord's table is valued far more than "gold which perisheth." 2nd. The bread was representative. The twelve loaves represented the twelve tribes of Israel. The bread of the Lord's table is also representative. There is but one loaf, and this represents the body of Christ: "This is my body." It also represents the oneness of "His body the Church": "We are one bread, and one body." 3rd. The priests alone partook of it; and in the Church only those who have been joined to the Christian priesthood partake of the Lord's supper. 4th. The loaves were eaten every Sabbath. So the Lord's supper is, by the true Church, eaten every first day of the week: the day now devoted to Christian worship. "On the first day of the week the disciples came together to break bread" (Acts 20:7). 5th. The loaves were called the shew-bread; and in the Lord's supper the death of Jesus is "shown forth till He come." 6th. The loaves were for a memorial. So the Lord's supper is a memorial feast: "Do this," said Jesus, "in remembrance of Me." Of course there are points where this comparison would break down, but the foregoing are sufficient to establish the intended

और एक संतोषजनक उत्तर के लिए नुकसान में होगा। उन्होंने एक आवाज सुनी, या उन्होंने एक बदलाव महसूस किया, या उन्होंने एक पाठ को विनियोजित किया, जो शायद उनके लिए कभी अभिप्रेत नहीं था, या उन्होंने "मसीह में भरोसा" किया। उन्होंने और अधिक सन्देह नहीं किया: सन्देह करना पाप था। लेकिन उन्होंने सत्य के शास्त्रों पर अपनी स्थिति को परखने की जहमत नहीं उठाई; उन्होंने "ढूँढो और देखो" नहीं किया। क्या आश्चर्य है कि बहुत से लोग आत्म-सुरक्षा की भावना के साथ आँख बंद करके चलते हैं, जबकि साथ ही वे अज्ञानता का पाप कर रहे हैं। लेखक एक बार सुसमाचार के एक प्रचारक से मिला जिसने घोषणा की कि वह बिल्कुल पाप के बिना जी रहा था; वह "पूर्ण पवित्रीकरण" की उत्कृष्ट स्थिति में पहुँच गया था। मैंने उनसे यीशु मसीह की कुछ सकारात्मक आज्ञाओं के संबंध में कुछ प्रश्न पूछे। उसने स्वीकार किया कि वह उनकी घोर उपेक्षा में जी रहा था - उसने उन पर अधिक विचार नहीं किया था, और उन्हें अनावश्यक माना था! वह मनुष्य प्रतिदिन अज्ञानता का पाप कर रहा था, मूसा की व्यवस्था के अधीन किसी भी पाप से कहीं अधिक जघन्य और अपराधी। इस पाप को मसीह के प्रायश्चित की उतनी ही आवश्यकता है जितनी किसी अन्य प्रकार की दुष्टता की; और इसे हटाने के लिए "शास्त्रों में खोज" करना आवश्यक है। वह "पूर्ण पवित्रीकरण" की उत्कृष्ट स्थिति में पहुँच गया था। मैंने उनसे यीशु मसीह की कुछ सकारात्मक आज्ञाओं के संबंध में कुछ प्रश्न पूछे। उसने स्वीकार किया कि वह उनकी घोर उपेक्षा में जी रहा था - उसने उन पर अधिक विचार नहीं किया था, और उन्हें अनावश्यक माना था! वह मनुष्य प्रतिदिन अज्ञानता का पाप कर रहा था, मूसा की व्यवस्था के अधीन किसी भी पाप से कहीं अधिक जघन्य और अपराधी। इस पाप को मसीह के प्रायश्चित की उतनी ही आवश्यकता है जितनी किसी अन्य प्रकार की दुष्टता की; और इसे हटाने के लिए "शास्त्रों में खोज" करना आवश्यक है। वह "पूर्ण पवित्रीकरण" की उत्कृष्ट स्थिति में पहुँच गया था। मैंने उनसे यीशु मसीह की कुछ सकारात्मक आज्ञाओं के संबंध में कुछ प्रश्न पूछे। उसने स्वीकार किया कि वह उनकी घोर उपेक्षा में जी रहा था - उसने उन पर अधिक विचार नहीं किया था, और उन्हें अनावश्यक माना था! वह मनुष्य प्रतिदिन अज्ञानता का पाप कर रहा था, मूसा की व्यवस्था के अधीन किसी भी पाप से कहीं अधिक जघन्य और अपराधी। इस पाप को मसीह के प्रायश्चित की उतनी ही आवश्यकता है जितनी किसी अन्य प्रकार की दुष्टता की; और इसे हटाने के लिए "शास्त्रों में खोज" करना आवश्यक है। वह मनुष्य प्रतिदिन अज्ञानता का पाप कर रहा था, मूसा की व्यवस्था के अधीन किसी भी पाप से कहीं अधिक जघन्य और अपराधी। इस पाप को मसीह के प्रायश्चित की उतनी ही आवश्यकता है जितनी किसी अन्य प्रकार की दुष्टता की; और इसे हटाने के लिए "शास्त्रों में खोज" करना आवश्यक है।

resemblance of the table of shew-bread to the supper of the Lord.

Just here it may be well to notice that while the priest was occupied in the service of the tabernacle, the bread of the table, and parts of the animals offered in sacrifice, constituted (so far as we know) his only food. And how blessedly true it is that to the Christian CHRIST (as set forth in both sacrifice and bread) is the only food for his soul!

Just at this point it may be well to notice how minutely everything in the tabernacle is specified, even to the smallest and apparently most insignificant article. Now if the tabernacle and its services were intended to foreshadow the Church of Christ, what a dangerous work it is to alter, or dispense with, any of the Lord's appointments! Surely it is the duty of every Christian to insist upon the ordinances of the Lord being administered according to apostolic method. The Apostle Paul found it necessary to write to the Corinthian church to correct abuses concerning this very matter of the Lord's supper. They had departed from the order as delivered to them by himself, and had reduced the ordinance to a common meal, and so robbed it of all its beautiful significance. To impress upon them the necessity of observing the order intact, he informs them that the Lord had revealed it to him by special revelation. "I RECEIVED OF THE LORD that that which also I delivered unto you, how that the Lord Jesus in the night in which He was betrayed took bread, and when He had given thanks, He brake it and said, This is My body, which is for you; this do in remembrance of Me. In like manner the cup, after supper, saying, This cup is the new covenant in My blood; this do, as oft as ye drink it, in remembrance of Me. For as often as ye eat this bread and drink this cup, ye proclaim the Lord's death till He come." To attend to this beautiful and impressive ordinance, the first Christians came together every Lord's-day (Acts:20:7), thus uniting His death symbols with the day on which He rose from the dead: a most fitting and appropriate union. But how this divine ordinance rebukes the rashness of men, who think themselves wiser than God in tampering with this divine ordinance--some withholding the cup from the people; some cutting the loaf into a hundred pieces, thus destroying the figure of the "one body;" some attending to it only once a month, or even once a quarter, so destroying the union between death and resurrection; and some making it a mere after-service, instead of, as at the beginning, making it the centre and chief reason for meeting together, because of its wonderful teaching about Christ, who is the chief and centre in the assembly of the saints.

CHAPTER XIII

THE ALTAR OF INCENSE

3. लाल बछिया का बलिदान। 19वें अध्याय में। अंकों में इस यज्ञ का पूरा विवरण दिया गया है। जानवर को हर तरफ लाल और "बिना धब्बे वाला" होना था। और एलीआजर याजक उसको छावनी से बाहर ले जाकर वहीं घात करे। तब वह उसके लहू में से कुछ लेकर अपनी उंगली से मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सात बार छिड़के। तब उसे उसके पूरे शरीर को जलाकर भस्म कर देना था, और आग के बीच में उसे "देवदार की लकड़ी, और जूफा, और लाल रंग का कपड़ा" डालना था। बछिया की राख को एक साफ जगह में रखा जाना था, और जब उपयोग करने की आवश्यकता हो, तो वसंत या बहते पानी के साथ मिलाया जाना था। यह "शुद्धिकरण का जल" था, जिसका उपयोग लोगों को सभी प्रकार की शारीरिक मलिनता से शुद्ध करने के लिए किया जाता था।

लाल बछिया का यह बलिदान हमें मसीह के बलिदान का एक और महान प्रकार प्रदान करता है। इसका रंग - चारों ओर लाल - हमारे लिए उसके कष्टों की तीव्रता और परिपूर्णता की ओर इशारा करता है। वह उनमें डूबा हुआ था। उसने कहा: "मुझे एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक वह पूरा न हो ले, तब तक मैं कैसी सकेती में हूँ!" बपतिस्मा कभी छिड़काव नहीं होता; यह पूरी तरह से जबरदस्त है। मसीह पूरी तरह से पीड़ा से अभिभूत थे। "तेरी सारी लहरें और तरंगें मेरे ऊपर से चली गई हैं।"

बछिया "निर्दोष" थी, और उस पर कोई जूआ नहीं था। यह कभी भी मनुष्य की सेवा में नहीं था, बल्कि पूरी तरह से परमेश्वर के लिए आरक्षित था। यहाँ पर परमेश्वर की सेवा के लिए यीशु की संपूर्ण भक्ति का संकेत दिया जा सकता है। उसने कहा: "हे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने में प्रसन्न हूँ;" "मेरा खाना पीना यह है, कि अपने भेजेवाले की इच्छा के अनुसार चलूँ, और उसका काम पूरा करूँ।" वह पूरी तरह जल चुकी थी; सारा शव जलकर राख हो गया। यीशु के बारे में हम पढ़ते हैं: "उसकी एक हड्डी भी न तोड़ी जाएगी।" उसका, मानो, एक "सम्पूर्ण होमबलि" था। आत्मा, आत्मा, शरीर, सभी पीड़ा और मृत्यु में "भस्म" हो गए। "देवदार की लकड़ी, और जूफा, और लाल रंग" उस प्याले की अत्यधिक कड़वाहट को इंगित कर सकता है जिसे उसके पिता ने उसे पीने के लिए दिया था। इसकी कड़वाहट का अंदाज़ा हम गतसमनी से लगा सकते हैं। उसका कड़वा रोना, "मेरे पिता, यदि यह संभव हो, और हमें परमेश्वर की सेवा में अलग कर दें। "क्योंकि यदि," उत्प्रेरित लेखक कहता है, "बकरोँ और बैलों का लोहू, और बछिया की राख, अशुद्ध किए हुआँ पर छिड़के जाने से, मांस की शुद्धता के लिये पवित्र करती है, तो मसीह का लोहू कितना अधिक पवित्र करेगा, जो सनातन आत्मा के द्वारा अपने आप को निष्कलंक परमेश्वर को अर्पित किया, अपने विवेक को मृत कर्मों से शुद्ध करो।" और हमें परमेश्वर की सेवा में अलग कर दें। "क्योंकि यदि," उत्प्रेरित लेखक कहता है, "बकरोँ और बैलों का लोहू, और बछिया की राख, अशुद्ध किए हुआँ पर छिड़के जाने से, मांस की शुद्धता के लिये पवित्र करती है, तो मसीह का लोहू कितना अधिक पवित्र करेगा, जो सनातन आत्मा के द्वारा अपने आप को निष्कलंक परमेश्वर को अर्पित किया,

THIS stood between the Lampstand and the Table of Shewbread, "before the veil."

Like the table, it was made of accasia wood, over laid with pure beaten gold. It was 21 inches broad, and 3½ feet in height; and square in shape. It had horns at each top corner, like the altar of burnt offering; and staves were fixed at its sides to bear it when on the move. The incense, which was burnt upon it every day by the priests, morning and evening, was a compound of sweet herbs. This compound was exclusively to be used on the altar of incense, and was not to be used in common by the people on pain of death. Seeing that it was a divine compound we may well believe that the odor emitted in burning it was delightfully fragrant. The times when the incense was burnt were the hours, morning and evening, when the people were assembled at the gate of the tabernacle for prayer. See Luke 1:8-10.

We are left in no degree of doubt, therefore, as to the figurative meaning of this incense. It foreshadows "THE PRAYERS" of the church; which the reader will recollect to be the remaining act of church worship, as, stated in Acts 2:42, which we have to consider. In Rev. 8:3-4 we read, "And another angel came and stood at the altar (of incense), and there was given unto him much incense, that he should add it unto the prayers of all the saints, upon the golden altar which was before the throne, and the smoke of the incense, with the prayers of the saints, went up before God out of the angel's hand." David prayed, showing his understanding of the meaning of the altar of incense, "Let my prayer be set forth as incense before thee." We need no further proof. The incense represented prayer; and as the whole foreshadows the Church of God in the gospel age the incense must mean "the prayers" which form an essential part of the order of divine worship in the church. It being made for the exclusive use of the tabernacle, indicates that no worship is acceptable to God from those who do not approach him in the new and living way, as before marked out in this work. To suppose that the sinner can simply pray his way into pardon and salvation, is to set aside the "way" of the Lord as we have seen it typified.

The fire on the altar of incense was taken from the altar of burnt offering. The fire for the "censer" was also taken from the same place. Nadab and Abihu were smitten with death for burning "strange fire" before the Lord, i. e., fire not taken from the altar of burnt offering. They thereby broke the connection between the two altars. The lesson this teaches is that however fervent our prayers and praises may be if we have not first come to Christ and "received the atonement" in God's own appointed way, our prayers will be an abomination to God.

Included in the prayers of the Church are praise and thanksgiving. All prayers must be mixed with gratitude to God for past mercies received. The incense was a delightful

जीवित परमेश्वर की सेवा करने के लिए अपने विवेक को मृत कर्मों से शुद्ध करो।"

बलि प्रकारों और छायाओं के इस दिलचस्प विषय को बहुत आगे बढ़ाया जा सकता है; लेकिन हम अपने स्थान और पाठक के धैर्य के लिए काफी दूर चले गए हैं। साल-दर-साल और दिन-ब-दिन बने इन प्रसादों के विशिष्ट चरित्र के बारे में कोई संदेह नहीं किया जा सकता है। उन सभी ने मसीह के एक महान बलिदान की ओर इशारा किया। और अब, अपने सहूलियत के मैदान से पीछे मुड़कर देखते हुए, गाना कितना मधुर है:

निवासस्थान के निर्माण से पहले, कहीं भी बलि चढ़ाना उचित था, परन्तु उसके बाद केवल एक ही स्थान और एक ही वेदी थी जिस पर बलि चढ़ाई जा सकती थी: वह तम्बू के द्वार के ठीक सामने की वेदी पर थी। अतः एक स्थान है - कलवारी, और एक भेंट - कूस पर चढ़ाया गया मसीह, जिसके पास अब हम आ सकते हैं और उद्धार पा सकते हैं। "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" "मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।"

अध्याय IX

द लावर

होमबलि की वेदी और मिलापवाले तम्बू के द्वार के बीच में हौदी थी। यह "सेवा करने वाली महिलाओं" के पीतल के दर्पणों से बना था। इसके आकार और आकार का कोई हिसाब नहीं दिया गया है। यह काफी आकार का रहा होगा, क्योंकि इसका उपयोग याजकों के स्नान करने के लिए किया जाता था। याजकों के लिए हौदी पर बिना धोए तम्बू में प्रवेश करने का प्रयास करना तत्काल मृत्यु का भागी होना था। यह हौदी क्या दर्शाती है? यह कुछ बहुत महत्वपूर्ण होने का संकेत देता है, यह पुजारी द्वारा किए गए भयानक दंड से स्पष्ट होता है जिसने इसे तिरस्कृत या उपेक्षित किया। इस प्रश्न के उत्तर में, मैं एप में एक मार्ग पर विशेष ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। 6:25-27. "पति अपनी पत्नियों से प्यार करते हैं, यहां तक कि मसीह ने भी चर्च से प्यार किया, और खुद को इसके लिए दे दिया, ताकि वह इसे पवित्र कर सके, इसे शब्द के साथ पानी के स्नान से शुद्ध कर सके," और सी। यहाँ हौदी पर पुजारी के पवित्रीकरण का एक स्पष्ट संदर्भ है, जो हमें इसके महत्व की सही समझ में मदद करता है। हौदी अविच्छेद्य रूप से एक साथ जुड़ी हुई दो चीजों का प्रतिनिधित्व करती है - "वचन के साथ जल।"

1. "शब्द" उस पदार्थ से संकेतित होता है जिससे हौदी बनाई गई थी - सेवा करने वाली महिलाओं के दर्पण। दर्पण का उद्देश्य किसी की समानता को दर्शाना है। प्रेरित याकूब ने परमेश्वर के वचन की तुलना दर्पण से की है। "क्योंकि यदि कोई वचन का सुननेवाला हो और उस पर चलने वाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुंह आइने में देखे, क्योंकि वह अपने आप को

fragrance. This indicates how well pleased our God is when we worship before Him, and lay before Him our heart's requests.

Thus, we see that the first compartment of the tabernacle with its furniture fore-shadowed the worship of the Church of God in the gospel age. The reader is invited to study the first epistle of Paul to the Corinthians, wherein he will soon see that the things we have indicated were exactly those which Paul had, under divine direction, "set in order" for the worship of the Church when assembled together. In chap. 11 he begins by commending them for holding the "traditions," i.e., the ordinances of Christ. He then goes on to correct certain irregularities in which they had indulged, while in the main holding the "traditions" as delivered. Then references are made to the "teaching" in the Church. This was evidently of a mutual character, and many took part. Here we see a clear indication of the Church continuing in the "apostles' teaching." Then lower down in chap. 11 we see that they continued also in "the breaking of bread;" and in chap. 14 reference was also made to "the prayers" in which the Church constantly engaged.

Now before we leave the Holy Place, we may well consider the wisdom and love of God in ordering thus the worship of His Church. In coming together, the central attraction to the Church was the Lord's supper God had so ordained it, not because of the elements, but because of the things which they pointed to. They beautifully set forth the body and blood of Christ: they spoke of redemption, of pardon, of peace with God; they represented the source and sustenance of spiritual life, and they pointed onward to the glorious appearing of Jesus Christ. Could anything be more fitting and appropriate than the place which this ordinance holds in the Church? The "teaching" or unfolding of divine truth by those competent to instruct is also most essential to the growth of the Church. "Desire the sincere milk of the word" says Peter, "that ye may grow thereby." And lastly, "the prayers" (with which must be united praise) draw the soul near to God and keep it there. They bring the blessings of God down to us. By them we find grace to help in time of need. Indeed, in these divine appointments we have all that we can conceive to be necessary to the Church's upbuilding in the divine life.

CHAPTER XIV

THE HOLY OF HOLIES

THIS compartment was a square room, divided from the Holy place by the beautiful veil, of which we shall have something to say later on. The building was, of course, formed of the same materials as the Holy Place. The difference between the two compartments was in the furniture and light. The Most Holy Place contained:--(1) The Ark of the Covenant. This was a wooden chest,

देखकर चला जाता है, और तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा मनुष्य था। परन्तु वह जो सिद्ध व्यवस्था, स्वाधीनता की व्यवस्था पर दृष्टि करता है, और ऐसा करता रहता है, वह भूलने वाला सुनने वाला नहीं, परन्तु कर्म करने वाला है, वह अपने कामों में आशीष पाएगा"। 1:23-25। यह परमेश्वर के वचन का एक आकर्षक और सुंदर उदाहरण है। यह हमें खुद दिखाता है; यह हमारी नग्न विकृति को उजागर करता है - हमारे हृदय की भ्रष्ट स्थिति - परमेश्वर की दृष्टि में, और इस प्रकार हमें शुद्धिकरण और नवीनीकरण की तलाश में ले जाता है। पापी को बचाने में परमेश्वर का वचन सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हम शब्द से "उत्पन्न" हुए हैं। दाऊद ने कहा: "तेरा वचन मुझे जिलाता है;" "परमेश्वर का वचन सुनने से विश्वास आता है;" यह "आत्मा की तलवार" है, और "जीवित और सक्रिय है, और किसी भी दोधारी तलवार से तेज है।" कुछ ऐसे हैं जो कहते हैं कि परमेश्वर का वचन एक "मृत अक्षर" है, लेकिन इन धर्मग्रंथों के आलोक में कोई भी इतनी सच्चाई से नहीं कह सकता है।

2. उपरोक्त शास्त्र में "पानी" (एपी। 5) बपतिस्मा की ईसाई संस्था को संदर्भित करता है। इसमें सभी विद्वान सहमत हैं; और वास्तव में, इस पर संदेह करना असंभव है जब बपतिस्मा का स्थान और डिजाइन, जैसा कि नए नियम में सिखाया गया है, समझा जाता है। आओ देखते हैं। बपतिस्मा पानी में है। "देखो, यहाँ जल है, मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है," "क्या कोई मनुष्य जल को रोक सकता है, कि ये बपतिस्मा न लें।" बपतिस्मा एक धुलाई (या स्नान) है; "उठो, और बपतिस्मा लो, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो (स्नान) करो।" बपतिस्मा केवल पश्चाताप करने वाले आस्तिक को दिया जाना है। "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा," "पश्चाताप करो और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये प्रभु यीशु के नाम से बपतिस्मा लो।" बपतिस्मा "एक, शरीर," चर्च में प्रवेश करता है। "तुम सबने एक देह में बपतिस्मा लिया है।" बपतिस्मा "उद्धार" या "पापों की क्षमा" के लिए है। देखें मरकुस 16:15-16; अधिनियमों 2:28।

तब हम निष्कर्ष निकालते हैं कि मिलापवाले तम्बू के द्वार के सामने हौदी का पानी बपतिस्मा का प्रतिनिधित्व करता है। हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि यह किसी और चीज का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है, और क्योंकि सादृश्य पूर्ण है। यह अगले अध्याय में और भी निर्णायक रूप से प्रकट होगा। अभी मैं दो प्रकार का दिखाना चाहता हूँ - "शब्द के साथ पानी।" तैसा में। 3:5 हम पढ़ते हैं, "अपनी दया के अनुसार उस ने हमें पवित्र आत्मा के नये जन्म और नवीनीकरण के स्नान (मार्ग, हौदी) के द्वारा बचाया।" हमने देखा है कि परमेश्वर का वचन "आत्मा की तलवार" है, अर्थात्, यह पवित्र आत्मा द्वारा परिवर्तन में उपयोग किया जाने वाला साधन है। इसलिए शब्द आत्मा क्या करता है। उपरोक्त पाठ में हमने इस सत्य को स्थापित किया है कि शब्द और जल पुनर्जीवन में अविभाज्य हैं। वही सत्य यीशु द्वारा सिखाया जाता है, "

overlaid with gold. It contained a copy of the law, a golden pot of manna miraculously preserved, and Aaron's rod that budded. (2) The Mercy Seat. This formed the lid of the ark, and was of solid gold. A beautiful crown of gold adorned the sides, and two cherubims of gold stood, one at each end, with their wings extended towards each other and their faces bending towards the ark. The whole was beaten out of one mass of gold. Like the Holy Place, the Holy of Holies had no windows; nor had it a lampstand, and as the thick veil was kept close it would have been in total and perpetual darkness, but for the glorious light which illuminated it. What was that light? It was the light of God the shechinah. Directly above the Ark of the Covenant rose the wonderful symbol of the divine presence--the pillar of cloud by day and fire by night. This mysterious fire penetrated the thick coverings of the tabernacle and descended on the Mercy Seat, between the cherubims of glory, and thus lit up the Holy of Holies with a blaze of supernatural light. The reader may easily imagine how marvelously glorious this compartment must have been, with its golden walls, its beautiful covering and veil, its golden ark and mercy seat, and all illuminated so brilliantly with divine light from heaven!

What, then, does this Most Holy Place represent? There can be no doubt that it stands for the holy presence of Jehovah. HEAVEN, not a locality, but a state, as we read in Hebrews 9:24: "For Christ entered not into a holy place made with hands, like in pattern to the true, but into heaven itself, now to appear before the face of God for us." This is conclusive. Now let us examine the symbols in detail.

1st. The gold, rich hangings and covering, as before explained, point to riches, glory, honor, holiness, heavenliness. These things all belong to God and heaven, as their PRIMARY source.

2nd. The ark, with mercy seat and Shechinah combined, are symbolic of Jehovah enthroned on high. The ark was always regarded as identical with God's presence. That this was the divine intention regarding it is clear from many incidents connected with it in its after history. When it was captured by the Philistines, the dying daughter-in-law of Eli cried: "The glory is departed from Israel, because the ark is taken." And when it was taken into the temple of Dagon, the fish-god fell repeatedly before it. Wherever it was carried in its captivity, pestilence and plague destroyed the people. Uzzah was smitten dead for touching it, and fifty thousand men of Bethshemesh were slain for looking into it. On the other hand, the house of Obed-Edom was blessed all the while it rested beneath its roof. The Israelites spoke often of God dwelling "between the cherubim," and the Philistines said, referring to the ark, "God is come into the camp." From all this it is clear that the ark as a whole was a symbol of God's majestic and awful presence. Let us now consider its parts. (a) The ark contained a copy of the law.

अध्याय x

पुजारी

लेवीय पुरोहिताई ईसाई पौरोहित्य की विशिष्ट थी। "तुम भी जीवित पत्थरों की नाई आत्मिक घर बनते हो, कि याजकों का पवित्र समाज बनो, ताकि आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हो," 1 पतरस 2:5। पद 9 भी "परन्तु तुम तो एक चुनी हुई जाति, राजपदधारी याजकों का समाज, पवित्र जाति, और परमेश्वर की निज प्रजा हो।" "तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है, क्योंकि तू ने वध होकर अपने लोहू से हर एक गोत्र, और भाषा, और लोग, और जाति के लोगोंको परमेश्वर के लिथे मोल लिया, और उन को परमेश्वर के लिथे ठहराया है।" हमारा परमेश्वर एक राज्य और याजक है, और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं" प्रकाशितवाक्य 5:9, 10। घूंघट के माध्यम से एक नया और जीवित तरीका, अर्थात् उसका मांस; और परमेश्वर के भवन का महायाजक होकर, आओ हम सच्चे मन से, और संपूर्ण विश्वास के साथ, विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर उसके निकट जाएं" इब्रानियों 10:19, 20 "हमारी एक वेदी है, जिस पर उन्हें खाने का अधिकार नहीं, जो तम्बू की सेवा करते हैं" इब्रानियों 13:10। साथ ही पद 15:11 "इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान परमेश्वर के लिये सर्वदा चढ़ाते रहें, अर्थात्, होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं।"

ये शास्त्र सिखाते हैं:

1. कि सभी ईसाई मसीह में परमेश्वर के पुजारी हैं। इसलिए वर्ग पुरोहिताई जैसी कोई चीज नहीं है, जैसा कि रोम के चर्च और इंग्लैंड के चर्च में प्राप्त होता है। यह गलती सभी युगों में रही है, क्योंकि इसे चर्च पर थोपा गया था, त्रुटि का एक विपुल स्रोत। निस्संदेह यह मसीह-विरोधी वृक्ष की जड़ है। और इस बुराई को जड़ से मिटाना कितना कठिन है! "पादरी" और "लोकप्रिय", एक-व्यक्ति मंत्रालय के बीच का अंतर, और वास्तव में केवल आधिकारिकता के हर रूप को इस विशाल बुराई के लिए खोजा जा सकता है।

2. कि "यहाँ पर याजकपद बदला जा रहा है, व्यवस्था में भी परिवर्तन है।" हमारे बलिदान "आध्यात्मिक" हैं, और इसलिए हमारी वेदी आध्यात्मिक है। "जनता का बलिदान" और एपिस्कोपल चर्च की "वेदी", पुरोहित बनियान, धूप की पेशकश, सभी समान रूप से "नए और जीवित तरीके" के लिए विदेशी हैं। वे या तो मृत यहूदी धर्म से संबंधित हैं या मूर्तिपूजा से संबंधित हैं।

3. कि कानून के तहत पुजारी का अभिषेक मसीह के लिए ईसाई के अभिषेक का विशिष्ट था।

हमने पिछले अध्यायों में देखा है कि होमबलि की वेदी और मिलापवाले तम्बू के आँगन में हौदी की सापेक्ष स्थिति ने उद्धार के मार्ग का संकेत दिया। क्योंकि जैसे दोनों मिलापवाले तम्बू के द्वार

Paul says: "The law is holy, just, and good." It was the symbol of God's perfect holiness. It was the "law of the covenant," and hence its place in the ark denotes that God is "a covenant keeping God." "The word of the Lord cannot be broken," it "endureth forever," and what He hath promised He will most surely perform. When God was manifested in the flesh, in the person of His Son Jesus Christ, was fulfilled the words of David, "Thy law have I hid in my heart, that I might not sin against Thee," and Jesus "fulfilled the law and made it honor able." (b) The ark also contained the "golden pot of manna." The manna was the supernatural food with which God fed His people in the barren desert. It came down from heaven; it was mysterious--the people said, "What is it?" it was not the produce of earth, for the desert was barren. It was miraculously preserved in the ark. Now all this speaks plainly of the deep purpose of God, which was hidden for ages, but now revealed in Jesus Christ, concerning the bread of life, which, if a man eat, he shall live forever. "I am the bread of life," said Jesus. "Your fathers did eat manna in the wilderness, and are dead. This is the bread which cometh down out of heaven, that a man may eat thereof and not die." This is "the mystery of godliness: God manifest in the flesh." (c) In the ark was also deposited "Aaron's rod that budded." The history of this rod reveals its significance. Korah, Dathan and Abiram aspired to the priesthood, and led a rebellion against Moses and Aaron. To establish Aaron and expose their rebellion, God ordered that a dry stick for each tribe, with the name of the head of each tribe written upon it, should be laid up in the tabernacle. "And it came to pass that on the morrow Moses went into the tabernacle of witness, and behold the rod of Aaron for the house of Levi was budded, and brought forth buds and blossoms and yielded almonds." Thus, Aaron and his house were fully and finally established in the priesthood; the rebellious party suffering a terrible death as the reward of their temerity. Now why was this rod placed in the ark? According to Numb. 11:10 it was "kept for a token against the children of rebellion." This was its immediate use. But while it served that purpose for Israel, it indicates also the secret purpose of God concerning the royal priesthood of Jesus Christ. Consider: it was a dry stick. Christ was "as a root out of a dry ground." But now it has blossomed and become fruitful as the great High Priest on His throne.

Thus, the contents of the ark speaks eloquently of the secret purpose of God hidden for ages, but now revealed in Jesus. "As it is written eye hath not seen, nor ear heard, nor hath it entered into the heart of man the things that God hath prepared for them that love Him, but God hath revealed them unto us by His spirit, for the spirit searcheth all things--yea, the deep things of God."

3rd. The mercy seat. The name of this beautiful covering of the ark is very suggestive. It is THE PROPITIATORY. It

के साम्हने खड़े थे, वैसे ही मसीह का क्रूस और बपतिस्मे की विधि कलीसिया के साम्हने खड़ी है, और उस में प्रवेश करने के लिये उसके पास पहुंचना आवश्यक है। फिर, आंगन के द्वार के माध्यम से सबसे पहले वेदी और फिर हौदी थी। इसलिए, उद्धार के मार्ग में पापी सबसे पहले क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह के पास आता है, विश्वास करता है, पश्चाताप करता है; फिर यीशु में एक पश्चातापी विश्वासी के रूप में उसका बपतिस्मा होता है, और वह चर्च में प्रवेश करता है। अब इस क्रम को शिशु बपतिस्मा की शुरुआत से उलट दिया गया है। यह अभ्यास मसीह के क्रूस के सामने "पुनर्जन्म की हौदी" रखता है, और इसने सिद्धांत की कुछ भयानक त्रुटियों को जन्म दिया है; के लिए, बपतिस्मा और पापों की क्षमा और नए जन्म के बीच पवित्रशास्त्र के संबंध को सही ढंग से पहचानते हुए, शिशुओं के लिए लगभग सभी बपतिस्मा संबंधी सेवाएं सिखाती हैं कि बच्चे को बपतिस्मा में पुनर्जीवित किया जाता है। और मंत्रियों और लोगों पर इस सिद्धांत की इतनी मज़बूत पकड़ है, कि पूर्व अक्सर मृत शिशु पर अपनी दफन सेवा को पढ़ने के लिए झिझकते हैं जो कि बिना बपतिस्मा के मर गया है; और बाद वाले अक्सर ऐसे मामले में शिशु की कल्पना करते हैं। शिशु बपतिस्मा, चीजों की प्रकृति में, गलत होना चाहिए, जैसा कि हमने देखा है कि भगवान का वचन बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति के दिल में मौजूद और ऑपरेटिव होता है। बपतिस्मा केवल शारीरिक क्रिया नहीं है। यह संपूर्ण मनुष्य, आत्मा और शरीर का बपतिस्मा है; इसका अर्थ है पाप के लिए मृत्यु, और "जीवन के नएपन" के लिए पुनरुत्थान; यह बाहरी प्रतीक द्वारा आंतरिक विश्वास और पश्चाताप को व्यक्त करता है। अब चूँकि इनमें से कोई भी बात शिशुओं के लिए सही नहीं हो सकती है, यह निश्चित है कि शिशु बपतिस्मा परमेश्वर के वचन के विपरीत है। तो क्या? पुजारियों के अभिषेक का क्रम भगवान के रूपांतरण का क्रम है। पौरुहित्य के उम्मीदवार के रूप में पहले अपने बलिदान के साथ आए, और विश्वास और पश्चाताप से भरे हुए निर्दोष पीड़ित के लहू के माध्यम से प्रायश्चित प्राप्त किया; तब उसे हौदी में नहलाया गया; फिर शुद्ध सफेद वस्त्रों में पहरा दिया गया; और तब पवित्रस्थान में तम्बू में सेवा टहल करने को गया; इसलिए परिवर्तन में गरीब खोए हुए पापी को पहले विश्वास और पश्चाताप के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए उद्धारकर्ता के पास आना चाहिए - उसके क्रूस के लहू के पास - और इस प्रकार विश्वास करते हुए, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर पानी में बपतिस्मा लेना चाहिए।, और इस प्रकार "मसीह को धारण करना" वह अपनी निष्कलंक धार्मिकता में पहना जाता है, और चर्च में प्रवेश करने और उसी का एक जीवंत सदस्य बनने के लिए फिट होता है।

और अब इस अध्याय को समाप्त करने में मेरे दयालु पाठक पूछें, "क्या मैं इस तरह से मसीह के पास आया हूँ?" मैं आपसे नए नियम की खोज करने और अपने लिए न्याय करने के लिए कहता हूँ कि यह "प्रभु का मार्ग" है या नहीं। पहले यीशु के पास आओ-परमेश्वर के मेमने के पास आओ-नई वाचा के लहू के पास आओ, आओ और उस पर भरोसा करो, आओ और उससे प्यार करो, आओ और अपने आप को पूरी तरह से उसे सौंप दो, और इस तरह, और इस तरह ही, आओ उसका बपतिस्मा, "मसीह के साथ गाड़ा

indicates the pitiful, merciful and loving nature of God. While the contents of the ark pointed to God's righteousness and faithfulness, and indicated the coming of Christ as our righteousness, and our Great King and Priest; the mercy seat tells us that God is propitious and desirous of saving us. It indicates that in the fulness of time God would provide a real mercy seat--Jesus Christ--of which this was a beautiful shadow. "He is THE propitiatory for our sins, and not for ours only but for the sins of the whole world." Here observe how truth and righteousness, with love and mercy are beautifully blended together; the former in the ark, and the latter in the mercy seat. So in Christ "mercy and truth have met together."

4th. The cherubims of glory. These were angelic images looking down on the mercy seat, with wings extended towards each other. Their attitude indicated their intense desire to understand the mysteries of the ark and mercy seat. They represent the angels and archangels that surround the throne of God in the heavens. We read of cherubims being placed at the entrance of Eden, to guard the tree of life, and prevent guilty man from eating thereof. This was a merciful prevention, as in this fallen sinful state no man would willingly "live always." Here again they guard the mercy seat; and as they are looking down so intently on the mercy seat and the ark we are reminded of the saying "which things (the things of our salvation) the angels desire to look into." There is no doubt at all that the angels of God take a deep interest in the destiny of the human race. Of the children Christ said, "THEIR angels do always behold the face of My Father which is in heaven." In Hebrews the question is asked, "Are they not all ministering spirits sent forth to minister to them who should be heirs of salvation?" Jesus represents them as rejoicing in the joy of God "over one sinner that repenteth more than over ninety and nine just persons that need no repentance." They play an important part throughout the Old Testament in ministering to man of the things of God; and in the great future--as seen in Revelation--they will join in the glorious triumphs of the King of kings and Lord of lords.

5th. The shechinah of glory. This, as we have seen, was the supernatural light that streamed down upon the mercy seat, and was the only light of the holy of holies. The inner tabernacle as before seen, was the symbol of heaven, and here we have a symbol of God Himself. Heaven needs no light of nature--God is its light. But THIS place and this light indicated that God had come down to dwell with man. As it is written, "He dwelleth between the cherubims." God also said to Moses, "There will I commune with thee from above the mercy seat from between the two cherubims, which are upon the ark of the testimony." It is thus a glorious forecast of the glory of God in relation to the Church of Jesus. But of this later on. Only let me here note the fact that in both compartments of the tabernacle there

जाना," और "मसीह में।" पुराने जीवन को गाड़ दें - बूढ़े आदमी को, और मसीह, पवित्रता और अनंत काल के लिए जीने के लिए प्रतीकात्मक कब्र से उठें। फिर खुशी के साथ उनके पवित्र स्थान - चर्च में प्रवेश करें, और भक्तिपूर्वक महान राजा की सेवा करें, और "संतों की संगति" का आनंद लें।

अध्याय ग्यारहवीं

पवित्र स्थान

विधिवत् पवित्र होकर याजक पवित्र स्थान में सेवा करने को उस में गया। पवित्र स्थान मिलाप वाले तम्बू का पहला भाग था, जो "परम पवित्र" या भीतरी भाग से बहुत समृद्ध सामग्री के एक मोटे पर्दे से विभाजित था। यह पर्दा पूरी तरह से पवित्र स्थान को दृष्टि से छिपा देता था, और महायाजक द्वारा वर्ष में केवल एक बार पारित किया जाता था। निवास के द्वार का परदा भी परदे के समान उत्तम सामग्री से बना था, और निःसन्देह उसे नीचे रखा गया था ताकि पवित्र स्थान बाहर से दिखाई न दे। अब, यह पवित्र स्थान, अपने फर्नीचर और ईश्वरीय सेवा के साथ, यीशु मसीह के चर्च की विशिष्टता है। चर्च शब्द से मेरा मतलब उस सार्वभौमिक, रहस्यमयी चीज़ से नहीं है जिसे अब बहुत से लोग चर्च मानते हैं, लेकिन मसीह के लोगों की सभा, आत्मा और सच्चाई में भगवान की पूजा करने के लिए किसी भी स्थान पर नियमित रूप से बैठक करना; या दूसरे शब्दों में, चर्च ऑफ गॉड जैसा आदेश दिया गया है और नए नियम में हमारे सामने रखा गया है। इस चर्च में सभी याजक हैं - जैसा कि हमने देखा है - ऐसे रक्त और पानी से बने हैं - मसीह में विश्वास, और बपतिस्मा। "आओ, हम (याजक के रूप में) निकट आएँ, और हमारे हृदय पर विवेक का दोष दूर हो, और हमारा शरीर शुद्ध जल से धुला हुआ हो।" और जैसा कि कोई भी मिलाप वाले तम्बू में प्रवेश करने की हिम्मत नहीं करता है जो एक विधिवत नियुक्त पुजारी नहीं था, इसलिए किसी को भी गिरजाघर में प्रवेश करने और इसके विशेषाधिकारों में भाग लेने का अनुमान नहीं लगाना चाहिए जिसे परमेश्वर की नियुक्ति के तरीके में विधिवत रूप से समर्पित नहीं किया गया है।

चर्च के बारे में जब पहली बार स्थापित किया गया (प्रेरितों के काम 2:42) कहा जाता है, "वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।" यह मार्ग उन सिद्धांत चीजों को इंगित करता है जो चर्च की भक्ति और पूजा में शामिल हैं। और मिलापवाले तम्बू की, इसके साजो-सामान और इसकी सेवाओं की हमारी जाँच में, हम पाएंगे कि ये चीज़ें वे चीज़ें थीं जिन्हें सबसे प्रमुख रूप से चिन्हित किया गया था।

दीवत।

हम सोने की दीवत से शुरू करते हैं। यह फर्नीचर का एक बहुत ही सुंदर और महंगा टुकड़ा था। इसे सोने के एक ठोस पिंड से पीटा गया था, जिसका वजन एक टैलेंट था, जो हमारे पैसे में 5475 पाउंड के बराबर था। इसमें एक सीधा दीपक के साथ एक केंद्रीय

was no floor but the desert sand. In the next chapter we shall see that this was a point of great significance.

CHAPTER XV

THE HIGH PRIEST

THE consideration of the High Priest is our last but greatest theme. That the High Priest was intended to be a type of Christ the New Testament fully and abundantly proves. But, as we shall see, the glory and greatness of Christ require even more than the Jewish High Priest to illustrate it. As the subject is broad it will be most convenient to divide it into sections. Let us take first HIS GARMENTS.

These were rich and beautiful. The under garments were of pure white linen. We are reminded thereby of the purity and stainlessness of the character and life of Jesus, who was "holy, harmless, and undefiled, and separate from sinners." Next came the "robe of the ephod." This was a kind of tunic, of blue material, descending below the knees. "Upon the hem of it" were pomegranates of blue and purple and scarlet; alternated with golden bells, which sounded sweetly when the High Priest went into the Holy of Holies. It is noteworthy that the robes were of the same material and colors as the hangings and inner coverings of the tabernacle. The tunic of the High Priest seems to indicate the holy joy which is brought to us in the Gospel of Christ. Over this robe came the ephod. This was an elaborate and costly article of dress. It was a short tunic, hung by shoulder pieces, and was made of gold, blue, purple, scarlet, and fine twined linen. Gold plates were beaten out thin and cut into threads, and worked artistically into the stuff. When visiting the Indian and Colonial Exhibition in London some time ago, I saw some Oriental needlework of gold, which struck me as strangely corresponding to the description of this ephod. The work surpassed in richness and beauty all that I had ever seen before. We have in this ephod a symbol of the divine glory and dignity of our great High Priest; not as He appeared on earth, but as He now appears in the presence of God for us. In the front of this beautiful ephod was placed the breastplate. This, too, was an article of glorious beauty. It was made square, and doubled, so as to form a pocket, covering the breast. Its groundwork was of the same material as the ephod; but its chief beauty consisted of twelve precious stones of different colors set in it, in four rows of three in each. On each stone was engraved one of the twelve tribes of Israel. Hence the whole twelve tribes were represented on this breastplate; and laid upon the heart of the High Priest as he appeared before God. This breastplate of twelve precious stones, representing the twelve tribes, is a beautiful symbol of Christ our great High Priest bearing the church, which He loves so much, on his heart; while interceding for her in His Father's presence.

स्टैंड था, और छह शाखा-दीपक, दोनों ओर तीन। पूरे को स्वाद और सजावटी रूप से डिजाइन किया गया था, अनार के फूलों और फलों के आकार में काम किया जा रहा था। जैतून के जामुन से निकाले गए तेल को दीयों में जलाया जाता था, जिससे अत्यधिक तेज ज्वाला निकलती थी। बत्तियों को कभी भी बुझने नहीं दिया जाता था, लेकिन यह याजकों का कर्तव्य था कि वे उन्हें तेल से भरते और लगातार छँटाते रहें। ट्रिमिंग में सहायता के लिए गोल्डन स्नफ़र प्रदान किए गए, लेकिन कोई बुझाने वाला नहीं। दीपाधार को पवित्र स्थान के बाईं ओर रखा गया था, और वह केवल उसी का प्रकाश था।

अब, चर्च ऑफ़ क्राइस्ट में, क्या यह सुंदर दीपाधार, इसकी जलती हुई लपटों के साथ, पूर्वाभास देने का इरादा था? उत्तर ईश्वरीय प्रेरणा का शब्द है, या "प्रेरितों की शिक्षा" है। वह शिक्षा परमेश्वर का वचन है, और कुछ नहीं। निम्नलिखित तुलनाएँ इस निष्कर्ष की सच्चाई को दर्शाएंगी:

1. दीवट बड़ा अनमोल था, वह शुद्ध ठोस सोने का था। परमेश्वर का वचन शुद्ध और अमूल्य है। जो लोग इसके मूल्य के बारे में कुछ भी जानते हैं, वे पूरी तरह से भजनकार के कथन का समर्थन करते हैं: "हे परमेश्वर, तेरे विचार भी मेरे लिए कितने अनमोल हैं!" परमेश्वर का वचन अनमोल है क्योंकि यह परमेश्वर, स्वर्ग, अनंत काल को प्रकट करता है; मुक्ति, पवित्रता और अनन्त जीवन का मार्ग दिखाता है। एक शब्द में क्योंकि यह मसीह से भरा हुआ है।
2. शुद्ध सोना सबसे स्थायी पदार्थ है। यहाँ दीवट फिर से परमेश्वर के वचन की गवाही देती है जो "हमेशा तक बना रहता है।"
3. यह बेहद खूबसूरत था। परमेश्वर का वचन पवित्रता की सुन्दरता से भरा है।

4. सात शाखाएँ पूर्णता की ओर इशारा करती हैं - पूर्णता। 'सात नंबर सही नंबर था। यह काफी बल और सुंदरता के साथ सुझाव दिया गया है (मस्तोन के मसीह को टैबरनेकल में देखें), कि ये सात दीपक बाइबिल को इंगित करते हैं, इसके तीन महान विभाजन - एक तरफ कानून, भजन, और नबी; और नए नियम के तीन खंड-दूसरी ओर प्रेरितों के काम, पत्रियाँ और प्रकाशितवाक्य; मुख्य केंद्रीय तने के रूप में सुसमाचार में मसीह के साथ। हालाँकि मैं इन सात शाखाओं के संबंध में अन्य मामले की ओर इशारा करने के लिए तैयार हूँ। मैं इसे लेता हूँ कि पुरानी वाचा की संस्थाएँ उन चीजों की विशिष्ट थीं जो अनिवार्य रूप से नई वाचा से संबंधित थीं। दीपाधार इसलिए नई वाचा की शिक्षा, अर्थात् प्रेरितों की शिक्षा का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए, मैं सात शाखाओं को लेता हूँ-पूर्ण संख्या-का प्रतिनिधित्व करने के लिए "आत्मा की एकता" जैसा कि इफिसियों 4:1-6 में संक्षेप में कहा गया है: "इसलिये मैं जो प्रभु में बन्धु हूँ, तुम से बिनती करता हूँ, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए हो, उसके योग्य चाल चलो, सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर, प्रेम से एक दूसरे को सहना, और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता बनाए रखने का यत्न करना। एक देह और एक ही आत्मा है, जैसे तुम बुलाए भी गए हो, एक ही बुलाहट की आशा से; एक प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, एक परमेश्वर और

The precious stones speak of the VALUE JESUS PUTS upon His church. Of His faithful people He says "They shall be Mine . . . when I come to number up My jewels." He never forgets them. They are beautiful with the beauty of heaven; they shine in the light of God. On each of the High Priest's shoulders was a plate of gold, also secured to the ephod. In each plate was set a large onyx stone, with six of the names of the tribes of Israel engraved therein. Here again the twelve tribes are represented, and the church is foreshadowed as being borne upon the shoulders of Christ. The shoulder is in Scripture a symbol of responsibility, and burden-bearing. Thus in Isaiah 9, "The government shall be upon His (Christ's) shoulder." The sheep that was lost and found was laid upon the good shepherd's shoulder, while he bore it home rejoicing. The shoulder plates are therefore intended to illustrate how Jesus, as our great High Priest, undertakes our cause, and bears the burden of our cares. "Having then a great High Priest, who has passed through the heavens, Jesus the Son of God, let us hold fast our confession. For we have not a High Priest that cannot be touched with the feeling of our infirmities; but one that hath been in all points tempted like as we are, yet without sin. Let us therefore draw near with boldness unto the throne of grace that we may receive mercy, and may find grace to help us in time of need" (He. 4:14-16). "For in that He Himself hath suffered, being tempted, he is able also to succour them that are tempted" (chap. 2:18). The CURIOUS GIRDLE, tied round the waist of the High Priest, was of the same rich and beautiful work as the ephod. Its symbolic significance may be gathered from the following Scriptures:--"God, that girded me with strength, and maketh my way perfect, He maketh my feet like hinds' feet" (Ps. 18:32-33). "Thou hast turned for me my mourning into dancing; thou hast loosed my sackcloth and girded me with gladness" (Ps. 30:11). "Let your loins be girded about, and your lamps burning, and be ye yourselves like unto men looking for your Lord . . . blessed are those servants whom the Lord when He cometh will be found watching. Verily I say unto you that he shall gird himself; and make them sit down to meat and come and serve them" (Le. 12:35-37). "Jesus took a towel and girded Himself and put water into a basin, and began to wash the disciples' feet" (John 13:3-5). Stand therefore, having girded your loins with truth (Ep. 6:14). From these Scriptures it appears the girdle is a very common figure in inspired writings, and means strength, swiftness, gladness, readiness to serve, truth. Now all these things are true of Jesus as our High Priest. He is mighty to save, quick to deliver, rejoices over his people, ever ready to serve them, and lead them in ways of truth. That this girdle is significant as applied to Christ appears from the appearance of Jesus in glory as revealed to John in Patmos: "And I saw seven golden candlesticks; and in the midst of the candlesticks one like unto a son of man, clothed with a garment down to the foot, and girt about the breasts with a golden girdle" (Rev. 1:12-13). The

सबका पिता, जो सब के ऊपर, और सब के द्वारा, और सब में है।" एक देह और एक ही आत्मा है, जैसे तुम बुलाए भी गए हो, एक ही बुलाहट की आशा से; एक प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, एक परमेश्वर और सबका पिता, जो सब के ऊपर, और सब के द्वारा, और सब में है।" एक देह और एक ही आत्मा है, जैसे तुम बुलाए भी गए हो, एक ही बुलाहट की आशा से; एक प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, एक परमेश्वर और सबका पिता, जो सब के ऊपर, और सब के द्वारा, और सब में है।"

दीपाधार की एकता न केवल इसकी शाखाओं की सही संख्या में देखी गई, बल्कि इस तथ्य में भी देखी गई कि यह सब सोने के एक ठोस द्रव्यमान से पीटा गया था। यह "प्रेषित के शिक्षण" द्वारा व्याख्या की गई आत्मा की एकता का सुंदर सुझाव है। जैसा कि हम इफ में देखते हैं। 4. आत्मा की एकता में सात इकाइयाँ हैं, और सभी एक अनमोल द्रव्यमान से विकसित हुई हैं - प्रभु यीशु मसीह, और सभी अविभाज्य रूप से उससे जुड़े हुए हैं। यदि दीपाधार की किसी एक शाखा को हटा दिया जाता तो वह विकृत हो जाता, और उसकी सिद्धता नष्ट हो जाती। इसलिए, "आत्मा की एकता" में पॉल द्वारा वर्णित किसी भी एक चीज को हटाने के लिए उसकी पूर्णता को नष्ट करना और उसे विकृत करना था। मान लीजिए हम इसके प्रभाव को आजमाते हैं। आइए हम ईसाई धर्म से दूर हो जाएं (क्योंकि यही आत्मा है" का अर्थ है) "एक भगवान।"

आत्मा के साथ शरीर होगा, लेकिन सिर नहीं होगा। आस्था का कोई आकर्षण नहीं होगा, कोई वस्तु नहीं होगी; बपतिस्मा का कोई अंत नहीं होगा और आशा का कोई प्रोत्साहन नहीं होगा।

5. मिलापवाले तम्बू का एकमात्र प्रकाश दीवट का उजियाला था। खिड़कियां नहीं थीं। प्रकृति से कोई प्रकाश उधार नहीं लिया गया था। दीपकों के प्रकाश से याजक ने काम किया, और निवासस्थान की अन्य सब वस्तुएँ स्पष्ट दिखाई देने लगीं। इसकी कोमल, स्पष्ट रोशनी ने पूरे को बड़ी खूबसूरती से रोशन कर दिया। तो चर्च ऑफ क्राइस्ट में। प्रेरितों की शिक्षा ही विश्वास और कर्तव्य का एकमात्र नियम है। यह समझना उन सभी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जो परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं। सभी ईसाई युगों में इसकी उपेक्षा के भयानक और विनाशकारी परिणाम रहे हैं। पिछले अध्याय में हमने देखा है कि प्रेरितों को दैवीय अधिकार के साथ निवेश किया गया था, और चर्च के संस्थापकों और आयोजकों के रूप में अचूक शक्ति के साथ पहना गया था। यदि इस महान सत्य को हमेशा स्वीकार किया गया होता, तो मानव पंथ, सिद्धांत और संप्रदाय असंभव होते। इस प्राधिकरण को प्रकृति और कारण प्रस्तुत करना होगा। जिस अनुपात में "प्रेरितों की शिक्षा" चर्च में प्रचलित है, क्या हम ईसाई के रूप में हमारे स्थान और कार्य को समझेंगे, और उनके सभी अध्यादेशों में मसीह की महिमा को देखेंगे।

High Priest wore also a MITRE or turban on the head. This was of fine linen or more probably silk.

It had a blue band, and in the front, over the eyes, was a plate of burnished gold with the words "HOLINESS TO THE LORD" inscribed upon it. The word holiness means consecrated, or wholly set apart to the Lord's service. Jesus needs no such inscription, for all the Bible says about Him has this truth indelibly engraved upon it. His whole life on earth was consecrated, and His ministry above is wholly devoted to God and His church. The "URIM AND THUMMIM" were placed within the pocket of the breastplate. We are not informed what these were. Some suppose them to have been brilliant stones that increased or decreased in brightness, according as God intended them to guide in judgment. Their names signify "lights and perfections." The following references are interesting: "And of Levi he said, thy Thummim and thy Urim are with thy godly one" (Deut. 33:8). "And he (Joshua) shall stand before Eleazar the priest, who shall enquire for him by the judgment of the Urim before the Lord" (Num. 27:21). "And when Saul enquired of the Lord, the Lord answered him not, neither by dreams, nor by Urim, nor by prophets" (1 Sam. 28:6).

"And thou shalt put in the breastplate of judgment the Urim and the Thummim; and they shall be upon Aaron's heart, when he goeth in before the Lord; and Aaron shall bear the judgment of the children of Israel upon his heart before the Lord continually" (Ex. 28:30). The following extract from Fausset's Critical and Expository Bible Cyclopaedia will be read with interest: "Speaker's Comm. thinks that lots were the mode of consultation, as in Acts 1:2-6; Prov. 16:26. More probably stones with Jehovah's name and attributes--'lights' and 'perfections' engraven on them were folded within the ephod. By gazing, the High Priest, with ephod on, before the Lord, was absorbed in heavenly ecstatic contemplation; and by God was enabled to declare the divine will . . . Philo says that the High Priest's breastplate was made strong in order that he might wear as an image the two virtues which his office needed. So, the Egyptian judge used to wear the two figures of Thanei (answering to Thummim) truth and justice." Over the heart of mummies of priests too was a symbol of light (answering to Urim). It is evident that, whatever Urim and Thummim were, their use was to indicate the perfect and unalterable will of God; and this they did by some unmistakable sign unknown to us. What a beautiful type of Christ we have here. He is the 'word of God,' 'the way the truth and the life,' the perfect revelation of the mind and will of God to man. And the word which he hath spoken shall judge us at the last day. "The word of the Lord is perfect." From it there is no appeal. Would that all who profess to love the Lord believed this. It would settle all controversy; exclude all

6. याजकोंको दीपकोंको छांटते और जलाते रहना था। इसलिए, चर्च में भगवान के लोग पहले दिए गए विश्वास को बनाए रखने और इसे सभी प्रक्षेपों और विकृतियों से मुक्त रखने के लिए बाध्य हैं।

इस प्रकार, दीवट मसीह के उत्प्रेरित प्रेरितों की शिक्षा का सूचक था। और जैसे कि उस शिक्षा का तना और सार मसीह था, हम देखते हैं कि दीवट ने कितनी सिद्धता से उसका पूर्वाभास किया। तम्बू में दीवट के होने का कारण यह था कि उसका प्रकाश चमके। इसलिए, कलीसिया में प्रेरितों की शिक्षा का कारण यह है कि मसीह हमारी ज्योति हो सकता है, कि हम उसकी ज्योति से भर जाएं, और अपनी बारी में "जगत की ज्योति" होने के लिए संसार में निकल जाएं।

अध्याय बारहवीं

पाव रोटी की मेज

यह बबूल की लकड़ी का सोने से मढ़ा हुआ मेज था, और उस पर सोने का मुकुट था। यह लगभग साढ़े तीन फुट लम्बा, दो फुट चौड़ा और ढाई फुट ऊँचा था। इसमें बर्तन, चम्मच, कटोरे और ढक्कन थे; सभी शुद्ध सोना। इस महँगी और सुन्दर मेज का उपयोग "शेव-ब्रेड" रखने के लिए किया जाता था। लेव में पूर्ण निर्देश दिए गए हैं। 24:5-9. "शेव-ब्रेड" में बारह अखमिरी केक शामिल थे: प्रत्येक जनजाति के लिए एक। उन्हें मेज पर दो पंक्तियों में रखा जाना था - प्रत्येक में छह "प्रभु के सामने।" वे प्रत्येक सप्ताह के दिन केवल याजकों द्वारा खाए जाते थे; और जैसे पुरानी रोटियाँ निकाली जाती थीं, वैसे ही उनके स्थान पर नई रोटियाँ रख दीं। यह मेज़ सोने के दीवट के सामने, निवास के दाहिनी ओर खड़ी थी।

इसमें कोई संदेह नहीं है, मुझे लगता है, कि इसका उद्देश्य "रोटी को तोड़ना" का प्रतीक था, अगली बात प्रेरितों के काम 2:42 में उन बातों के बीच देखी गई जिन्हें चर्च ने "दृढ़ता से" मनाया। तुलना के बिंदु उसके सार के लिए छाया की तरह स्पष्ट हैं। पहला। मेज पूरी तरह से सोने से ढकी हुई थी (हम तम्बू में हर जगह सोने से मिलते हैं), जो प्रभु के भोज में रखी गई कीमती चीजों की ओर इशारा करता है। सोना बेशकीमती है और किसी भी चीज़ से ज्यादा मांगा जाता है। लेकिन भूखी आत्मा के लिए प्रभु की मेज का आत्मिक पर्व "सोने के नाश होने" से कहीं अधिक मूल्यवान है। दूसरा। रोटी प्रतिनिधि थी। वे बारह रोटियाँ इस्राएल के बारह गोत्रों को दर्शाती थीं। प्रभु की मेज की रोटी भी प्रतिनिधि है। केवल एक रोटी है, और यह मसीह के शरीर का प्रतिनिधित्व करता है: "यह मेरा शरीर है।

बस यहाँ यह ध्यान देना अच्छा हो सकता है कि जब पुजारी तम्बू की सेवा में लगा हुआ था, तो मेज की रोटी, और बलिदान में चढ़ाए जाने वाले जानवरों के हिस्से, (जहाँ तक हम जानते हैं) उसका एकमात्र भोजन था। और यह कितना धन्य सच है कि ईसाई मसीह

adverse human opinions and lead us all in the "light of the Lord."

THE APPOINTMENT OF THE HIGH PRIEST

The Jewish priesthood was chosen from the tribe of Levi. Aaron was of that tribe, and all succeeding high priests were of his line. "The High Priest of our confession" was of the tribe of Judah according to the flesh. Thus, the priesthood of the Christian religion is entirely "changed," as is also "the law." But just here I want to point out a very important matter. Our blessed Lord was not our great High Priest in the flesh. His solemn consecration to that exalted office was by His death and resurrection. This appears clear from the following: "For every high priest being taken from among men, is appointed for men in things pertaining to God that he may offer both gifts and sacrifices for sins, who can bear gently with the ignorant and erring, for that he himself also is compassed with infirmities, and by reason thereof is bound, as for the people so also for himself, to offer for sins. And no man taketh this honor unto himself, but when he is called of God, as was Aaron. So, Christ also glorified not Himself to be made an High Priest, but He that spake unto Him, Thou art My Son, this day have I begotten Thee. As He saith also in another place, Thou art a Priest for ever after the order of Melchizedek." By comparing Ps. 2:7 and Acts 13:33, we see that the words "this day have I begotten Thee" were said of His resurrection, or birth from the grave. And it is evident that it is to this time that the above words quoted from Hebrews refer. God claimed Him from the dead as His only begotten Son, and raised him to His High-Priesthood in the heavens. This will become self-evident as we proceed to examine the nature of His priesthood still further. The above text says it was "after the order of Melchizedek," and in order to show the true nature of Christ's priesthood some remarkable things are said of this wonderful man of old. Melchizedek, we are told, was "without father, without mother, without genealogy, having neither beginning of days nor end of life, but made LIKE UNTO THE SON OF GOD, ABIDETH A PRIEST CONTINUALLY" (Heb. 7:3). Now it is not my intention to speculate about these statements as far as Melchizedek is concerned, but to point out that the writer intends to show that the priesthood of Christ is forever--that it was to be a continuous priesthood, unbroken by death. Hence it follows that Christ was not installed into His high office of High Priest till after His death.

Returning to Melchizedek, his name signifies "King of Righteousness," and he was in reality "King of Salem" (which means peace). He was therefore a king-priest; and these offices he held CONCURRENTLY. Now God says of Jesus, after His resurrection and ascension: "Yet have I set My King upon My holy hill of Zion . . . Thou art My Son, this day have I begotten Thee. Ask of Me, and I will give Thee the nations for Thine inheritance, and the

के लिए (जैसा कि बलिदान और रोटी दोनों में बताया गया है) उनकी आत्मा का एकमात्र भोजन है!

बस इस बिंदु पर यह ध्यान देना अच्छा हो सकता है कि कैसे मिलापवाले तम्बू में सब कुछ सूक्ष्म रूप से निर्दिष्ट किया गया है, यहां तक कि सबसे छोटे और स्पष्ट रूप से सबसे महत्वहीन वस्तु तक। अब यदि मिलापवाले तम्बू और उसकी सेवाओं का उद्देश्य मसीह के गिरजे का पूर्वाभास करना था, तो यह कितना खतरनाक काम है कि प्रभु की किसी भी नियुक्ति को बदल दिया जाए, या उससे दूर कर दिया जाए! निश्चित रूप से यह प्रत्येक ईसाई का कर्तव्य है कि वह प्रभु के अध्यादेशों को अपोस्टोलिक पद्धति के अनुसार प्रशासित करने पर जोर दे। प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को प्रभु भोज के इस मामले से संबंधित गालियों को ठीक करने के लिए लिखना आवश्यक समझा। वे उस आदेश से विदा हो गए थे जो उनके द्वारा उन्हें दिया गया था, और अध्यादेश को एक आम भोजन तक कम कर दिया था, और इस तरह इसके सभी सुंदर महत्व को लूट लिया। आदेश को अक्षुण्ण रखने की आवश्यकता पर उन्हें प्रभावित करने के लिए, वह उन्हें सूचित करता है कि प्रभु ने उसे विशेष रहस्योद्घाटन द्वारा प्रकट किया था। "मुझे यहोवा से वह प्राप्त हुआ, जो मैं ने तुम्हें भी पहुंचा दिया, कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया रोटी ली, और धन्यवाद करके उसे तोड़ा, और कहा, यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है; यह मेरे स्मरण के लिये किया करो। इसी रीति से प्याला भी भोजन के बाद यह कहकर, कि यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है; जब जब तुम उसे पीओ, तब मेरे स्मरण के लिये ऐसा ही किया करना। जब तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।" इस सुंदर और प्रभावशाली अध्यादेश में शामिल होने के लिए, पहले ईसाई प्रत्येक प्रभु-दिवस (प्रेरितों के काम: 20:7) में एक साथ आए, इस प्रकार उनकी मृत्यु के प्रतीकों को उस दिन के साथ जोड़ दिया जिस दिन वह मरे हुएों में से जी उठे: एक सबसे उपयुक्त और उपयुक्त मिलन। लेकिन यह दैवीय अध्यादेश पुरुषों की उतावलेपन को कैसे धिक्कारता है, जो इस दैवीय अध्यादेश के साथ छेड़छाड़ करने में खुद को ईश्वर से अधिक बुद्धिमान समझते हैं - कुछ लोगों से प्याले को रोकते हैं; कुछ लोग पाव को सौ टुकड़ों में काटते हैं, इस प्रकार "एक शरीर" की आकृति को नष्ट कर देते हैं; कुछ महीने में केवल एक बार, या यहाँ तक कि एक चौथाई बार भी इसमें शामिल होते हैं, इसलिए मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच मिलन को नष्ट कर देते हैं; और कुछ इसे शुरुआत के बजाय, केवल बाद की सेवा बना रहे हैं, इसे मसीह के बारे में अपनी अद्भुत शिक्षा के कारण केंद्र और एक साथ मिलने का मुख्य कारण बनाते हैं, जो संतों की सभा में प्रमुख और केंद्र है। इस प्रकार "एक शरीर" की आकृति को नष्ट करना; कुछ महीने में केवल एक बार, या यहाँ तक कि एक चौथाई बार भी इसमें शामिल होते हैं, इसलिए मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच मिलन को नष्ट कर देते हैं; और कुछ इसे शुरुआत के बजाय, केवल बाद की सेवा बना रहे हैं, इसे मसीह के बारे में अपनी अद्भुत शिक्षा के कारण केंद्र और एक साथ मिलने का मुख्य कारण बनाते हैं, जो संतों की सभा में प्रमुख और केंद्र है। इस प्रकार "एक शरीर" की आकृति को नष्ट करना; कुछ महीने में

uttermost parts of the earth for Thy possession. Thou shalt break them with a rod of iron. Thou shalt dash them in pieces like a potter's vessel" (Ps. 2:6-9). "David ascended not into the heavens; but he saith himself, The Lord said unto my Lord, sit Thou on My right hand till I make Thine enemies the footstool of Thy feet" (Acts 2:34-36). Christ is thus seen to be on the throne of God, reigning as King--"A PRIEST UPON HIS THRONE;" and not as Aaron before the throne. "He (HIMSELF) is the propitiation (mercy seat) for our sins."

THE OFFICE OF THE HIGH PRIEST

"Every High Priest is appointed to offer both gifts and sacrifices; wherefore it is necessary that this High Priest (Jesus) also have somewhat to offer." And this He had! But what an offering! He needeth not, like the high priest of the law, to offer for himself, but "He died the just for the unjust;" He "offered Himself without spot to God;" "for such a High Priest became us who was holy, harmless, undefiled and separate from sinners." And "Christ having come a High Priest of God things to come, through the greater and more perfect tabernacle, not made with hands, that is to say, not of this creation, nor yet through the blood of goats and calves, but through His own blood, entered in once for all into the holy place, having obtained eternal redemption."

As our High Priest, Jesus is full of sympathy for His suffering saints. For verily not of angels doth He take hold, but He taketh hold of the seed of Abraham. Wherefore it behoved Him in all things to be made like unto His brethren, that He might become a merciful and faithful High Priest in things pertaining to God, to make propitiation for the sins of the people, for in that He Himself hath suffered, being tempted, He is able to succour them that are tempted." "For we have not a High Priest that cannot be touched with a feeling of our infirmities, but one that hath been in all points tempted like as we are, yet without sin."

"Though He was a son, yet learned He obedience by the things which He suffered; and having been made perfect, He became unto all them that obey Him, the author of eternal salvation; named of God a High Priest for ever after the order of Melchizedek." Jesus was "made perfect" in the sense of being fully inducted into the office of High Priest and Saviour. For this high office He was fitted and prepared by being tempted and tried in all points as we are; and by offering Himself without spot to God as a sacrifice for our sins. In bringing this little treatise to a close, I wish now to direct special attention to.

THE VEIL

केवल एक बार, या यहाँ तक कि एक चौथाई बार भी इसमें शामिल होते हैं, इसलिए मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच मिलन को नष्ट कर देते हैं; और कुछ इसे शुरुआत के बजाय, केवल बाद की सेवा बना रहे हैं, इसे मसीह के बारे में अपनी अद्भुत शिक्षा के कारण केंद्र और एक साथ मिलने का मुख्य कारण बनाते हैं, जो संतों की सभा में प्रमुख और केंद्र है।

अध्याय XIII

धूप की वेदी

यह दीवट और भेंट की रोटी की मेज के बीच, "परदे के सामने" खड़ा था।

मेज की तरह, यह बबूल की लकड़ी से बना था, शुद्ध सोने के साथ रखा गया था। यह 21 इंच चौड़ा और साढ़े 3 फुट ऊंचा था; और चौकोर आकार में। उसके सिरो पर होमबलि की वेदी के समान सींग थे; और चलने पर उसे सहन करने के लिए उसके किनारों पर डंडे लगे थे। जो धूप याजक उस पर प्रतिदिन सुबह और साँझ जलाते थे, वह मीठी जड़ी बूटियों का मिश्रण था। यह यौगिक विशेष रूप से अगरबत्ती की वेदी पर इस्तेमाल किया जाना था, और लोगों द्वारा मृत्यु के दर्द पर आम तौर पर इस्तेमाल नहीं किया जाना था। यह देखकर कि यह एक दैवीय यौगिक था, हम अच्छी तरह से विश्वास कर सकते हैं कि इसे जलाने से निकलने वाली गंध आनंददायक सुगंधित थी। सुगन्धि जलाने के समय प्रातः और साँझ के समय थे, जब लोग मिलापवाले तम्बू के द्वार पर प्रार्थना करने के लिये इकट्ठे होते थे। लूका 1:8-10 देखें।

इसलिए, इस धूप के लाक्षणिक अर्थ के बारे में हमें कोई संदेह नहीं है। यह कलीसिया की "प्रार्थनाओं" का पूर्वाभास देता है; जैसा कि प्रेरितों के काम 2:42 में कहा गया है, जिसे पाठक कलीसिया की आराधना के शेष कार्य के रूप में याद करेंगे, जिस पर हमें विचार करना है। प्रकाशितवाक्य 8:3-4 में हम पढ़ते हैं, "और एक और स्वर्गदूत आकर वेदी (धूप की) पर खड़ा हुआ, और उसे बहुत धूप दिया गया, कि वह उसे सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं पर चढ़ाए।" सोने की वेदी जो सिंहासन के सामने थी, और पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ धूप का धुआँ स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के सामने ऊपर चला गया। धूप की वेदी के अर्थ की अपनी समझ को दिखाते हुए, दाऊद ने प्रार्थना की, "मेरी प्रार्थना तेरे सम्मुख धूप की नाई प्रगट हो।" हमें और कोई प्रमाण नहीं चाहिए। धूप प्रार्थना का प्रतिनिधित्व करती थी; और जैसा कि सुसमाचार के युग में चर्च ऑफ गॉड का पूरा पूर्वाभास होता है, धूप का अर्थ "प्रार्थना" होना चाहिए जो चर्च में दिव्य पूजा के क्रम का एक अनिवार्य हिस्सा है। यह मिलापवाले तम्बू के अनन्य उपयोग के लिए बनाया गया है, यह दर्शाता है कि कोई भी आराधना परमेश्वर को उन लोगों से स्वीकार्य नहीं है जो नए और जीवित तरीके से उसके पास नहीं आते हैं, जैसा कि इस काम में पहले बताया गया है। यह मानने के लिए कि पापी केवल क्षमा और उद्धार के लिए अपने तरीके से प्रार्थना कर सकता है, यह प्रभु के "मार्ग" को अलग करना है जैसा कि हमने देखा है।

The high priest alone once a year on the great day of atonement entered into the holy of holies within the veil, with the blood of the slain victim, which he sprinkled on and before the mercy seat, to make atonement for the people. Now we are told that Christ entered once for all into the holy place, through the veil with His own blood. Let us carefully consider THE VEIL THROUGH WHICH JESUS PASSED. In Hebrews 10:19-21, we read that the veil through which Christ passed to His glorious throne was His own flesh. In exact accord with this we read that at the same moment that His sacred body was rent and torn on the cross "the veil of the temple was rent in twain from TOP TO BOTTOM." This was GOD'S ACT, and unfolds a glorious truth. The rending of the veil of the temple laid bare and open to view the holy of holies. Mysteries, hidden for ages, were then revealed. For the first time the ordinary priest could look upon that wonderful ark and mercy seat and see the blood stains of generations of sacrifices. What a revelation! The rending of that veil also made but one long compartment, without a veil between.

But let us turn from the shadow to the substance. Christ's precious body was that veil; or rather the real veil, which separated the holy from the most holy place, till it was rent in death upon the cross. To intercede for us, and enter upon His glorious reign, the veil of His flesh must be torn asunder--destroyed: that in His resurrection, spiritual body, He might enter the glorious presence of God with "His own blood" to sprinkle before the throne. And this rending of the body of Christ laid bare the mysteries of God in the gospel. What was hidden for ages then became plain. The glorious things that belong to our peace in Christ were then unfolded. Life and immortality were brought to light. But not only so. As the rending of the veil of the temple made one instead of two compartments, so by the death of Jesus the separation from the divine presence is taken away, and we "draw nigh to God." Let us suppose the veil of the tabernacle removed. What then? Why, there would have been just one long compartment containing the lamp-stand, table, altar of incense, and the ark and mercy seat. Now that is just exactly the state of things in Christ to-day. There is NO VEIL NOW separating the royal priesthood from their King-Priest; NO VEIL separating the Church from God. In the Jewish tabernacle God dwelt with His people, but it was in the holy of holies--beyond the veil, and hidden from sight. But now Jehovah tabernacles or dwells with us. "We will come to you, and make our abode with you," said Jesus of Himself and His Father. There is no need to say, "Who shall ascend into heaven to bring Christ down from above?" for He is with us, in our very midst; as He said, "Lo, I am with you always, even unto the end of the world." Heaven is brought down to earth. The Holy of Holies on the very sand of the desert! And the Church is "seated in heavenly places in Christ Jesus"! What a blessed meaning, then, there is in the words of the inspired commentary on the

जैसा कि पहले इस कार्य में चिन्हित किया गया है। यह मानने के लिए कि पापी केवल क्षमा और उद्धार के लिए अपने तरीके से प्रार्थना कर सकता है, यह प्रभु के "मार्ग" को अलग करना है जैसा कि हमने देखा है। जैसा कि पहले इस कार्य में चिन्हित किया गया है। यह मानने के लिए कि पापी केवल क्षमा और उद्धार के लिए अपने तरीके से प्रार्थना कर सकता है, यह प्रभु के "मार्ग" को अलग करना है जैसा कि हमने देखा है।

धूप की वेदी पर आग होमबलि की वेदी से ली गई थी। "सेंसर" के लिए आग भी उसी जगह से ली गई थी। नादाब और अबीहू को यहोवा के सामने "अजीब आग" जलाने के कारण मौत के घाट उतार दिया गया था, यानी होमबलि की वेदी से आग नहीं निकाली गई थी। इस तरह उन्होंने दो वेदियों के बीच के संबंध को तोड़ दिया। यह जो शिक्षा देता है वह यह है कि हमारी प्रार्थना और स्तुति कितनी भी उत्कट क्यों न हो, यदि हम पहले मसीह के पास नहीं आए हैं और परमेश्वर के अपने नियत तरीके से "प्रायश्चित" प्राप्त नहीं किया है, तो हमारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर के लिए घृणित होंगी।

चर्च की प्रार्थनाओं में स्तुति और धन्यवाद शामिल हैं। सभी प्रार्थनाओं को अतीत में मिली दया के लिए ईश्वर के प्रति आभार के साथ मिश्रित होना चाहिए। अगरबत्ती एक मनमोहक सुगंध थी। यह इंगित करता है कि हमारा परमेश्वर कितना प्रसन्न होता है जब हम उसके सामने आराधना करते हैं, और उसके सामने अपने हृदय की प्रार्थनाएँ रखते हैं।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि मिलाप वाले तम्बू के पहले डिब्बे में इसके फर्नीचर के साथ सुसमाचार के युग में चर्च ऑफ गॉड की पूजा की झलक दिखाई देती है। पाठक को कुरिन्थियों के लिए पॉल के पहले पत्र का अध्ययन करने के लिए आमंत्रित किया जाता है, जिसमें वह जल्द ही देखेंगे कि हमने जिन चीजों का संकेत दिया है, वे ठीक वही हैं जो पॉल ने दिव्य दिशा के तहत चर्च की पूजा के लिए "क्रम में निर्धारित" की थी। साथ में। अध्याय में। 11 वह "परंपराओं" अर्थात् मसीह की विधियों को धारण करने के लिए उनकी सराहना करते हुए आरंभ करता है। इसके बाद वह कुछ अनियमितताओं को ठीक करने के लिए आगे बढ़ता है, जिसमें वे शामिल थे, जबकि मुख्य रूप से "परंपराओं" को वितरित किया गया था। फिर चर्च में "शिक्षण" का संदर्भ दिया जाता है। यह स्पष्ट रूप से आपसी चरित्र का था, और कई लोगों ने इसमें भाग लिया। यहाँ हम "प्रेरितों की शिक्षा" में चर्च के जारी रहने का एक स्पष्ट संकेत देखते हैं। फिर चैप में नीचे करें। 11 हम देखते हैं कि वे "रोटी तोड़ने" में भी लगे रहे; और अध्याय में। 14 संदर्भ "प्रार्थनाओं" के लिए भी बनाया गया था जिसमें चर्च लगातार लगे हुए थे।

अब इससे पहले कि हम पवित्र स्थान को छोड़ दें, हम अच्छी तरह से परमेश्वर के ज्ञान और प्रेम पर विचार कर सकते हैं ताकि उसके गिरजाघर की पूजा हो सके। एक साथ आने में, चर्च के लिए केंद्रीय आकर्षण प्रभु का भोज था जिसे परमेश्वर ने तत्वों के कारण नहीं, बल्कि उन चीजों के कारण ठहराया था, जिनकी ओर उन्होंने

tabernacle: "Having, therefore, brethren, BOLDNESS TO ENTER THE HOLIEST BY THE BLOOD OF JESUS, BY THE WAY WHICH HE DEDICATED FOR US, A NEW AND LIVING WAY, THROUGH THE VEIL, THAT IS TO SAY HIS FLESH; and having a great High Priest over the house of God: LET US DRAW NEAR with a true heart in fulness of faith, having our hearts sprinkled from an evil conscience, and our body washed with pure water." (Heb. 10:19-22.

CHAPTER XVI

CONCLUSION

IN drawing this little work to a close it may be well to summarize the points of comparison. We have seen that the Jewish system was a shadow of the Christian system. Moses was to the Israelites and the tabernacle what Christ is to His people and the Church as an institution. The inspired workmen on the tabernacle were types of the inspired Apostles of Jesus Christ; both working on a perfect pattern, without leaning to their own understanding. The voluntary offerings for the tabernacle spoke of the voluntary principle that pervades the whole of the religion of Christ. The materials of which the tabernacle was built, spoke of the divine excellence and preciousness of all that belongs to the Christian system. The court of the tabernacle indicated the fact that there is a line we must pass, separating the proud and worldly-wise from the humble and teachable, in order that we may rightly understand the things of God. The compactness and unity of the tabernacle pointed to the harmony and unity of the church. The coverings of the tabernacle reminded us of the human and divine nature of Jesus, his humiliation and redemptive work; and also of the way from the corruption and guilt of sin to the beauty of holiness. We also learned from these coverings how different the Church of God is as viewed by outsiders from what it appears to those who minister in holy things within. The brazen altar with its fire, and its great variety of sacrifices and offerings told of the punishment of sin and of the gracious and abundant provision our God has made for the complete removal of our condemnation and guilt by the blood of Christ, who is the Lamb of God that beareth away the sin of the world. The laver, between the altar and the tabernacle, indicated the place and purpose of baptism in relation to the sinners coming into Christ and His church. The holy place, with its lamp-stand, its table of shewbread, and its altar of incense, was a type of the Church of Jesus assembled together for worship--observing "the apostles' teaching and fellowship, the breaking of bread and the prayers." The holy of holies, with its ark, its mercy seat and its wonderful shechinah, represented the holy presence of God--the heavenly state, together with the divine attributes and hidden purposes, the throne of grace and "the blood of sprinkling." The high priest was a type of Christ as our mediator, but the king-priest, Melchizedek is

इशारा किया था। उन्होंने खूबसूरती से मसीह के शरीर और रक्त को प्रस्तुत किया: उन्होंने छुटकारे, क्षमा, भगवान के साथ शांति की बात की; उन्होंने आध्यात्मिक जीवन के स्रोत और पोषण का प्रतिनिधित्व किया, और उन्होंने यीशु मसीह के शानदार प्रकट होने की ओर इशारा किया। क्या इस अध्यादेश द्वारा गिरजे में रखे गए स्थान से अधिक उपयुक्त और उपयुक्त कुछ हो सकता है? निर्देश देने के लिए सक्षम लोगों द्वारा "शिक्षण" या ईश्वरीय सत्य को प्रकट करना भी चर्च के विकास के लिए सबसे आवश्यक है। "शब्द के सच्चे दूध की इच्छा" पीटर कहते हैं, "ताकि तुम इसके द्वारा बढ़ सको।" और अंत में, "प्रार्थनाएँ" (जिसके साथ संयुक्त स्तुति होनी चाहिए) आत्मा को ईश्वर के निकट खींचती है और उसे वहाँ रखती है। वे हम पर परमेश्वर का आशीर्वाद लाते हैं। उनके द्वारा हमें जरूरत के समय मदद करने का अनुग्रह मिलता है। वास्तव में, इन दिव्य नियुक्तियों में हमारे पास वह सब कुछ है जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं कि यह दिव्य जीवन में चर्च के उत्थान के लिए आवश्यक है।

अध्याय XIV

परम पवित्र

यह कम्पार्टमेंट एक चौकोर कमरा था, जो सुंदर घूंघट द्वारा पवित्र स्थान से विभाजित था, जिसके बारे में हमें बाद में कुछ कहना होगा। बेशक, इमारत पवित्र स्थान जैसी ही सामग्री से बनी थी। दो डिब्बों के बीच का अंतर फर्नीचर और प्रकाश में था। परम पवित्र स्थान में निहित:--(1) वाचा का सन्दूक। यह एक लकड़ी का सन्दूक था, जिस पर सोना मढ़ा हुआ था। इसमें कानून की एक प्रति थी, मन्ना का एक सुनहरा बर्तन चमत्कारिक रूप से संरक्षित था, और हारून की छड़ी जिसमें कलियाँ निकली थीं। (2) मर्सी सीट। इससे सन्दूक का ढक्कन बना, और वह शुद्ध सोने का था। चारों ओर सोने का एक सुन्दर मुकुट सुशोभित था, और सोने के दो करूब, एक-एक सिरे पर खड़े थे, उनके पंख एक-दूसरे की ओर फैले हुए थे और उनके मुख सन्दूक की ओर झुके हुए थे। सोने के एक द्रव्यमान से पूरा बनाया गया था। पवित्र स्थान की तरह, परम पवित्र स्थान में कोई खिड़की नहीं थी; न ही उसके पास दीवट था, और जैसा कि घूंघट को बंद रखा गया था, यह पूर्ण और सदा के अंधकार में होता, लेकिन उस महिमामय प्रकाश के लिए जो इसे प्रकाशित करता था। वह रोशनी क्या थी? यह शचीना परमेश्वर का प्रकाश था। सीधे वाचा के सन्दूक के ऊपर दिव्य उपस्थिति का अद्भुत प्रतीक - दिन में बादल का खंभा और रात में आग। यह रहस्यमय आग तम्बू के घने आवरणों में घुस गई और महिमा के करूबों के बीच, दया के आसन पर उतर गई, और इस प्रकार परमपवित्र स्थान को अलौकिक प्रकाश की ज्वाला से जगमगा दिया। पाठक आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि यह कम्पार्टमेंट कितना अद्भुत रूप से शानदार रहा होगा, इसकी सुनहरी दीवारें, इसका सुंदर आवरण और घूंघट, इसका सुनहरा सन्दूक और दया का आसन, और सभी स्वर्ग से दिव्य प्रकाश के साथ इतनी शानदार ढंग से प्रकाशित हुए होंगे! न ही उसके पास दीवट था, और जैसा कि घूंघट को बंद रखा गया था, यह पूर्ण और सदा के अंधकार में

brought in to fill up the type that fully illustrates our Great High Priest upon the throne of God. And, lastly, the veil which obscured the holiest from view, and was passed once a year by the high priest, with blood of atonement, was a type of the "flesh" of Christ; that the rending of the veil when Jesus died was a divine act showing that through the offering of the body of Jesus, the veil which separated man from God was removed; that the saved can now not only see by faith, the glories of the heavenly state, but can also boldly draw near and commune with God in His holy presence.

Finally, let me seriously question my patient reader, WHERE DO YOU STAND? Is the blessed Savior, with all that appertains to Him, nothing to you? Do you stand afar off, and look with indifferent eyes on the mysteries of God? If so, the tabernacle which the Lord has pitched has no charms for you. Its beauties are "hidden from thine eyes" by your own pride; for God only "reveals them unto babes." But at least take warning from that smoke curling up to heaven from God's holy altar of burnt offering. It tells of the "fire that never shall be quenched," and that God "can by no means clear the guilty" apart from Christ.

Take heed to the crowns of silver rising above the curtain of the court--the price of the people's redemption. Look to Him whom that ransom-silver foreshadowed.

And if your heart is moved by the sight of that suffering, sorrowing, dying One, O come with thy burdened soul--come just as thou art--and accept thy substitute, the "Lamb of God," and make confession of faith over His dear head; and then come and offer thyself, in solemn consecration, to be buried with Christ by baptism into death, that like as He rose from the dead, thou also may rise to a new and blessed life.

Again, let me ask, dear reader, WHERE DO YOU STAND? Is it as a consecrated priest in the tabernacle of the new covenant? Look round, then, and behold the glories of the sanctuary. Consider the golden lampstand of the new tabernacle--the inspired teaching of the apostles of Jesus Christ. Behold its beauties; bask in its clear light, till it illuminates thy whole soul, and be content to serve God by its guidance alone. Consider the "table of shew bread"--the precious memorials of your dear Lord's body and blood; and "neglect not the assembling of yourselves together." Again, reflect on that golden altar of incense as its pale smoke ascends silently, and its fragrance fills the holy place; and let it win thee to a closer communion with God in prayer. Then see before thee the ark of the covenant, the mercy seat, the cherubim, the Shechinah! and know of a truth that "God is with us!" His presence fills the holy place. The King in His beauty is here. Grace, mercy and truth are here. Heaven is here. "Consider," lastly, "the Apostle and High Priest of our confession." Not before the

होता, लेकिन उस महिमामय प्रकाश के लिए जो इसे प्रकाशित करता था। वह रोशनी क्या थी? यह शचीना परमेश्वर का प्रकाश था। सीधे वाचा के सन्दूक के ऊपर दिव्य उपस्थिति का अद्भुत प्रतीक - दिन में बादल का खंभा और रात में आग। यह रहस्यमय आग तम्बू के घने आवरणों में घुस गई और महिमा के करूबों के बीच, दया के आसन पर उतर गई, और इस प्रकार परमपवित्र स्थान को अलौकिक प्रकाश की ज्वाला से जगमगा दिया। पाठक आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि यह कम्पार्टमेंट कितना अद्भुत रूप से शानदार रहा होगा, इसकी सुनहरी दीवारें, इसका सुंदर आवरण और घूंघट, इसका सुनहरा सन्दूक और दया का आसन, और सभी स्वर्ग से दिव्य प्रकाश के साथ इतनी शानदार ढंग से प्रकाशित हुए होंगे! न ही उसके पास दीवट था, और जैसा कि घूंघट को बंद रखा गया था, यह पूर्ण और सदा के अंधकार में होता, लेकिन उस महिमामय प्रकाश के लिए जो इसे प्रकाशित करता था। वह रोशनी क्या थी? यह शचीना परमेश्वर का प्रकाश था। सीधे वाचा के सन्दूक के ऊपर दिव्य उपस्थिति का अद्भुत प्रतीक - दिन में बादल का खंभा और रात में आग। यह रहस्यमय आग तम्बू के घने आवरणों में घुस गई और महिमा के करूबों के बीच, दया के आसन पर उतर गई, और इस प्रकार परमपवित्र स्थान को अलौकिक प्रकाश की ज्वाला से जगमगा दिया। पाठक आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि यह कम्पार्टमेंट कितना अद्भुत रूप से शानदार रहा होगा, इसकी सुनहरी दीवारें, इसका सुंदर आवरण और घूंघट, इसका सुनहरा सन्दूक और दया का आसन, और सभी स्वर्ग से दिव्य प्रकाश के साथ इतनी शानदार ढंग से प्रकाशित हुए होंगे! और जैसा कि मोटे घूंघट को बंद रखा गया था, यह पूर्ण और शाश्वत अंधकार में होता, लेकिन महिमामय प्रकाश के लिए जिसने इसे प्रकाशित किया। वह रोशनी क्या थी? यह शचीना परमेश्वर का प्रकाश था। सीधे वाचा के सन्दूक के ऊपर दिव्य उपस्थिति का अद्भुत प्रतीक - दिन में बादल का खंभा और रात में आग। यह रहस्यमय आग तम्बू के घने आवरणों में घुस गई और महिमा के करूबों के बीच, दया के आसन पर उतर गई, और इस प्रकार परमपवित्र स्थान को अलौकिक प्रकाश की ज्वाला से जगमगा दिया। पाठक आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि यह कम्पार्टमेंट कितना अद्भुत रूप से शानदार रहा होगा, इसकी सुनहरी दीवारें, इसका सुंदर आवरण और घूंघट, इसका सुनहरा सन्दूक और दया का आसन, और सभी स्वर्ग से दिव्य प्रकाश के साथ इतनी शानदार ढंग से प्रकाशित हुए

throne, merely, as a suppliant, but "a priest upon his throne," "high and lifted up." "Let us draw near," we are precious in His sight. See, our names are on his breast and shoulders. How dear His people are to him! How sweet to know it!

May God enable us to be faithful ministers in His sanctuary, that the blessed "fore-taste of glory divine" may end in full and eternal fruition.

Prophecies about Christ and their fulfillment
Modern Science and Christian Faith
 by Dr. Hawley O. Taylor

There are over a hundred prophecies concerning Jesus in the Old Testament but what were the possibilities of making just 25 predictions about someone who was to be born many years later and having these predictions come true?

Dr. Hawley O. Taylor has provided this answer: "Regarding these n cases of events foretold for Israel's Messiah who was to come, if the chances of success were even in the case of each one, that is p (probability) equals n in every case, then the overall probability that all n events would find their fulfillment in one person would be p^n equals $(1/2)^n$? Thus, there would be but one chance in 2^n (33 million, where n equals 25) of all these foretold events coming true if they were mere guesses. Now a glance at these prophecies concerning Christ reveals that they do not all have an even chance of success, for in some instances it is highly improbable that the event could occur at all (as for a child to be born without a human father). A very conservative compromise would be p equals 1/5; and the overall probability for the n prophecies coming true would be p^n equals $(1/5)^n$? or one chance out of a thousand trillion if n equals 25. (Modern Science and Christian Faith, p. 178.) Even if the prophecy regarding the virgin birth be excluded, the number remains astronomically large. Too large to assume that this accidentally happened! Dr. Hawley O. Taylor; Modern Science and Christian Faith pp. 179-183.

Prophecy	Where Prophesied	Where Fulfilled
Of the tribe of Judah.	Gen. 49:10	Luke 3:23-33
Of the Royal line of David	Jer. 23:5	Matt. 1:1
Born of a virgin	Isa. 7:14	Matt. 1:18
Born in Bethlehem	Micah 5:2	Matt. 2:1,2
A forerunner shall prepare the way	Mal. 3:1	Mark 1:6,7
He shall enter Jerusalem riding upon an ass	Zech. 9:9	Matt. 21:6,7
He shall be betrayed by a disciple	Zech. 13:6	Matt. 26:49,50
Betrayal price stated	Zech. 11:1,2	Matt. 26:14,15
Betrayal money to be returned	Zech. 11:13	Matt. 27:5,7
His disciples shall forsake him	Zech. 13:7	Matt. 26:56
False witnesses shall accuse him	Psa. 35:11	Matt. 26:59,60
He shall suffer, abuse	Isa. 50:6	Matt. 26:67
He shall suffer in silence	Isa. 53:7	Matt. 27:12-14
He shall be whipped	Isa. 53:5	Matt. 27:26,29

होंगे! लेकिन उस शानदार रोशनी के लिए जिसने इसे रोशन किया। वह रोशनी क्या थी? यह शचीना परमेश्वर का प्रकाश था। सीधे वाचा के सन्दूक के ऊपर दिव्य उपस्थिति का अद्भुत प्रतीक - दिन में बादल का खंभा और रात में आग। यह रहस्यमय आग तम्बू के घने आवरणों में घुस गई और महिमा के करूबों के बीच, दया के आसन पर उतर गई, और इस प्रकार परमपवित्र स्थान को अलौकिक प्रकाश की ज्वाला से जगमगा दिया। पाठक आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि यह कम्पार्टमेंट कितना अद्भुत रूप से शानदार रहा होगा, इसकी सुनहरी दीवारें, इसका सुंदर आवरण और घूंघट, इसका सुनहरा सन्दूक और दया का आसन, और सभी स्वर्ग से दिव्य प्रकाश के साथ इतनी शानदार ढंग से प्रकाशित हुए होंगे! लेकिन उस शानदार रोशनी के लिए जिसने इसे रोशन किया। वह रोशनी क्या थी? यह शचीना परमेश्वर का प्रकाश था। सीधे वाचा के सन्दूक के ऊपर दिव्य उपस्थिति का अद्भुत प्रतीक - दिन में बादल का खंभा और रात में आग। यह रहस्यमय आग तम्बू के घने आवरणों में घुस गई और महिमा के करूबों के बीच, दया के आसन पर उतर गई, और इस प्रकार परमपवित्र स्थान को अलौकिक प्रकाश की ज्वाला से जगमगा दिया। पाठक आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि यह कम्पार्टमेंट कितना अद्भुत रूप से शानदार रहा होगा, इसकी सुनहरी दीवारें, इसका सुंदर आवरण और घूंघट, इसका सुनहरा सन्दूक और दया का आसन, और सभी स्वर्ग से दिव्य प्रकाश के साथ इतनी शानदार ढंग से प्रकाशित हुए होंगे! सीधे वाचा के सन्दूक के ऊपर दिव्य उपस्थिति का अद्भुत प्रतीक - दिन में बादल का खंभा और रात में आग। यह रहस्यमय आग तम्बू के घने आवरणों में घुस गई और महिमा के करूबों के बीच, दया के आसन पर उतर गई, और इस प्रकार परमपवित्र स्थान को अलौकिक प्रकाश की ज्वाला से जगमगा दिया। पाठक आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि यह कम्पार्टमेंट कितना अद्भुत रूप से शानदार रहा होगा, इसकी सुनहरी दीवारें, इसका सुंदर आवरण और घूंघट, इसका सुनहरा सन्दूक और दया का आसन, और सभी स्वर्ग से दिव्य प्रकाश के साथ इतनी शानदार ढंग से प्रकाशित हुए होंगे! सीधे वाचा के सन्दूक के ऊपर दिव्य उपस्थिति का अद्भुत प्रतीक - दिन में बादल का खंभा और रात में आग। यह रहस्यमय आग तम्बू के घने आवरणों में घुस गई और महिमा के करूबों के बीच, दया के आसन पर उतर गई, और इस प्रकार परमपवित्र स्थान को अलौकिक प्रकाश की ज्वाला से जगमगा दिया। पाठक आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि यह कम्पार्टमेंट कितना अद्भुत रूप से शानदार रहा होगा, इसकी सुनहरी दीवारें, इसका सुंदर आवरण और घूंघट, इसका सुनहरा सन्दूक और दया का आसन, और सभी स्वर्ग से दिव्य प्रकाश के साथ इतनी शानदार ढंग से प्रकाशित हुए होंगे!

तब, यह परम पवित्र स्थान क्या दर्शाता है? इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि यह यहोवा की पवित्र उपस्थिति का प्रतीक है। स्वर्ग, एक इलाका नहीं, बल्कि एक राज्य है, जैसा कि हम इब्रानियों 9:24 में पढ़ते हैं: "क्योंकि मसीह ने किसी हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं किया, जो सत्य के नमूने के समान है, परन्तु स्वर्ग में ही प्रवेश किया, ताकि अब उसके साम्हने प्रकट हो।" हमारे लिए

Hands and feet pierced	Psa. 22:16	Luke 23:33
Numbered with criminals	Isa. 53:12	Mark 15:2
To divide garments	Psa. 22:18	John 19:23,24
Gall and vinegar to be offered	Psa. 69:21	John 19:28,29
Gall and vinegar to be offered	Psa. 69:21	John 19:28,29
No bones to be broken	Psa. 34:20	John 19:33
He shall be pierced	Zech. 12:10	John 19
The crowds shall rebuke him	Psa. 109:29	Matt. 27:39
Darkness in daytime to signal crucifixion	Amos 8:9	Matt. 27:45
To be buried with the rich	Isa. 53:9	Matt. 27:57-60
To arise from the dead!	Psa. 16:10	Matt. 28:6
To ascend	Psa. 68:18a	Luke 24:51

Hermeneutics by D. R. Duncan. Cincinnati, n.d. pp. 395-99.

Prophecy	Where Prophesied	Where Fulfilled
He was to be the seed of the woman	Gen. 3:15	Matt. 1:18
He would be the Son of God	Psa. 2:7	Luke 1:32-35
He would overcome the serpent	Gen. 3:15	Heb. 2:14
The seed of Abraham	Gen. 12:1-3; 17:7; 22:18	Gal. 3:16
The seed of Isaac	Gen. 21:12	Heb. 11:18
The seed of Judah	Gen. 49:10	Heb. 7:14
The seed of David	Psa. 132:11; Jer. 23:5	Acts 13:23; Rom. 1:3
The time of His coming and death	Dan. 9:24-27	Luke 2:1
Born of a virgin	Isa. 7:14	Matt. 1:18; Luke 2:7
He was called Immanuel	Isa. 7:14	Matt. 1:22-23
Born in Bethlehem of Judea	Mic. 5:2	Matt. 2:1; Luke 2:4-6
Great men shall come and bow down to Him	Psa. 72:10-15	Matt. 2:1-11
Children slaughtered, that He might be killed	Jer. 31:15;	Matt. 2:16-18
Introduced by John the Baptist	Isa. 40:3; Mal. 3:1	Matt. 3:1-3; Luke 1:17
Was anointed by the Holy Spirit	Psa. 45:7; Isa. 11:2; 41:1	Matt. 3:16-17; John 3:34; Acts 10:38
He was a prophet like unto Moses	Deut. 18:15-18	Acts 3:20-22
He was sent as a deliverer to the people	Isa. 41:1-3	Luke 4:16-21; Luke 4:43
He is the light to Zebulun and Naphtali	Isa. 9:1-3	Matt. 4:12-16
He comes to the temple and cleanses it	Hag. 2:7-9; Mal. 3:1	Luke 19:45; John 2:13-16
His poverty	Isa. 53:2	Mark 6:3; Luke 9:58
He was meek and with ostentation	Isa. 42:1-2	Phil. 2:7-9
His compassion	Isa. 40:11; 42:3	Matt. 12:15-20; Heb. 4:15
Was without guile	Isa. 53:9	Pet. 2:22
Great zeal for the house of God	Psa. 69:9	John 2:17
He taught by the use of parables	Psa. 78:2	Matt. 13:34-35
He wrought miracles	Isa. 35:5-6	Luke 7:18-23
Rejected by His brethren	Psa. 69:8; Isa. 53:3	John 1:11; John 7:5

भगवान की।" यह निर्णायक है। अब हम प्रतीकों की विस्तार से जांच करते हैं।

पहला। सोना, कीमती पर्दे और ओढ़ना, जैसा कि पहले बताया गया है, धन, महिमा, सम्मान, पवित्रता, स्वर्ग की ओर इशारा करते हैं। ये सभी चीजें परमेश्वर और स्वर्ग की हैं, उनके प्राथमिक स्रोत के रूप में।

दूसरा। सन्दूक, जिसमें प्रायश्चित का ढकना और शचीना सम्मिलित हैं, ऊँचे सिंहासन पर विराजमान यहोवा का प्रतीक है। सन्दूक को हमेशा परमेश्वर की उपस्थिति के समान माना जाता था। इसके बारे में दैवीय मंशा थी कि इसके बाद के इतिहास में इससे जुड़ी कई घटनाओं से स्पष्ट है। जब वह पलिशियों के कब्जे में आ गया, तब एली की मरती हुई बहू चिल्ला उठी: "इसाएल से महिमा उठ गई, क्योंकि सन्दूक छीन लिया गया है।" और जब उसे दागोन के मन्दिर में ले जाया गया, तो मछली का देवता बार बार उसके साम्हने गिरा। जहाँ कहीं उसे बंदी बनाकर ले जाया गया, महामारी और प्लेग ने लोगों को नष्ट कर दिया। उज्जा उसके छूने के कारण मारा गया, और बेतशेमेश के पचास हजार पुरूष उस पर दृष्टि करने के कारण घात किए गए। दूसरी ओर, ओबेद-एदोम का घराना, जब तक वह अपनी छत के नीचे टिका रहा, आशीषित होता रहा। इस्राएलियों ने अक्सर "करूबों के बीच" भगवान के निवास के बारे में बात की, और पलिशियों ने सन्दूक का जिक्र करते हुए कहा, "भगवान छावनी में आ गया है।" इस सब से यह स्पष्ट है कि समग्र रूप से जहाज़ परमेश्वर की प्रतापी और भयानक उपस्थिति का प्रतीक था। आइए अब इसके भागों पर विचार करें। (ए) सन्दूक में कानून की एक प्रति थी। पॉल कहते हैं: "कानून पवित्र, न्यायपूर्ण और अच्छा है।" यह परमेश्वर की पूर्ण पवित्रता का प्रतीक था। यह "वाचा की व्यवस्था" थी, और इसलिए सन्दूक में इसका स्थान दर्शाता है कि परमेश्वर "परमेश्वर को बनाए रखने वाली वाचा" है। "प्रभु का वचन तोड़ा नहीं जा सकता," यह "हमेशा तक बना रहता है," और उसने जो वादा किया है वह निश्चित रूप से पूरा करेगा। जब परमेश्वर शरीर में प्रकट हुआ, उसके पुत्र यीशु मसीह के व्यक्तित्व में, दाऊद के शब्द पूरे हुए, "तेरी व्यवस्था को मैंने अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरूद्ध पाप न करूं" और यीशु ने "व्यवस्था को पूरा किया और उसे आदर के योग्य बनाया।" (ख) सन्दूक में "मन्ना का सुनहरा पात्र" भी था। अलौकिक भोजन जिसके साथ भगवान ने अपने लोगों को बंजर रेगिस्तान में खिलाया। यह स्वर्ग से नीचे आया; यह रहस्यमय था - लोगों ने कहा, "यह क्या है?" यह पृथ्वी की उपज नहीं थी, क्योंकि रेगिस्तान बंजर था। यह था चमत्कारिक रूप से सन्दूक में संरक्षित। अब यह सब स्पष्ट रूप से भगवान के गहरे उद्देश्य के बारे में बताता है, जो युगों से छिपा हुआ था, लेकिन अब यीशु मसीह में जीवन की रोटी के विषय में प्रकट हुआ है, जिसे यदि मनुष्य खाए, तो वह हमेशा के लिए जीवित रहेगा। "जीवन की रोटी मैं हूँ, यीशु ने कहा। तुम्हारे बाप दादों ने जंगल में मन्ना खाया, और मर गए। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है, विद्रोही दल को उनकी धृष्टता के पुरस्कार के रूप में एक भयानक मौत का सामना करना पड़ा। अब यह डण्डा सन्दूक में क्यों रखा गया? नंब के अनुसार। 11:10 यह "बगावत के

Hated by the Jews	Psa. 59:4; Isa. 49:7	John 15:24-25
Rejected by their rulers	Psa. 118:22	John 7:48; Matt. 21:4
A stone of stumbling and rock of offense	Isa. 8:14	Rom. 9:32; 1 Pet. 2:8
. Betrayed by a friend	Psa. 41:9; 55:12-14	John 13:18-21
Forsaken by His disciples	Zech. 13:7	Matt. 26:31-56
. Was sold for thirty pieces of silver	Zech. 11:12	Matt. 26:15
This money was given to buy the potter's field	Zech. 11:13	Matt.27:7
He was patient and silent in all His sufferings	Isa. 53:7	Matt.26:63; 27:12-14
Smitten on the cheek	Mic. 5:1	Matt. 27:30
. His sufferings were intense	Psa. 22:14-15	Luke 22:42-44
Was scourged and spit upon	Psa. 35:15; Isa. 1:6	Mark 14:65; John 19:1
His visage was greatly marred	Isa. 52:14; 53:3	John 19:1-5
He suffered that He might bear away our sins	Isa. 53:4; Dan. 9:26	Matt.20:28; 26:28
The rulers, Jews and Gentiles, combine against Him to put Him to death	Psa. 2:1-4	Luke 23:12; Acts 4:27-28
He was extended upon the cross and His hands and His feet were nailed to the wood	Isa. 25:10-11; Psa. 22:16	John 19:18; 20-25
This agony was increased by being numbered among thieves	Isa. 53:12	Mark 15:28
They gave Him gall and vinegar	Psa. 69:21	Matt. 27:39-44
He was cruelly mocked	Psa. 22:7-8; 35:15-21	Matt. 27:39-44
He suffered alone; even the Father's presence was withdrawn	Isa. 63:1-3; Psa. 22:1	Matt. 27:46
They parted His garments among them and cast lots for His vesture	Psa. 22:18	Matt. 27:35
He thus became a curse for us, bore our reproach	Psa. 22:6; 79:7; 9:20	Rom. 15:3; Heb. 13:13; Gal. 3:13
He made intercession for the murderers	Isa. 53:12	Luke 23:24
After His death they pierced Him	Zech. 12:10	John 19:34-37
But did not break a bone of His body	Ex. 12:46; Psa. 34:20	John 19:33-36
He was buried with the rich	Isa. 53:9	Matt. 27:57-60
His flesh did not see corruption	Psa. 16:8-10	Acts 2:31
He rose from death the third day, according to the Scriptures	Psa. 16:8-10	Luke 24:6; 24:31; 24:34
He ascended into the heavens	Psa. 68:18; 24:7-9	Luke 24:51; Acts 1:9
He became a priest after the order of Melchizedek, who was king and priest at the same time	Psa. 110:4; Zech. 6:12-13	Heb. 5:5-6
He received for Himself a kingdom that embraces the whole world	Psa. 2:6; Dan. 2:44; 7:13-14;	Luke 1:32; John 18:33-37; Matt. 28:18-19; Phil. 2:9-10
His law went forth from Zion and His word from Jerusalem	Isa. 2:1-3; Mic. 4:12	Luke 24:46-49; Acts 2:1-40
The Gentiles should be admitted into His service	Isa. 11:10; 42:1; Psa. 2:8	John 10:16; Acts 10:44-48; Rom. 15:9-12
The righteousness of His reign	Isa. 9:6-7; Psa. 45:6-7	John 5:30; Rev.19:11

बच्चों के खिलाफ एक निशानी के लिए रखा गया था।" यह इसका तात्कालिक उपयोग था। परन्तु जब इसने इस्राएल के लिए उस उद्देश्य को पूरा किया, यह यीशु मसीह के राजकीय याजकवर्ग के विषय में परमेश्वर के गुप्त उद्देश्य को भी इंगित करता है। गौर कीजिए: यह एक सूखी छड़ी थी। मसीह "सूखी भूमि में से निकली हुई जड़ के समान" था। लेकिन अब यह खिल गया है और महान महायाजक के रूप में अपने सिंहासन पर फलने-फूलने लगा है। यह यीशु मसीह के राजकीय याजकपद के विषय में परमेश्वर के गुप्त उद्देश्य को भी इंगित करता है। गौर कीजिए: यह एक सूखी छड़ी थी। मसीह "सूखी भूमि में से निकली हुई जड़ के समान" था। लेकिन अब यह खिल गया है और महान महायाजक के रूप में अपने सिंहासन पर फलने-फूलने लगा है। यह यीशु मसीह के राजकीय याजकपद के विषय में परमेश्वर के गुप्त उद्देश्य को भी इंगित करता है। गौर कीजिए: यह एक सूखी छड़ी थी। मसीह "सूखी भूमि में से निकली हुई जड़ के समान" था। लेकिन अब यह खिल गया है और महान महायाजक के रूप में अपने सिंहासन पर फलने-फूलने लगा है।

इस प्रकार, सन्दूक की सामग्री युगों से छिपे हुए परमेश्वर के गुप्त उद्देश्य के बारे में वाक्पटुता से बोलती है, लेकिन अब यीशु में प्रकट हुई है। "जैसा लिखा है, उस को आंख ने नहीं देखा, और न कान ने सुना, और न मनुष्य के मन में वे बातें आई हैं, जो परमेश्वर ने उन के लिये तैयार की हैं, जो उस से प्रेम रखते हैं, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा ढूंढती है।" सब कुछ—हाँ, परमेश्वर की गूढ़ बातें।"

तीसरा। दया का आसन। सन्दूक के इस सुंदर आवरण का नाम बहुत ही विचारोत्तेजक है। यह प्रायश्चितकर्ता है। यह भगवान की दयनीय, दयालु और प्रेमपूर्ण प्रकृति को इंगित करता है। जबकि सन्दूक की सामग्री ने परमेश्वर की धार्मिकता और विश्वासयोग्यता की ओर इशारा किया, और हमारी धार्मिकता, और हमारे महान राजा और याजक के रूप में मसीह के आने का संकेत दिया; दया का सिंहासन हमें बताता है कि परमेश्वर कृपालु है और हमें बचाने के लिए इच्छुक है। यह इंगित करता है कि समय की पूर्णता में परमेश्वर एक वास्तविक दया का आसन प्रदान करेगा - यीशु मसीह - जिसकी यह एक सुंदर छाया थी। "वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त है, और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का प्रायश्चित्त है।" यहाँ देखें कि कैसे सत्य और धार्मिकता, प्रेम और दया के साथ खूबसूरती से मिश्रित हो गए हैं; पहला सन्दूक में, और दूसरा दया के ढकने में। तो मसीह में "

चौथा। महिमा के करूब। ये एक दूसरे की ओर फैले हुए पंखों के साथ दया के आसन पर नीचे की ओर देख रही स्वर्गदूतों की छवियाँ थीं। उनके रवैये ने सन्दूक और दया के आसन के रहस्यों को समझने की उनकी तीव्र इच्छा का संकेत दिया। वे स्वर्गदूतों और महादूतों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर हैं। हम जीवन के वृक्ष की रक्षा करने और दोषी मनुष्य को उसका फल खाने से रोकने के लिए अदन के द्वार पर करूबों को रखे जाने के बारे में पढ़ते हैं। यह एक दयापूर्ण

Conclusion

There are several conclusions that can be drawn from this study even if some of the opinions and interpretations are rejected.

1. God had implemented plan to reconcile man to his former relationship with Him following man's rebellion. That plan is the central theme through the Bible. Laws and regulations were given to make man aware that any of his actions not in accord were displeasing to God and considered to be sin or transgressions of His law. With Christ, man's actions of obeying requirements and prohibitions were changed to actions based upon love, action from one's heart.

2. Many writers over a long period of time recorded types, shadows and prophecies, all pointing the person of Christ. His sin-offering allowed obedient man to be forgiven and made righteous by Christ's sin-offering.

3. Shadows and types were not the real thing. They only provided a veiled glimpse of forgiveness and redemption sometime in the future. Jesus' life, death, burial, resurrection and ascension often referred to as the Gospel or Gospel of Christ is the reality of all the types and shadows. With trust and obedience man can receive the free gift of salvation by making a u-turn in life calling upon God to forgive by being buried In Christ's death, immersed in water most often called baptism, allowing God to raise him a new spiritual life cleansed of all past sins.

Sources

Modern Science and Christian Faith, pp. 179-183.
Hermeneutics by D. R. Duncan. Cincinnati, n.d. pp. 395-99.
Shadow and Substance - The Tabernacle, Unknown writer
The Biblical Types and Shadows, Mark Dunagan, Beaverton Church of Christ, Beaverton, Oregon
The Shadow of Heavenly Things by Joseph Pittman, Austral Publishing Co., Melbourne, Australia, 1893
The Unfolding Pattern by Ray C. Stedman, pastor of Peninsula Bible Church in Palo Alto, California
Typology, A Study of New Testament Terms, Unknown writer
wikipedia.org/wiki/Prophecy

रोकथाम थी, क्योंकि इस पतित पापमय अवस्था में कोई भी व्यक्ति स्वेच्छा से "हमेशा जीवित नहीं रहेगा।" यहाँ वे फिर से प्रायश्चित्त के स्थल की रखवाली करते हैं; और जब वे प्रायश्चित्त के ढकने और सन्दूक को बहुत ध्यान से देख रहे हैं तो हमें यह कहते हुए याद दिलाया जाता है कि "कौन सी बातें (हमारे उद्धार की बातें) स्वर्गदूत देखना चाहते हैं।" इसमें कोई संदेह नहीं है कि ईश्वर के दूत मानव जाति की नियति में गहरी रुचि लेते हैं। बच्चों के बारे में मसीह ने कहा, "उनके स्वर्गदूत हमेशा मेरे पिता का चेहरा देखते हैं जो स्वर्ग में है।" इब्रानियों में यह प्रश्न पूछा गया है, "क्या वे सब सेवकाई करने वाली आत्माएं नहीं, जो उन की सेवा टहल करने को भजी गई हैं, जो उद्धार के वारिस हों?" यीशु उन्हें परमेश्वर के आनन्द में आनन्दित होने के रूप में दर्शाता है "एक पापी के विषय में जो नब्बे और नौ ऐसे न्यायी लोगों से अधिक पश्चाताप करता है जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं है।" वे पूरे पुराने नियम में मनुष्य को परमेश्वर की बातों की सेवकाई करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं; और महान भविष्य में - जैसा कि प्रकाशितवाक्य में देखा गया है - वे राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु की शानदार विजय में शामिल होंगे। यीशु उन्हें परमेश्वर के आनन्द में आनन्दित होने के रूप में दर्शाता है "एक पापी के विषय में जो नब्बे और नौ ऐसे न्यायी लोगों से अधिक पश्चाताप करता है जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं है।" वे पूरे पुराने नियम में मनुष्य को परमेश्वर की बातों की सेवकाई करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं; और महान भविष्य में - जैसा कि प्रकाशितवाक्य में देखा गया है - वे राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु की शानदार विजय में शामिल होंगे। यीशु उन्हें परमेश्वर के आनन्द में आनन्दित होने के रूप में दर्शाता है "एक पापी के विषय में जो नब्बे और नौ ऐसे न्यायी लोगों से अधिक पश्चाताप करता है जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं है।" वे पूरे पुराने नियम में मनुष्य को परमेश्वर की बातों की सेवकाई करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं; और महान भविष्य में - जैसा कि प्रकाशितवाक्य में देखा गया है - वे राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु की शानदार विजय में शामिल होंगे।

पांचवां। महिमा का शचीना। यह, जैसा कि हमने देखा है, वह अलौकिक प्रकाश था जो दया के आसन पर नीचे की ओर बहता था, और परमपवित्र स्थान का एकमात्र प्रकाश था। आंतरिक तम्बू जैसा कि पहले देखा गया था, स्वर्ग का प्रतीक था, और यहाँ हमारे पास स्वयं परमेश्वर का प्रतीक है। स्वर्ग को प्रकृति के प्रकाश की आवश्यकता नहीं है - ईश्वर उसका प्रकाश है। परन्तु यह स्थान और यह प्रकाश संकेत कर रहा था कि परमेश्वर मनुष्य के साथ वास करने के लिए नीचे आया है। जैसा लिखा है, "वह करूबों के बीच में रहता है।" परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, कि प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर से, उन दो करूबोंके बीच में से जो साझीपत्र के सन्दूक के ऊपर हैं, वहाँ मैं तुझ से बातचीत करूँगा। इस प्रकार यह चर्च ऑफ जीसस के संबंध में भगवान की महिमा का एक शानदार पूर्वानुमान है। लेकिन यह बाद में। यहाँ केवल मुझे इस तथ्य पर ध्यान देना चाहिए कि मिलापवाले तम्बू के दोनों डिब्बों में कोई फर्श नहीं था बल्कि रेगिस्तान की रेत थी।

महायाजक

महायाजक का विचार हमारा अंतिम लेकिन सबसे बड़ा विषय है। यह कि महायाजक का इरादा मसीह का एक प्रकार होना था, नया नियम पूरी तरह से और बहुतायत से साबित होता है। लेकिन, जैसा कि हम देखेंगे, मसीह की महिमा और महानता को यहूदी महायाजक से भी अधिक इसे चित्रित करने की आवश्यकता है। विषय व्यापक होने के कारण इसे खंडों में विभाजित करना सबसे सुविधाजनक होगा। आइए हम पहले उसके वस्त्रों को लें।

ये धनवान और सुन्दर थे। नीचे के वस्त्र शुद्ध सफेद लिनेन के थे। हमें यीशु के चरित्र और जीवन की पवित्रता और निर्मलता की याद दिलाई जाती है, जो "पवित्र, हानिरहित और निर्मल, और पापियों से अलग" थे। इसके बाद "एपोद का बागा" आया। यह एक प्रकार का अंगरखा था, जो नीले रंग का होता था, जो घुटनों के नीचे उतरता था। "उसके नीचेवाले घेरे में" नीले और बैजनी और लाल रंग के अनार थे; सुनहरी घंटियों के साथ बारी-बारी से, जब महायाजक परमपवित्र स्थान में जाता था तो मधुर ध्वनि सुनाई देती थी। यह उल्लेखनीय है कि वस्त्र उसी सामग्री और रंग के थे जो तम्बू के पर्दे और भीतरी आवरण के थे। ऐसा प्रतीत होता है कि महायाजक का अंगरखा उस पवित्र आनंद को इंगित करता है जो हमें मसीह के सुसमाचार में लाया गया है। इस बागे के ऊपर एपोद निकला। यह पोशाक का एक विस्तृत और महंगा लेख था। यह एक छोटा अंगरखा था, जो कन्धों पर लटका हुआ था, और सोने, नीले, बैजनी, लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का बना था। सोने की प्लेटों को पतला पीटकर धागों में काटा जाता था, और सामान में कलात्मक रूप से काम किया जाता था। कुछ समय पहले लंदन में भारतीय और औपनिवेशिक प्रदर्शनी का दौरा करते समय, मैंने सोने की कुछ ओरिएंटल सुई का काम देखा, जिसने मुझे इस एपोद के वर्णन के अनुरूप अजीब तरह से प्रभावित किया। काम ने समृद्धि और सुंदरता में उन सभी को पार कर लिया जो मैंने पहले कभी देखे थे। हमारे पास इस एपोद में हमारे महान महायाजक की दिव्य महिमा और गरिमा का प्रतीक है; जैसा वह पृथ्वी पर प्रकट नहीं हुआ, बल्कि जैसा वह अब हमारे लिए परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट होता है। इस सुन्दर एपोद के सामने झिलम बिठाया गया था। यह भी, गौरवशाली सुंदरता का एक लेख था। उसे चौकोर और दुगना बनाया गया था, ताकि छाती को ढँकने के लिए एक जेब बन जाए। इसकी नींव एपोद जैसी ही सामग्री की थी; लेकिन इसकी मुख्य सुंदरता में अलग-अलग रंगों के बारह कीमती पत्थर शामिल थे, प्रत्येक में तीन की चार पंक्तियों में। प्रत्येक पत्थर पर इस्राएल के बारह गोत्रों में से एक खुदा हुआ था। इसलिए इस झिलम पर पूरे बारह गोत्रों का प्रतिनिधित्व किया गया; और महायाजक के हृदय पर रख दिया जैसे वह परमेश्वर के सामने प्रकट हुआ था। बारह कीमती पत्थरों का यह कवच, बारह गोत्रों का प्रतिनिधित्व करता है, हमारे महान महायाजक मसीह का एक सुंदर प्रतीक है जो कलीसिया को धारण करता है, जिसे वह बहुत प्रेम करता है, अपने हृदय पर; अपने पिता की उपस्थिति में उसके

लिए मध्यस्थता करते हुए। इसलिए इस झिलम पर पूरे बारह गोत्रों का प्रतिनिधित्व किया गया; और महायाजक के हृदय पर रख दिया जैसे वह परमेश्वर के सामने प्रकट हुआ था। बारह कीमती पत्थरों का यह कवच, बारह गोत्रों का प्रतिनिधित्व करता है, हमारे महान महायाजक मसीह का एक सुंदर प्रतीक है जो कलीसिया को धारण करता है, जिसे वह बहुत प्रेम करता है, अपने हृदय पर; अपने पिता की उपस्थिति में उसके लिए मध्यस्थता करते हुए। इसलिए इस झिलम पर पूरे बारह गोत्रों का प्रतिनिधित्व किया गया; और महायाजक के हृदय पर रख दिया जैसे वह परमेश्वर के सामने प्रकट हुआ था। बारह कीमती पत्थरों का यह कवच, बारह गोत्रों का प्रतिनिधित्व करता है, हमारे महान महायाजक मसीह का एक सुंदर प्रतीक है जो कलीसिया को धारण करता है, जिसे वह बहुत प्रेम करता है, अपने हृदय पर; अपने पिता की उपस्थिति में उसके लिए मध्यस्थता करते हुए।

कीमती पत्थर उस मूल्य के बारे में बताते हैं जो यीशु अपने चर्च पर डालता है। अपने विश्वासयोग्य लोगों के बारे में वह कहता है, "वे मेरे होंगे... जब मैं अपने गहनों की गिनती करने आऊंगा।" वह उन्हें कभी नहीं भूलता। वे स्वर्ग की शोभा से शोभायमान हैं; वे परमेश्वर के प्रकाश में चमकते हैं। महायाजक के प्रत्येक कंधे पर सोने की एक थाली थी, जो एपोद से भी बंधी हुई थी। हर एक थाली में एक बड़ा सुलैमानी मणि धरा था, जिस पर इस्राएल के गोत्रोंके छः नाम खुदे हुए थे। यहाँ फिर से बारह गोत्रों का प्रतिनिधित्व किया गया है, और चर्च को मसीह के कंधों पर उठाए जाने के रूप में दिखाया गया है। शास्त्र में कंधा उत्तरदायित्व और बोझ उठाने का प्रतीक है। इस प्रकार यशायाह 9 में, "सरकार उसके (मसीह के) कंधे पर होगी।" भेड़ जो खो गई थी और मिल गई थी अच्छे चरवाहे के कंधे पर रखी गई थी, जब वह उसे आनन्द करते हुए घर ले आया। इसलिए कंधे की पट्टियों का उद्देश्य यह दर्शाना है कि कैसे यीशु, हमारे महान महायाजक के रूप में, हमारे कारण को पूरा करता है, और हमारी चिंताओं का बोझ उठाता है। "सो जब हमारे पास एक बड़ा महायाजक है, जो स्वर्ग से होकर गुजरा है, परमेश्वर का पुत्र यीशु, तो आओ हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जिसे हमारी दुर्बलताओं का एहसास न हो, परन्तु वह जिसके पास है। सब बातों में हमारी नाई परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे" (वह 4:14)। -16)। "क्योंकि उस ने परीक्षा में पड़ने के कारण दुःख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है" (अध्याय 2:18)। जिज्ञासु कमरबंद, महायाजक की कमर में बंधी, वह एपोद के समान समृद्ध और सुन्दर काम का था। इसका प्रतीकात्मक महत्व निम्नलिखित शास्त्रों से इकट्ठा किया जा सकता है: - "परमेश्वर, जिसने मुझे बल से जकड़ा है, और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है, वह मेरे पैरों को हरिणियों के समान बनाता है" (भजन 18:32-33)। "तू ने मेरे लिथे विलाप को नृत्य में बदल डाला; तू ने मेरा टाट खोलकर मेरी कमर में आनन्द का पटुका बान्धा है" (भजन संहिता 30:11)। "तुम्हारी कमर बन्धी रहे, और तुम्हारे दीए जलते रहें, और तुम उन मनुष्यों के समान बनो जो अपने प्रभु की

बाट जोहते हैं... धन्य हैं वे दास जिनको प्रभु आने पर जागते पाया जाएगा। मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह कमर कस कर उन्हें भोजन करने को बैठाओ, और आकर उन की सेवा करो" (लैव्य 12:35-37)। "यीशु ने अंगोछा लिया, और कमर बान्धकर जल हौदे में डाला, और चेलों के पांव धोने लगा" (यूहन्ना 13:3-5)। इसलिए सत्य से अपनी कमर कस कर स्थिर रहो (इप. 6:14)। इन धर्मग्रंथों से ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेरित लेखों में करधनी एक बहुत ही सामान्य आकृति है, और इसका अर्थ है शक्ति, तेजी, प्रसन्नता, सेवा के लिए तत्परता, सच्चाई। अब ये सब बातें हमारे महायाजक के रूप में यीशु के बारे में सच हैं। वह बचाने के लिए पराक्रमी है, उद्धार करने में तेज है, अपने लोगों पर आनन्दित होता है, हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तैयार रहता है, और सत्य के मार्ग में उनकी अगुवाई करता है। जैसा कि पटमोस में जॉन को पता चला है, जैसा कि मसीह के लिए लागू किया गया है, मसीह के लिए लागू महत्वपूर्ण है: "और मैंने सात सोने की मोमबत्तियां देखीं; पांव तक वस्त्र पहिनाओ, और छातियों को सोने का पटुका बान्धो" (प्रका 0वा 1:12-13)। महायाजक सिर पर मिटर या पगड़ी भी पहनते थे। यह महीन लिनेन या शायद रेशम का था।

उसके सामने एक नीली पट्टी थी, और सामने, आँखों के ऊपर, चमकाए हुए सोने की एक प्लेट थी, जिस पर "परमेश्वर के लिए पवित्रता" शब्द खुदे हुए थे। पवित्रता शब्द का अर्थ है समर्पित, या पूरी तरह से प्रभु की सेवा के लिए अलग। यीशु को ऐसे किसी शिलालेख की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि बाइबल उसके बारे में जो कुछ भी कहती है, उस पर यह सत्य अमित रूप से खुदा हुआ है। पृथ्वी पर उसका पूरा जीवन पवित्र था, और ऊपर उसकी सेवकाई पूरी तरह से परमेश्वर और उसकी कलीसिया को समर्पित है। "URIM AND THUMMIM" को ब्रेस्टप्लेट की जेब में रखा गया था। हमें जानकारी नहीं है कि ये क्या थे। कुछ लोगों का मानना है कि वे चमकीले पत्थर थे जिनकी चमक में वृद्धि या कमी हुई थी, जैसा कि परमेश्वर ने उन्हें न्याय में मार्गदर्शन करने के लिए चाहा था। उनके नाम "रोशनी और पूर्णता" का प्रतीक हैं। निम्नलिखित सन्दर्भ दिलचस्प हैं: "और लेवी के बारे में उन्होंने कहा,

"और तू न्याय की चपरास में ऊरीम और तुम्मीम को रखना, और जब जब हारून यहोवा के साम्हने प्रवेश करे तब तब वे उसके हृदय के ऊपर रहें; और हारून इस्त्राएलियोंका न्याय यहोवा के साम्हने अपने हृदय पर नित्य लगाए रहे।" (निर्गमन 28:30)। फ्रॉसेट की क्रिटिकल एंड एक्सपोजिटरी बाइबल साइक्लोपीडिया से निम्नलिखित उद्धरण को रुचि के साथ पढ़ा जाएगा: "स्पीकर्स कॉम। सोचता है कि चिट्ठी परामर्श का तरीका थी, जैसा कि प्रेरितों के काम 1:2-6; नीतिवचन 16:26 में है। अधिक शायद यहोवा के नाम के साथ पत्थर। और विशेषताएँ - उन पर उकेरी गई 'रोशनी' और 'सिद्धियाँ' एपोद के भीतर मुड़ी हुई थीं। टकटकी लगाकर, महायाजक, एपोद के साथ, भगवान के सामने, स्वर्गीय परमानंद चिंतन में लीन था; और भगवान द्वारा घोषित करने के लिए सक्षम किया गया था ईश्वरीय इच्छा ... फिलो का कहना है कि महायाजक' उसकी झिलम मजबूत की गई थी ताकि वह एक छवि के रूप में उन दो सद्गुणों को धारण कर सके जिनकी उसके कार्यालय को

आवश्यकता थी। तो, मिस्र के न्यायाधीश थानेई (थुम्मिम का जवाब) सच्चाई और न्याय के दो आंकड़े पहनते थे। थुम्मिम थे, उनका उपयोग परमेश्वर की सिद्ध और अपरिवर्तनीय इच्छा को इंगित करने के लिए था; और यह उन्होंने कुछ अचूक संकेत द्वारा किया जो हमारे लिए अज्ञात है। हमारे यहाँ मसीह का कितना सुंदर प्रकार है। वह 'परमेश्वर का वचन' है, 'जिस तरह से सत्य और जीवन, मनुष्य को परमेश्वर के मन और इच्छा का सिद्ध प्रकाशन। और जो वचन उसने कहा है वह अंतिम दिन में हमारा न्याय करेगा। "प्रभु का वचन सिद्ध है।" इसमें से कोई नहीं है अपील। काश कि वे सभी जो प्रभु से प्रेम करने का दावा करते हैं, इस पर विश्वास करते। यह सभी विवादों को सुलझा देगा; सभी प्रतिकूल मानवीय मतों को बाहर करें और हम सभी को "प्रभु के प्रकाश" में ले जाएँ।

महायाजक की नियुक्ति

यहूदी याजकों को लेवी के गोत्र से चुना गया था। हारून उस गोत्र का था, और उसके बाद के सब महायाजक उसके वंश के थे। "हमारे अंगीकार का महायाजक" मांस के अनुसार यहूदा के गोत्र का था। इस प्रकार, ईसाई धर्म का पुजारी पूरी तरह से "बदला हुआ" है, जैसा कि "कानून" भी है। लेकिन यहां मैं एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात की ओर इशारा करना चाहता हूँ। हमारा धन्य प्रभु देह में हमारा महान महायाजक नहीं था। उस ऊंचे पद के लिए उनका पवित्र समर्पण उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा था। यह निम्नलिखित से स्पष्ट प्रतीत होता है: "प्रत्येक महायाजक के लिए पुरुषों के बीच से लिया जाता है, पुरुषों के लिए भगवान से संबंधित चीजों में नियुक्त किया जाता है ताकि वह उपहार और पापों के लिए बलिदान दोनों दे सके, जो अज्ञानी और त्रुटिपूर्ण के साथ धीरे-धीरे सहन कर सके, उसके लिए वह आप भी दुर्बलताओं से घिरा है, और उसके कारण लोगोंके लिथे और अपने लिथे भी पापबलि चढ़ाने के लिथे बन्धा हुआ है। और कोई मनुष्य इस आदर को अपने ऊपर नहीं लेता जब तक कि वह हारून की नाई परमेश्वर की ओर से न बुलाया जाए। इसलिए, मसीह ने भी महायाजक बनने के लिए खुद को महिमामंडित नहीं किया, लेकिन उसने उससे कहा, तू मेरा बेटा है, आज मैंने तुझे जन्म दिया है। जैसा उसने दूसरी जगह भी कहा, तू मेल्कीसेदेक की रीति पर सदा का याजक है। उसका पुनरुत्थान, या कब्र से जन्म। और यह स्पष्ट है कि यह इस समय तक है कि इब्रानियों से उद्धृत उपरोक्त शब्द संदर्भित हैं। परमेश्वर ने उसे मृतकों में से अपने एकमात्र पुत्र के रूप में दावा किया, और उसे अपने उच्च-पुरोहितत्व में उठाया स्वर्ग। जैसे-जैसे हम उसके पौरोहित्य की प्रकृति की जाँच करने के लिए आगे बढ़ेंगे यह स्वतः स्पष्ट हो जाएगा। उपरोक्त पाठ कहता है कि यह "मल्कीसेदेक के आदेश के बाद" था, और मसीह के पुरोहितवाद के वास्तविक स्वरूप को दिखाने के लिए इस पुराने अद्भुत व्यक्ति के बारे में कुछ उल्लेखनीय बातें कही गई हैं। मेल्कीसेदेक, हमें बताया गया है, "बिना पिता, बिना माता, बिना वंशावली के, न तो दिनों की शुरुआत और न ही जीवन का अंत था, लेकिन परमेश्वर के पुत्र की तरह बनाया गया था, एक पुजारी का पालन करता है" (हेब। 7: 3)। अब जहाँ तक मेल्कीसेदेक का संबंध है, इन बयानों के बारे में अनुमान लगाने का मेरा इरादा नहीं है, लेकिन यह इंगित

करना है कि लेखक यह दिखाना चाहता है कि मसीह का पुरोहितत्व हमेशा के लिए है - कि यह एक निरंतर पुजारी होना था, जो मृत्यु से अखंड था।

मल्कीसेदेक की ओर लौटते हुए, उसका नाम "धार्मिकता के राजा" को दर्शाता है, और वह वास्तव में "सलेम का राजा" (जिसका अर्थ है शांति) था। इसलिए वह एक राजा-याजक था; और ये कार्यालय उन्होंने समवर्ती रूप से धारण किए। अब परमेश्वर यीशु के बारे में उसके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद कहता है: "फिर भी मैंने अपने राजा को सिथ्योन की अपनी पवित्र पहाड़ी पर स्थापित किया है ... तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे जन्म दिया है। मुझ से मांग, और मैं तुझे दूँगा।" जाति जाति के लोग तेरा निज भाग होने के लिये, और दूर दूर के देश तेरी निज भूमि होने के लिये हैं। तू उन्हें लोहे के राजदण्ड से टुकड़े टुकड़े करेगा, तू कुम्हार के बर्तन की नाई उन्हें चकना चूर कर डालेगा" (भजन 2:6-9)। "दाऊद स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप ही कहता है, कि यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा, तू मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों तले की पीढ़ी न कर दूँ" (प्रेरितों के काम 2:34-36)। इस प्रकार मसीह को राजा के रूप में शासन करते हुए भगवान के सिंहासन पर देखा जाता है - "उनके सिंहासन पर एक पुजारी;" और सिंहासन के सामने हारून के रूप में नहीं। "वह (स्वयं) हमारे पापों का प्रायश्चित (दया का आसन) है।"

महायाजक का कार्यालय

"हर एक महायाजक भेंट और बलिदान दोनों चढ़ाने के लिये ठहराया जाता है; इसलिये यह अवश्य है, कि इस महायाजक (यीशु) के पास भी कुछ कुछ चढ़ाने को हो।" और यह उसके पास था! लेकिन क्या भेंट है! उसे व्यवस्था के महायाजक के समान अपने लिये भेंट चढ़ाने की आवश्यकता नहीं, परन्तु "वह अधर्मियों के लिये धर्मी मरा;" उसने "स्वयं को निष्कलंक परमेश्वर के सामने अर्पित कर दिया;" "क्योंकि हम ऐसा महायाजक बने, जो पवित्र, निष्कलंक, निर्मल और पापियों से अलग था।" और "मसीह आनेवाली बातों के विषय में परमेश्वर का महायाजक होकर आया, उस बड़े और सिद्ध तम्बू के द्वारा, जो हाथ का नहीं, अर्थात् इस सृष्टि का नहीं, और न बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा, परन्तु उसके द्वारा अपना लहू, सदा के लिये पवित्र स्थान में प्रवेश करके, अनन्त छुटकारा प्राप्त करके।"

हमारे महायाजक के रूप में, यीशु अपने पीड़ित संतों के लिए सहानुभूति से भरा हुआ है। क्योंकि वह स्वर्गदूतों को नहीं, परन्तु इब्राहीम के वंश को वंश में करता है। इसलिए उसे चाहिए था कि वह सब बातों में अपने भाइयों के समान बने, कि वह उन बातों में जो परमेश्वर से संबंधित हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने, और लोगों के पापों का प्रायश्चित्त करे, क्योंकि उस ने आप ही दुख उठाया है। परीक्षा में पड़े हैं, वह उनकी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है।" "क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जिसे हमारी निर्बलताओं से छुआ न जा सके,

परन्तु वह सब बातों में हमारी नाई परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। "

"यद्यपि वह पुत्र था, तौभी उसने दुख उठाकर आज्ञा माननी सीखी; और सिद्ध बन कर, उन सब के लिये जो उसकी आज्ञा मानते हैं, अनन्तकाल के उद्धार का कर्ता बन गया; परमेश्वर की ओर से सदा के लिये महायाजक नाम दिया गया। मलिकिसिदक का।" यीशु को महायाजक और उद्धारकर्ता के पद पर पूरी तरह से शामिल किए जाने के अर्थ में "पूर्ण बना" दिया गया था। इस ऊँचे पद के लिए वे हमारी तरह सभी बातों में परीक्षा और परखने के द्वारा फिट और तैयार किए गए थे; और हमारे पापों के लिए अपने आप को निष्कलंक बलिदान के रूप में परमेश्वर को चढ़ाने के द्वारा। इस छोटे से ग्रंथ को समाप्त करते हुए मैं अब विशेष ध्यान देना चाहता हूँ।

परदा

महायाजक वर्ष में एक बार प्रायश्चित्त के बड़े दिन में वध किए हुए बलिदान के लोहू को लेकर, जिसे वह लोगोंके लिये प्रायश्चित्त करने के लिये प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर और उसके साम्हने छिड़कता या, परदे के भीतर पवित्र स्थान में प्रवेश करता या। अब हमें बताया गया है कि मसीह ने अपने लहू के द्वारा परदे के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया। आइए हम ध्यान से उस घूँघट पर विचार करें जिससे यीशु गुजरा। इब्रानियों 10:19-21 में, हम पढ़ते हैं कि जिस परदे से होकर मसीह अपने महिमामय सिंहासन के पास गया, वह उसका अपना शरीर था। ठीक इसके अनुसार हम पढ़ते हैं कि उसी क्षण जब उनका पवित्र शरीर क्रूस पर फटा और फटा हुआ था "मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो टुकड़ों में फट गया था।" यह भगवान का अधिनियम था, और एक शानदार सच्चाई को उजागर करता है। मंदिर के परदे का फटना परम पवित्र को देखने के लिए खुला और खुला हुआ है। रहस्य, युगों युगों से छिपा हुआ, फिर प्रगट हुआ। पहली बार साधारण याजक उस अद्भुत सन्दूक और प्रायश्चित्त के ढकने को देख सकता था और बलिदानों की पीढ़ियों के खून के धब्बे देख सकता था। क्या रहस्योद्घाटन है! उस घूँघट के फटने से भी केवल एक लंबा डिब्बा बना, जिसके बीच में कोई घूँघट नहीं था।

लेकिन आइए हम छाया से पदार्थ की ओर मुड़ें। मसीह का अनमोल शरीर वह पर्दा था; या बल्कि असली पर्दा, जो पवित्र को परम पवित्र स्थान से अलग करता था, जब तक कि वह क्रूस पर मृत्यु में फट नहीं गया। हमारे लिए विनती करने के लिए, और उसके महिमामय शासन में प्रवेश करने के लिए, उसके शरीर के परदे को फाड़ देना चाहिए - नष्ट कर दिया जाना चाहिए: ताकि उसके पुनरुत्थान, आध्यात्मिक शरीर में, वह "अपने स्वयं के लहू" के साथ परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति में प्रवेश कर सके और उसके ऊपर छिड़काव कर सके। सिंहासन। और मसीह की देह के इस फटने से सुसमाचार में परमेश्वर के भेद खुल गए। जो युगों युगों से छिपा था, वह फिर सादा हो गया। महिमामय चीजें जो मसीह में हमारी शांति से संबंधित हैं, तब प्रकट हुई थीं। जीवन और

अमरत्व प्रकाशित हो चुकी है। लेकिन इतना ही नहीं। जैसे मन्दिर के परदे के फटने से दो कोष्ठ के स्थान पर एक हो गया, इसलिए यीशु की मृत्यु से ईश्वरीय उपस्थिति से अलगाव दूर हो जाता है, और हम "ईश्वर के निकट आ जाते हैं।" आइए हम मान लें कि तम्बू का परदा हटा दिया गया है। तो क्या? अजी, वहाँ केवल एक लंबा डिब्बा होता जिसमें दीवट, मेज, धूप की वेदी, और सन्दूक और प्रायश्चित का ढकना होता। अब ठीक यही स्थिति आज मसीह में है। शाही याजकवर्ग को उनके राजा-याजक से अलग करने के लिए अब कोई पर्दा नहीं है; चर्च को ईश्वर से अलग करने वाला कोई घूँघट नहीं। यहूदी तम्बू में परमेश्वर अपने लोगों के साथ वास करता था, परन्तु वह परमपवित्र स्थान में था - परदे के पार, और दृष्टि से छिपा हुआ। परन्तु अब यहोवा हमारे संग डेरा या निवास करता है। यीशु ने अपने और अपने पिता के विषय में कहा, "हम तुम्हारे पास आएंगे, और तुम्हारे साथ वास करेंगे।" कहने की जरूरत नहीं है, "कौन मसीह को ऊपर से नीचे लाने के लिए स्वर्ग में चढ़ेगा?" क्योंकि वह हमारे साथ है, हमारे बीच ही है; जैसा कि उसने कहा, "देखो, मैं जगत के अंत तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ।" स्वर्ग नीचे लाया गया है पृथ्वी पर। परम पावन रेगिस्तान की रेत पर! और चर्च "मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में विराजमान है"! कितना धन्य अर्थ है, तब, मिलापवाले तम्बू पर प्रेरित टिप्पणी के शब्दों में है: "इसलिए, भाइयों, यीशु के लहू द्वारा पवित्रतम में प्रवेश करने का साहस, जिस तरह से उन्होंने हमारे लिए समर्पित किया, एक नया और जीवित मार्ग, घूँघट के माध्यम से, जो कि उनका मांस कहना है; और परमेश्वर के भवन का एक बड़ा महायाजक है: आओ हम सच्चे मन से, और पूरे विश्वास के साथ, विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर निकट आएँ।" (इब्रा. 10:19- 22. क्योंकि वह हमारे साथ, हमारे ही बीच में है; जैसा कि उन्होंने कहा, "देखो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ, यहां तक कि दुनिया के अंत तक।" स्वर्ग को धरती पर उतारा जाता है। रेगिस्तान की बहुत रेत पर परम पावन! और कलीसिया "मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में विराजमान है"! फिर, मिलापवाले तम्बू पर प्रेरित टिप्पणी के शब्दों में क्या ही धन्य अर्थ है: "इसलिए, भाइयों, यीशु के लहू द्वारा सबसे पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस होना, जिस तरह से उसने हमारे लिए समर्पित किया, एक नया और जीने का तरीका, घूँघट के माध्यम से, जो उसके शरीर को कहना है; और भगवान के घर पर एक महान महायाजक होने के नाते: आइए हम विश्वास की परिपूर्णता में एक सच्चे दिल के साथ निकट आते हैं, हमारे दिलों को एक बुरे विवेक से छिड़काते हैं, और हमारे शरीर को शुद्ध जल से धोया जाता है।" (इब्रा. 10:19-22. क्योंकि वह हमारे साथ, हमारे ही बीच में है; जैसा कि उन्होंने कहा, "देखो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ, यहां तक कि दुनिया के अंत तक।" स्वर्ग को धरती पर उतारा जाता है। रेगिस्तान की बहुत रेत पर परम पावन! और कलीसिया "मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में विराजमान है"! फिर, मिलापवाले तम्बू पर प्रेरित टिप्पणी के शब्दों में क्या ही धन्य अर्थ है: "इसलिए, भाइयों, यीशु के लहू द्वारा सबसे पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस होना, जिस तरह से उसने हमारे लिए समर्पित किया, एक नया और जीने का तरीका, घूँघट के माध्यम से, जो उसके शरीर को कहना है; और भगवान के घर पर एक महान महायाजक होने

के नाते: आइए हम विश्वास की परिपूर्णता में एक सच्चे दिल के साथ निकट आते हैं, हमारे दिलों को एक बुरे विवेक से छिड़काते हैं, और हमारे शरीर को शुद्ध जल से धोया जाता है।" (इब्रा. 10:19-22. मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ, यहां तक कि दुनिया के अंत तक।" स्वर्ग को पृथ्वी पर लाया जाता है। पवित्र स्थान रेगिस्तान की रेत पर है! और चर्च "मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में बैठा है"! क्या एक धन्य अर्थ, तब, मिलापवाले तम्बू पर प्रेरित टिप्पणी के शब्दों में है: "इसलिए, भाइयों, यीशु के लहू द्वारा पवित्रतम में प्रवेश करने का साहस, जिस तरह से उसने हमें समर्पित किया, एक नया और जीवित मार्ग, घूंघट के माध्यम से, अर्थात् उसकी देह; और परमेश्वर के भवन का एक बड़ा महायाजक है: आओ हम सच्चे मन से, और पूरे विश्वास के साथ, विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर निकट आएँ।" (इब्रा. 10:19- 22. मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ, यहां तक कि दुनिया के अंत तक।" स्वर्ग को पृथ्वी पर लाया जाता है। पवित्र स्थान रेगिस्तान की रेत पर है! और चर्च "मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में बैठा है"! क्या एक धन्य अर्थ, तब, मिलापवाले तम्बू पर प्रेरित टिप्पणी के शब्दों में है: "इसलिए, भाइयों, यीशु के लहू द्वारा पवित्रतम में प्रवेश करने का साहस, जिस तरह से उसने हमें समर्पित किया, एक नया और जीवित मार्ग, घूंघट के माध्यम से, अर्थात् उसकी देह; और परमेश्वर के भवन का एक बड़ा महायाजक है: आओ हम सच्चे मन से, और पूरे विश्वास के साथ, विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर निकट आएँ।" (इब्रा. 10:19- 22. रेगिस्तान की बहुत रेत पर परम पावन! और कलीसिया "मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में विराजमान है"! फिर, मिलापवाले तम्बू पर प्रेरित टिप्पणी के शब्दों में क्या ही धन्य अर्थ है: "इसलिए, भाइयों, यीशु के लहू द्वारा सबसे पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस होना, जिस तरह से उसने हमारे लिए समर्पित किया, एक नया और जीने का तरीका, घूंघट के माध्यम से, जो उसके शरीर को कहना है; और भगवान के घर पर एक महान महायाजक होने के नाते: आइए हम विश्वास की परिपूर्णता में एक सच्चे दिल के साथ निकट आते हैं, हमारे दिलों को एक बुरे विवेक से छिड़काते हैं, और हमारे शरीर को शुद्ध जल से धोया जाता है।" (इब्रा. 10:19-22. रेगिस्तान की बहुत रेत पर परम पावन! और कलीसिया "मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में विराजमान है"! फिर, मिलापवाले तम्बू पर प्रेरित टिप्पणी के शब्दों में क्या ही धन्य अर्थ है: "इसलिए, भाइयों, यीशु के लहू द्वारा सबसे पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस होना, जिस तरह से उसने हमारे लिए समर्पित किया, एक नया और जीने का तरीका, घूंघट के माध्यम से, जो उसके शरीर को कहना है; और भगवान के घर पर एक महान महायाजक होने के नाते: आइए हम विश्वास की परिपूर्णता में एक सच्चे दिल के साथ निकट आते हैं, हमारे दिलों को एक बुरे विवेक से छिड़काते हैं, और हमारे शरीर को शुद्ध जल से धोया जाता है।" (इब्रा. 10:19-22. यीशु के रक्त द्वारा पवित्रतम में प्रवेश करने का साहस, जिस तरह से उन्होंने हमारे लिए समर्पित किया, एक नया और जीवित मार्ग, घूंघट के माध्यम से, जो उनके शरीर का कहना है; और परमेश्वर के भवन का एक बड़ा महायाजक है: आओ हम सच्चे मन से, और पूरे विश्वास के साथ, विवेक का दोष दूर करने के लिये

हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर निकट आएँ।" (इब्रा. 10:19- 22. यीशु के रक्त द्वारा पवित्रतम में प्रवेश करने का साहस, जिस तरह से उन्होंने हमारे लिए समर्पित किया, एक नया और जीवित मार्ग, घूंघट के माध्यम से, जो उनके शरीर का कहना है; और परमेश्वर के भवन का एक बड़ा महायाजक है: आओ हम सच्चे मन से, और पूरे विश्वास के साथ, विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर निकट आएँ।" (इब्रा. 10:19- 22.

अध्याय XVI

निष्कर्ष

इस छोटे से काम को समाप्त करने में तुलना के बिंदुओं को सारांशित करना अच्छा हो सकता है। हम देख चुके हैं कि यहूदी व्यवस्था ईसाई व्यवस्था की छाया थी। मूसा इस्राएलियों और मिलापवाले तम्बू के लिए वही था जो मसीह अपने लोगों और चर्च के लिए एक संस्था के रूप में है। मिलापवाले तम्बू के प्रेरित कार्यकर्ता यीशु मसीह के प्रेरित प्रेरितों के प्रकार थे; दोनों अपनी समझ का सहारा लिए बिना एक आदर्श पैटर्न पर काम कर रहे हैं। मिलापवाले तम्बू के लिए स्वैच्छिक भेंट स्वैच्छिक सिद्धांत की बात करती है जो मसीह के पूरे धर्म में व्याप्त है। जिस सामग्री से मिलाप का तम्बू बनाया गया था, वह ईसाई प्रणाली से संबंधित सभी चीजों की दिव्य उत्कृष्टता और अनमोलता की बात करता था। मिलापवाले तम्बू के आंगन ने इस तथ्य को इंगित किया कि एक रेखा है जिसे हमें पार करना चाहिए, घमण्डी और सांसारिक ज्ञानियों को नम्र और सिखाने योग्य से अलग करना, ताकि हम परमेश्वर की बातों को ठीक से समझ सकें। मिलापवाले तम्बू की सघनता और एकता ने कलीसिया के सामंजस्य और एकता की ओर इशारा किया। मिलापवाले तम्बू के आवरण हमें यीशु के मानवीय और दिव्य स्वभाव, उसके अपमान और छुटकारे के कार्य की याद दिलाते हैं; और पाप के दोष और भ्रष्टाचार से पवित्रता की सुंदरता तक के मार्ग का भी। हमने इन आवरणों से यह भी सीखा कि बाहरी लोगों द्वारा चर्च ऑफ गॉड को किस तरह अलग देखा जाता है, जो भीतर पवित्र चीजों में सेवा करने वालों को दिखाई देता है। अग्नि के साथ पीतल की वेदी, और उसके विविध प्रकार के बलिदान और बलिदान पाप के दण्ड के विषय में और हमारे परमेश्वर ने मसीह के लोहू के द्वारा हमारे दोष और दोष को पूरी रीति से मिटाने के लिये जो अनुग्रह और बहुतायत की व्यवस्था की है, उसके विषय में बताते हैं। परमेश्वर का मेमना कौन है जो जगत के पाप उठा ले जाता है। वेदी और तम्बू के बीच की हौदी ने मसीह और उसके चर्च में आने वाले पापियों के संबंध में बपतिस्मा के स्थान और उद्देश्य को इंगित किया। पवित्र स्थान, इसकी दीवट के साथ, इसकी भेंट की रोटी की मेज, और इसकी धूप की वेदी, यीशु के चर्च का एक प्रकार था जो पूजा के लिए एक साथ इकट्ठा हुआ था - "प्रेरितों की शिक्षा और संगति, रोटी को तोड़ने और प्रार्थना।" परम पवित्र, इसके सन्दूक, इसकी दया की सीट और इसकी अद्भुत शचीना के साथ, भगवान की पवित्र उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करता है - स्वर्गीय राज्य, दिव्य गुणों और छिपे हुए

उद्देश्यों के साथ, अनुग्रह का सिंहासन और "छिड़काव का खून।" महायाजक हमारे मध्यस्थ के रूप में मसीह का एक प्रकार था, लेकिन राजा-याजक, मलिकिसिदक को उस प्रतीक को भरने के लिए लाया गया है जो परमेश्वर के सिंहासन पर हमारे महान महायाजक को पूरी तरह चित्रित करता है। और, अंत में, वह घूंघट जो पवित्रतम को दृष्टि से ओझल कर देता था, और महायाजक द्वारा वर्ष में एक बार प्रायश्चित के रक्त के साथ पारित किया जाता था, वह मसीह के "मांस" का एक प्रकार था; यीशु की मृत्यु के समय पर्दे का फटना एक दिव्य कार्य था जो दर्शाता है कि यीशु के शरीर की पेशकश के माध्यम से, वह पर्दा जो मनुष्य को परमेश्वर से अलग करता था हटा दिया गया था; कि बचाए हुए लोग अब न केवल विश्वास के द्वारा स्वर्गीय राज्य की महिमा को देख सकते हैं, बल्कि निडरता से परमेश्वर के निकट आ सकते हैं और उसकी पवित्र उपस्थिति में उसके साथ संवाद कर सकते हैं। यीशु की मृत्यु के समय पर्दे का फटना एक दिव्य कार्य था जो दर्शाता है कि यीशु के शरीर की पेशकश के माध्यम से, वह पर्दा जो मनुष्य को परमेश्वर से अलग करता था हटा दिया गया था; कि बचाए हुए लोग अब न केवल विश्वास के द्वारा स्वर्गीय राज्य की महिमा को देख सकते हैं, बल्कि निडरता से परमेश्वर के निकट आ सकते हैं और उसकी पवित्र उपस्थिति में उसके साथ संवाद कर सकते हैं।

अंत में, मुझे अपने धैर्यवान पाठक से गंभीरता से सवाल करना चाहिए, आप कहां खड़े हैं? क्या धन्य उद्धारकर्ता, उन सब के साथ जो उससे संबंधित हैं, आपके लिए कुछ भी नहीं है? क्या तुम दूर खड़े हो, और उदासीन आँखों से परमेश्वर के रहस्यों को देखते हो? यदि ऐसा है, तो जो तम्बू यहोवा ने खड़ा कराया है, वह तुम्हारे लिये शोभायमान नहीं है। इसकी सुंदरता "तेरी आँखों से छिपी हुई है" आपके अपने गर्व से; क्योंकि परमेश्वर केवल "उन्हें बच्चों पर प्रकट करता है।" लेकिन कम से कम उस धुँ से चेतावनी लें जो परमेश्वर की होमबलि की पवित्र वेदी से स्वर्ग की ओर उठ रही है। यह "उस आग के बारे में बताता है जो कभी बुझने वाली नहीं है," और यह कि मसीह के अलावा परमेश्वर "दोषियों को किसी भी तरह से शुद्ध नहीं कर सकता"।

आंगन के परदे के ऊपर उठने वाले चान्दी के मुकुटों पर ध्यान दे, जो लोगों के छुटकारे का मूल्य है। उसकी ओर देखें जिसे वह छुड़ौती-चांदी पूर्वाभास देती थी।

और यदि आपका हृदय उस पीड़ित, दुःखी, मरते हुए व्यक्ति को देखकर द्रवित होता है, ओ अपनी बोझिल आत्मा के साथ आओ-- जैसे तुम हो जैसे ही आओ--और अपने स्थानापन्न, "परमेश्वर के मेमने" को स्वीकार करो, और विश्वास का अंगीकार करो उनके प्रिय सिर पर; और फिर आओ और अपने आप को समर्पित करो,

गंभीर समर्पण में, मृत्यु में बपतिस्मा द्वारा मसीह के साथ गाड़े जाने के लिए, ताकि जैसे वह मरे हुआओं में से जी उठा, वैसे ही तुम भी एक नए और धन्य जीवन के लिए उठ सको।

प्रिय पाठक, मैं फिर से पूछता हूँ, आप कहाँ खड़े हैं? क्या यह नई वाचा के तम्बू के पवित्र याजक के समान है? तब चारों ओर देखो, और पवित्रस्थान की महिमा को निहारो। नये तम्बू के सोने के दीवट पर ध्यान दें - यीशु मसीह के प्रेरितों की प्रेरित शिक्षा। इसकी सुंदरता निहारना; इसके स्पष्ट प्रकाश में आनंद लें, जब तक कि यह आपकी पूरी आत्मा को प्रकाशित न कर दे, और केवल इसके मार्गदर्शन से ही परमेश्वर की सेवा करने के लिए संतुष्ट रहें। "शेव की रोटी की मेज" पर विचार करें - आपके प्रिय भगवान के शरीर और रक्त के अनमोल स्मारक; और "एक साथ इकट्ठे होने की उपेक्षा न करो।" फिर से, अगरबत्ती की उस सुनहरी वेदी पर चिंतन करें क्योंकि उसका पीला धुआँ चुपचाप ऊपर उठता है, और उसकी सुगंध पवित्र स्थान को भर देती है; और इसे आपको प्रार्थना में ईश्वर के साथ घनिष्ठ संवाद करने दें। फिर वाचा का सन्दूक, और प्रायश्चित्त का ढकना, करूब, शचीना! और इस सत्य को जानो कि "परमेश्वर हमारे साथ है।" उसकी उपस्थिति से पवित्र स्थान भर जाता है। उनकी सुंदरता में राजा यहाँ है। अनुग्रह, दया और सच्चाई यहाँ हैं। स्वर्ग यहाँ है। "विचार करें," अंत में, "हमारे कबूलनामे के प्रेरित और महायाजक।" सिंहासन के सामने नहीं, केवल, एक याचक के रूप में, बल्कि "अपने सिंहासन पर एक पुजारी," "ऊँचा और ऊपर उठा हुआ।" "आओ हम निकट आएं," हम उसकी दृष्टि में अनमोल हैं। देखो, हमारे नाम उसके वक्ष और कंधों पर हैं। उसके लोग उसे कितने प्यारे हैं! यह जानना कितना प्यारा है! एक याचक के रूप में, लेकिन "अपने सिंहासन पर एक पुजारी," "उच्च और ऊपर उठा हुआ।" "आओ हम निकट आएं," हम उसकी दृष्टि में अनमोल हैं। देखो, हमारे नाम उसके वक्ष और कंधों पर हैं। उसके लोग उसे कितने प्यारे हैं! यह जानना कितना प्यारा है! एक याचक के रूप में, लेकिन "अपने सिंहासन पर एक पुजारी," "उच्च और ऊपर उठा हुआ।" "आओ हम निकट आएं," हम उसकी दृष्टि में अनमोल हैं। देखो, हमारे नाम उसके वक्ष और कंधों पर हैं। उसके लोग उसे कितने प्यारे हैं! यह जानना कितना प्यारा है!

ईश्वर हमें अपने पवित्र स्थान में विश्वासयोग्य सेवक बनने में सक्षम करे, ताकि धन्य "दिव्य महिमा का पूर्व-स्वाद" पूर्ण और अनन्त फल में समाप्त हो सके।

मसीह और उनकी पूर्ति के बारे में भविष्यवाणियाँ
आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म
डॉ हॉली ओ टेलर द्वारा

पुराने नियम में यीशु के बारे में सौ से अधिक भविष्यवाणियाँ हैं लेकिन किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सिर्फ 25 भविष्यवाणियाँ करने की क्या

संभावनाएँ थीं जो कई वर्षों बाद पैदा होने वाले थे और इन भविष्यवाणियों के सच होने की संभावना थी?

और n भविष्यवाणियों के सच होने की समग्र संभावना p_n बराबर $(1/5)$ होगी? या एक हजार ट्रिलियन में से एक मौका अगर n 25 के बराबर होता है। (मॉडर्न साइंस एंड क्रिश्चियन फेथ, पी। 178।) भले ही कुंवारी जन्म के बारे में भविष्यवाणी को छोड़ दिया जाए, संख्या खगोलीय रूप से बड़ी बनी हुई है। यह मानने के लिए बहुत बड़ा है कि यह गलती से हुआ! डॉ हॉली ओ टेलर; आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म पीपी. 179-183.

भविष्यवाणी	जहां भविष्यवाणी की	जहां पूरा हुआ
यहूदा के गोत्र का।	जनरल 49:10	लूका 3:23-33
दाऊद के शाही वंश का	जेर। 23:5	मैट। 1:1
कुंवारी से पैदा हुआ	एक है। 7:14	मैट। 1:18
बेथलहम में पैदा हुआ	मीका 5:2	मैट। 2:1,2
एक अग्रदूत रास्ता तैयार करेगा	मल। 3:1	मार्क 1:6,7
वह गदहे पर सवार होकर यरूशलेम में प्रवेश करेगा	जेच। 9:9	मैट। 21:6,7
उसे एक शिष्य द्वारा धोखा दिया जाएगा	जेच। 13:6	मैट। 26:49,50
विश्वासघात की कीमत बताई गई है	जेच। 11:1,2	मैट। 26:14,15
विश्वासघात का धन वापस किया जाना है	जेच। 11:13	मैट। 27:5,7
उसके चले उसे छोड़ देंगे	जेच। 13:7	मैट। 26:56
झूठे गवाह उस पर आरोप लगाएंगे	पीएसए। 35:11	मैट। 26:59,60
वह भुगतेगा, गाली देगा	एक है। 50:6	मैट। 26:67
वह चुपचाप सहेगा	एक है। 53:7	मैट। 27:12-14
उसे कोड़े मारे जाएँ	एक है। 53:5	मैट। 27:26,29
हाथ-पैर छिल गए	पीएसए। 22:16	ल्यूक 23:33
अपराधियों के साथ गिना जाता है	एक है। 53:12	मरकुस 15:2
वस्त्र बांटना	पीएसए। 22:18	यूहन्ना 19:23,24
पित्त और सिरका चढ़ाया जाए	पीएसए। 69:21	यूहन्ना 19:28,29
पित्त और सिरका चढ़ाया जाए	पीएसए। 69:21	यूहन्ना 19:28,29
कोई हड्डी नहीं तोड़नी है	पीएसए। 34:20	जॉन 19:33
उसे छेद दिया जाएगा	जेच। 12:10	जॉन 19
भीड़ उसे डटिगी	पीएसए। 109:29	मैट। 27:39
सूली पर चढ़ने का संकेत देने के लिए दिन के समय अंधेरा	आमोस 8:9	मैट। 27:45
अमीरों के साथ दफन होना	एक है। 53:9	मैट। 27:57-60
मरे हुएों में से उठने के लिए!	पीएसए। 16:10	मैट। 28:6
चढ़ना	पीएसए। 68:18अ	ल्यूक 24:51

डीआर डंकन द्वारा हेर्मेनेयुटिक्स। सिनसिनाटी, दूसरा पीपी। 395-99।

भविष्यवाणी	जहां भविष्यवाणी की	जहां पूरा हुआ
------------	--------------------	---------------

उसे स्त्री का बीज बनना था	जनरल 3:15	मैट।1:18
वह परमेश्वर का पुत्र होगा	पीएसए। 2:7	लूका 1:32-35
वह सर्प पर विजय प्राप्त करेगा	Gen.3:15	हेब। 2:14
इब्राहीम का बीज	उत्पत्ति 12:1-3; 17:7; 22:18	गल। 3:16
इसहाक का वंश	जनरल 21:12	हेब। 11:18
यहूदा का बीज	जनरल 49:10	हेब। 7:14
दाऊद का वंश	पीएसए। 132:11; जेर। 23:5	प्रेरितों के काम 13:23; ROM। 1:3
उनके आने और मृत्यु का समय	दान। 9:24-27	लूका 2:1
कुँवारी से पैदा हुआ	एक है। 7:14	मैट। 1:18; लूका 2:7
उसे इममानुएल कहा जाता था	एक है। 7:14	मैट। 1:22-23
यहूदिया के बेथलहम में पैदा हुआ	माइक। 5:2	मैट। 2:1; लूका 2:4-6
बड़े-बड़े लोग आकर उन्हें प्रणाम करेंगे	पीएसए। 72:10-15	मैट। 2:1-11
बच्चों को मार डाला, कि वह मारा जा सकता है	जेर। 31:15;	मैट। 2:16-18
जॉन द बैपटिस्ट द्वारा पेश किया गया	एक है। 40:3; मल। 3:1	मैट। 3:1-3; ल्यूक 1:17
पवित्र आत्मा द्वारा अभिषेक किया गया था	पीएसए। 45:7; एक है। 11:2; 41:1	मैट। 3:16-17; जॉन 3:34; अधिनियमों 10:38
वह मूसा के समान भविष्यद्वक्ता था	व्यव.18:15-18	प्रेरितों के काम 3:20-22
उसे लोगों के लिए एक उद्धारकर्ता के रूप में भेजा गया था	एक है। 41:1-3	लूका 4:16-21; ल्यूक 4:43
वह जबलून और नप्ताली के लिये ज्योति है	एक है। 9:1-3	मैट। 4:12-16
वह मंदिर में आता है और उसे साफ करता है	हग। 2:7-9; मल। 3:1	लूका 19:45; यूहन्ना 2:13-16
उनकी गरीबी ईसा। 53:2	मरकुस 6:3;	ल्यूक 9:58
वह नम्र और दिखावटी था	एक है। 42:1-2	फिल। 2:7-9
उसकी करुणा	एक है। 40:11; 42:3	मैट। 12:15-20; हेब। 4:15
बिना कपट के था	एक है। 53:9	पालतू पशु। 2:22
भगवान के घर के लिए महान उत्साह	पीएसए। 69:9	जॉन 2:17
उन्होंने दृष्टियों के माध्यम से शिक्षा दी	पीएसए। 78:2	मैट। 13:34-35
उसने चमत्कार किए	एक है। 35:5-6	लूका 7:18-23
उनके भाइयों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया	पीएसए। 69:8; एक है। 53:3	यूहन्ना 1:11; यूहन्ना 7:5
यहूदियों से नफरत	पीएसए। 59:4; एक है। 49:7	यूहन्ना 15:24-25
उनके शासकों द्वारा खारिज कर दिया	पीएसए। 118:22	जॉन 7:48; मैट। 21:4
ठोकर का पत्थर और अपराध की चट्टान	एक है। 8:14	ROM। 9:32; 1 पालतू। 2:8
मित्र द्वारा धोखा	पीएसए। 41:9; 55:12-14	यूहन्ना 13:18-21
उनके शिष्यों द्वारा त्याग दिया गया	जेच। 13:7	मैट। 26:31-56

. चाँदी के तीस सिक्कों में बिका	ज़ेच। 11:12	मैट। 26:15
यह पैसा कुम्हार का खेत खरीदने के लिए दिया गया था	ज़ेच। 11:13	मत्ती 27:7
वह अपने सभी कष्टों में धैर्यवान और मौन था	एक है। 53:7	मत्ती 26:63; 27:12-14
गाल पर वार किया	माइक। 5:1	मैट। 27:30
. उनके कष्ट तीव्र थे	पीएसए, 22:14-15	लूका 22:42-44
कोड़े मारे गए और थूक दिया गया	पीएसए। 35:15; एक है। 1:6	मार्क 14:65; यूहन्ना 19:1
उनका चेहरा बहुत खराब हो गया था	एक है। 52:14; 53:3	यूहन्ना 19:1-5
उसने सहा कि वह हमारे पापों को उठा ले	एक है। 53:4; दान। 9:26	मत्ती 20:28; 26:28
शासक, यहूदी और अन्यजाति, उसे मार डालने के लिए उसके विरुद्ध एकजुट हो गए	पीएसए। 2:1-4	लूका 23:12; प्रेरितों के काम 4:27-28
उसे क्रूस पर चढ़ाया गया और उसके हाथ और पैर लकड़ी पर कीलों से ठोक दिए गए	एक है। 25:10-11; पीएसए। 22:16	यूहन्ना 19:18; 20-25
चोरों में गिने जाने से यह व्यथा और बढ़ गई	एक है। 53:12	मार्क 15:28
उन्होंने उसे पित्त और सिरका दिया	पीएसए। 69:21	मैट। 27:39-44
उनका क्रूर मजाक उड़ाया गया	पीएसए। 22:7-8; 35:15-21	मैट। 27:39-44
उन्होंने अकेले ही कष्ट सहा; यहाँ तक कि पिता की उपस्थिति भी वापस ले ली गई	एक है। 63:1-3; पीएसए। 22:1	मैट। 27:46
उन्होंने उसके वस्त्र आपस में बांट लिए, और उसके पहिरावे पर चिट्ठी डाली	पीएसए। 22:18	मैट। 27:35
इस प्रकार वह हमारे लिए श्राप बन गया, हमारी नामधराई सह गया	पीएसए। 22:6; 79:7; 9:20	ROM। 15:3; हेब। 13:13; गल। 3:13
उन्होंने हत्यारों के लिए मध्यस्थता की	एक है। 53:12	ल्यूक 23:24
उनकी मृत्यु के बाद उन्होंने उन्हें बेधा	ज़ेच। 12:10	यूहन्ना 19:34-37
लेकिन अपने शरीर की एक हड्डी नहीं तोड़ी	पूर्व। 12:46; पीएसए। 34:20	यूहन्ना 19:33-36
उसे अमीरों के साथ दफनाया गया था	एक है। 53:9	मैट। 27:57-60
उसकी देह में भ्रष्टाचार नहीं देखा	पीएसए। 16:8-10	अधिनियमों 2:31
पवित्रशास्त्र के अनुसार वह तीसरे दिन मृत्यु में से जी उठा	पीएसए। 16:8-10	लूका 24:6; 24:31; 24:34
वह स्वर्ग में चढ़ गया	पीएसए। 68:18; 24:7-9	लूका 24:51; प्रेरितों के काम 1:9
वह मेल्कीसेदेक के आदेश के बाद एक याजक बन गया, जो एक ही समय में राजा और याजक था	पीएसए। 110:4; ज़ेच। 6:12-13	हेब। 5:5-6
उसने अपने लिए एक ऐसा राज्य प्राप्त किया जो पूरी दुनिया को गले लगाता है	पीएसए। 2:6; दान। 2:44; 7:13-14;	लूका 1:32; यूहन्ना 18:33-37; मैट। 28:18-19; फिल। 2:9-10
उसकी व्यवस्था सियोन से और उसका वचन यरूशलेम से निकला	यश 2:1-3; माइक। 4:12	लूका 24:46-49; प्रेरितों के काम 2:1-40

अन्यजातियों को उसकी सेवा में भर्ती किया जाना चाहिए	एक है। 11:10; 42:1; पीएसए। 2:8	यूहन्ना 10:16; प्रेरितों के काम 10:44-48; ROM। 15:9-12
उसके शासन की धार्मिकता	एक है। 9:6-7; पीएसए। 45:6-7	जॉन 5:30; प्रकाशितवाक्य 19:11

निष्कर्ष इस अध्ययन से कई निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं, भले ही कुछ राय और व्याख्याओं को खारिज कर दिया गया हो।

1. परमेश्वर ने मनुष्य के विद्रोह के बाद मनुष्य को उसके साथ उसके पिछले संबंध से मिलाने की योजना लागू की थी। वह योजना बाइबिल के माध्यम से केंद्रीय विषय है। मनुष्य को इस बात से अवगत कराने के लिए कानून और नियम दिए गए थे कि उसके कार्यों में से कोई भी भगवान के लिए अप्रसन्न नहीं था और उसे पाप या उसकी व्यवस्था का उल्लंघन माना जाता था। मसीह के साथ, मनुष्य की आवश्यकताओं और निषेधों का पालन करने के कार्यों को प्रेम पर आधारित कार्यों में बदल दिया गया था, एक के दिल से कार्रवाई।

2. बहुत से लेखकों ने लंबे समय तक प्रतीकों, छायाओं और भविष्यवाणियों को दर्ज किया, जो सभी मसीह के व्यक्तित्व की ओर इशारा कर रहे थे। उसके पाप-बलि ने आज्ञाकारी मनुष्य को क्षमा करने और मसीह के पाप-बलि द्वारा धर्मी बनाने की अनुमति दी।

3. छाया और प्रकार वास्तविक वस्तु नहीं थे। उन्होंने केवल भविष्य में किसी समय क्षमा और छुटकारे की एक छिपी हुई झलक प्रदान की। यीशु के जीवन, मृत्यु, गाड़े जाने, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण को अक्सर ईसा के सुसमाचार या सुसमाचार के रूप में संदर्भित किया जाता है जो सभी प्रकारों और छायाओं की वास्तविकता है। भरोसे और आज्ञाकारिता के साथ मनुष्य जीवन में एक यू-टर्न बनाकर ईश्वर को क्षमा करने के लिए बुलाकर मुक्ति का मुफ्त उपहार प्राप्त कर सकता है, मसीह की मृत्यु में दफन किया जा रहा है, पानी में डूबा हुआ जिसे अक्सर बपतिस्मा कहा जाता है, ईश्वर को उसे एक नया आध्यात्मिक जीवन देने की अनुमति देता है पिछले सभी पापों का।

सूत्रों का कहना है
आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म, पीपी। 179-183। डीआर डंकन द्वारा हेर्मेनेयुटिक्स। सिनसिनाटी, दूसरा पीपी। 395-99। शैडो एंड सब्टेंस - द टैबरनेकल, अज्ञात लेखक द बिब्लिकल टाइप्स एंड शैडो, मार्क डुनगन, बेवर्टन चर्च ऑफ क्राइस्ट, बेवर्टन, ओरेगॉन द शैडो ऑफ हेवनली थिंग्स बाय जोसेफ पिटमैन, ऑस्ट्रेलिया पब्लिशिंग कंपनी, मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया, 1893 द अनफोल्डिंग पैटर्न बाय रे सी. स्टेडमैन, पालो आल्तो, कैलीफ़ोर्निया में पेनिन्सुला बाइबिल चर्च के पादरी, टाइपोलॉजी, न्यू टेस्टामेंट शर्तो का एक अध्ययन, अज्ञात लेखक wikipedia.org/wiki/Prophecy

--	--